मासिक

jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

अक्टूबर 2015, वर्ष : 10 अंक : 6

परिणय बंधन पर शुभकामनाएँ...

चि.शुभम मेहता

सुपुत्र- उषा-अरूण मेहता

संग

सौ.शिवानी भट्ट

सुपुत्री- इला बेन-जयवीरजी भट्ट (गांधीनगर गुजरात)

5 जून 2015

सौ.सुन्दरम मेहता

सुपुत्री- उषा-अरूण मेहता

संग

चि.श्रीकान्त नागर

सुपुत्र- हंसा-राजीवजी नागर (विदिशा)

6 जून 2015

के मंगल परिणय सानन्द सम्पन्न हुए, जिसमें अखिल भारतीय नागर समाज के पदाधिकारी एवं सम्मानीय नागर परिवारों ने नव युगलों को आशीर्वाद प्रदान किया।

समस्त मेहता परिवार नरसिहगढ़ द्वारा आशीर्वाद समारोह में पधारे सभी स्नेहीजनों का आभार

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा

वितरण एवं शिकायत
दीपक शर्मा-9425063129

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

कर्म का प्रतिफल पुरुस्कार, आशीर्वाद का चमत्कार

मनुष्य जीवन में कर्म का बड़ा महत्व है, जीवन है तो कर्म अनिवार्य है। स्वाभाविक है कि कर्म क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति को पुरुस्कार भी मिलते रहे। आए दिन हम अखबारों में सम्मान की खबरें पढ़ते रहते हैं और अंततः यह तय है कि कर्म का परिणाम या प्रतिफल पुरुस्कार ही होता है, लेकिन किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में सेवा या सत्कर्म से किसी के आशीर्वाद प्राप्त किए हैं और उसके जीवन में कोई चमत्कार हो जाए तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। कोई व्यक्ति रातों-रात फर्श से अर्श पर पहुँच जाए।

अपने प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़ नाम एवं पैसे की बुलंदियों को छू ले, शहर की पहचान बन जाए, कोई महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर ले, कुल मिलाकर ऐसा कुछ हो जाए कि जो प्रथम दृष्टया चमत्कार सा दिखे तो समझो कि यह कर्म का पुरुस्कार तो नहीं है जरुर आशीर्वाद से प्राप्त चमत्कार है। आमतौर से हम किसी के चरण छूएं तो वह आशीर्वाद अवश्य ही प्रदान करता है, पर वे आशीर्वाद मुख के द्वारा दिए गए होते हैं, आशीर्वाद वे जो दिल से निकले हों और दिल से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सेवा ही एकमात्र सूत्र है। यह सेवा अपने माता-पिता, गुरु की भी हो सकती है या अन्य लोगों की भी, परन्तु आप स्वयं जब इस बात पर गौर करेंगे एवं अपनी दृष्टि जब चारों और करेंगे तो पता चलेगा कि वास्तव में जिन लोगों ने कर्म किए उन्हें सम्मान मिला, पुरस्कार मिले, पदोन्नति मिली, किन्तु जिन्होंने निःस्वार्थ सेवा सच्चे दिल से की उन्हें आशीर्वाद मिले, दिल से ही मिले और उनके जीवन में चमत्कार हुए।

'जिनकी सेवा की वे तो आसमान में जा कर तारा बन गए।'

जिन्होंने सेवा की... आशीर्वाद लिए वे धरती का सितारा बन गए।।

मेरी इस बात का आँख मूंदकर समर्थन मत कीजिए। आप स्वयं अनुभव करें कि प्रत्येक क्षेत्र में अनेकोनेक लोग कर्म से जुड़े हैं, परन्तु प्रसिद्धि और यश मात्र कुछेक ही प्राप्त कर पाते हैं तो आप स्वयं शोध के बाद पाएंगे कि उस नामी गिरामी व्यक्ति ने जरुर कर्म के साथ आशीर्वाद भी प्राप्त कर लिए होंगे। आप भी सम्मान या पुरस्कार की आशा रखते हो या न रखते हो तो भी कर्म तो करते ही हैं... अवश्य करते रहिये, परन्तु जीवन में चमत्कार की चाह हो तो सेवा कर आशीर्वाद अवश्य ही प्राप्त कर लेना।

-संगीता-दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.9425063129, 9826095995, 9926285002

मूल्य 10/-रुपये

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

बहती गंगा में धो लेवें हाथ

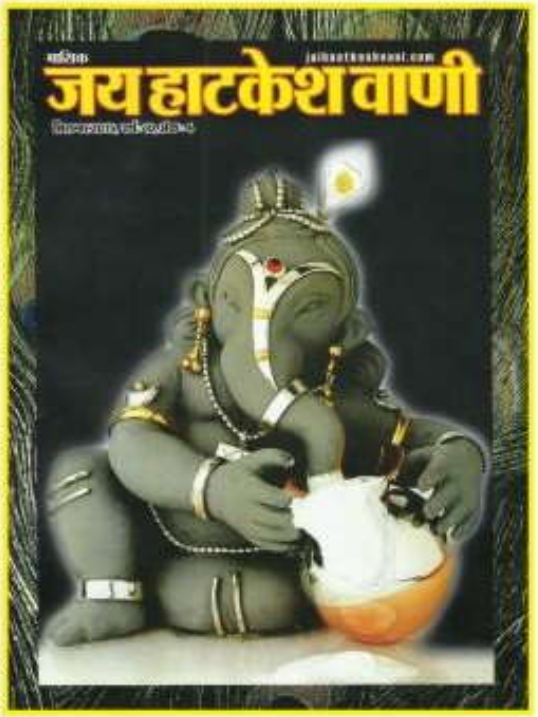

प्रचार करने वाली प्रणाली को माध्यम अथवा मीडिया कहा जाता है, क्योंकि यह सूचना देने के साथ विचारों के द्वारा सोच परिवर्तन, जनमत संग्रह, जागरुकता एवं परिवर्तन का माध्यम है। देश-दुनिया में क्या हो रहा है, इसकी जानकारी यह माध्यम ही जनता तक पहुँचाता है। सामाजिक पत्रिका मासिक जय हाटकेश वाणी भी ऐसा ही माध्यम है, प्रयास है समाज में कुछ बेहतर हो सके इसका। विगत दस वर्षों में इस सामाजिक पत्रिका ने सामाजिक चेतना हेतु उल्लेखनीय योगदान दिया है।

यह एक विचार क्रांति है, समाज में बदलाव लाने की और विचार विनिमय के कार्य में प्रत्येक समाजजन को अपनी सहभागिता करना चाहिए। जरुरी नहीं कि हर बात का समर्थन ही किया जाए, पूरजोर विरोध भी किया जाना चाहिए। हम सबका एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए समाज को उन्नत, प्रगतिशील एवं समृद्ध बनाना एवं इस तरह के प्रयत्न जहाँ भी होंगे वहाँ हमें सबसे अग्रिम पंक्ति में खड़ा पाएंगे। मेरा आग्रह है सभी समाजबंधुओं से कि वे अपने मन में आए वे विचार जो सामाजिक उन्नति में सहयोग कर सकते हैं, अवश्य भेजें। साथ ही समाज में चल रही गतिविधियों की जानकारी भी प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें। यह जय हाटकेश वाणी समाज में बहती गंगा है, इसका समाजजन जो भी लाभ उठा सके, अवश्य उठाएं। आपके विचारों का हम सम्मान करते हैं, उनका प्रकाशन कर उस सम्बंध में जनमत अवश्य बनाएंगे।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

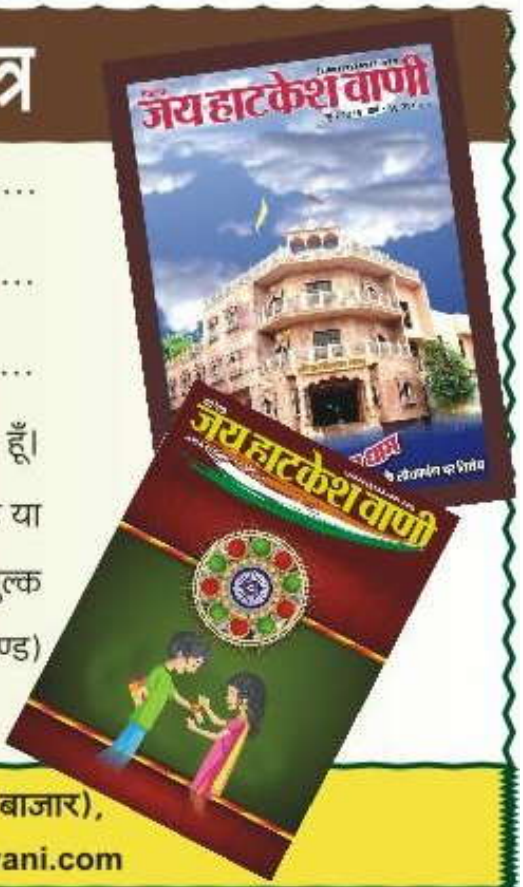

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार),
इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com
E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

बदलाव के दौर में, राहें आसान..

वाणी में प्रकाशित आलेख 'परम्परा और हम', 'खुला पत्र' एवं 'राह आसान नहीं' आपकी टिप्पणी पढ़ पाया।

गतिमान समय का लक्षण ही परिवर्तनशील रहता है। परिस्थितियां, व्यवस्थाएं कार्यशैली सामाजिक परस्पर व्यवहार के अनुकूल बदलाव होता ही रहता है। प्राचीन से अर्वाचित तक दृष्टिपात करे तो समय ने बदलाव की करवट अवश्य ली है। परम्पराएं समाज ही बनाता है। शनैः शनैः समय की आवश्यकता उत्पन्न परिस्थितियां व वैचारिकता की मांग अनुरुप वे परिष्कृत भी होती है। आज जबकि हम 21वीं सदी में सांस ले रहे हैं काफी कुछ बदलता नजर आ रहा है।

ज्ञान-विज्ञान, आविष्कार सुख-सुविधाएं बदलती जीवन शैली, समाज विकास पारिवारिक-परिवर्तन (विघटन) संसार देश-प्रदेश नगर-गाँव की दूरियों से निकटता से सब ही बहुत निकट आ गये हैं। आमूल परिवर्तन लग रहा है। सदी के एकाएक बदलते परिवेश में नागर समाज के विकास के प्रति वैचारिक कदम बढ़ाना आवश्यक लगता है। तत्कालीन अवस्थाओं में जो परम्परा, रुढ़ियाँ व मान्यताएं उनमें वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते सुधार की आवश्यकता समय की मांग है। आलेख के माध्यम से परम्परा में सुधार के प्रति जो मुद्दे प्रकाश में आये हैं उस पर गहन विचार-विमर्श होना जरुरी लगता है। देश व प्रदेश में नागर समाज की सर्वत्र इकाईयां है। समाज के प्रबुद्ध-व्यक्ति इस पर विचार-विमर्श करेंगे तो परम्परा के परिष्कृत होने में कोई सहज, सुलभ व सुगम मार्ग सहमति पूर्ण भावना से प्रशस्त हो पाएगा यह शुभकामना है।

-पी.आर.जोशी

एक सुझाव

आयोजनों और बैठकों का दायरा बढ़े

इन्दौर शहर का विगत वर्षों में भारी विस्तार हुआ है। जबकि नागर ब्राह्मण समाज की ज्यादातर बैठकों एवं आयोजनों का केन्द्र पूर्व या मध्य क्षेत्र रहा है। परिणामस्वरूप शहर भर का समाज इनमें जुड़ नहीं पा रहा है तथा संगठन के उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पा रहे हैं।

जैसे नागर महिला मंडल की ज्यादातर मासिक बैठकें पूर्वी क्षेत्र में होती है इनमें मध्य, दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र की महिला सदस्य दूरी के कारण हिस्सा नहीं ले पाती है।

सुझाव- समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री पुरुषोत्तम जोशी ने सुझाव दिया है कि यह बैठकें पृथक-पृथक स्थानों पर आयोजित हो ताकि क्षेत्रीय महिला सदस्य उनमें हिस्सा ले सकें।

उदाहरण- इस सम्बंध में महानगर कोलकाता में महिला संगठन 'सखी' की गतिविधियों से प्रेरणा ली जा सकती है। ज्ञातव्य है कि सखी की सदस्याएं बैठकों का आयोजन अपने निवास या सुविधानुसार स्थान का चयन कर अलग-अलग स्थानों पर करती है तथा पूरे शहर की सदस्याएं वहां पहुंचती है। इसी प्रकार इन्दौर में भी महिला सदस्याएं अपनी सुविधानुसार बैठकों का आयोजन करें ताकि उसकी गतिविधियां सम्पूर्ण शहर तक फैल सकें। ज्यादा से ज्यादा सदस्य उससे जुड़ सके।

नागर परिषद की बैठक भी अध्यक्ष-सचिव के निवास के साथ-साथ सभी पदाधिकारियों के यहां की जावे। वार्षिक आयोजन के स्थान का चयन भी इस प्रकार किया जावे कि पूरे शहर के समाजजन उसमें जुड़ सकें। यह एक सुझाव है शेष निर्णय विभिन्न परिषद् संगठनों के पदाधिकारी आपसी विचार-विमर्श कर ले सकते हैं। उद्देश्य मात्र यह है कि समाज के आयोजनों में अधिकाधिक समाजजनों की सहभागिता हो सके।

म.प्र. नागर निर्देशिका का प्रकाशन

मध्यप्रदेश नागर निर्देशिका जिसमें सम्पूर्ण म.प्र. के शहर, नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बसे नागर बंधुओं के नाम, पोस्टल एड्रेस, फोन, मोबाईल नं., कार्यक्षेत्र का प्रकाशन किया जा रहा है। जिन नागर बंधुओं ने अपनी जानकारी नहीं दी है वे अतिशीघ्र उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

धन्यवाद

एक अनुकरणीय आयोजन

शुक्ल परिवार का स्नेहमिलन

कुछ वर्षों पहले ज्यादातर परिवार एक ही स्थान-शहर में रहते थे, जिससे परस्पर एक-दूसरे के परिचय में रहते थे और सम्पर्क में भी रह सकते थे। संयुक्त-कुटुंब प्रथा प्रचलित थी। अच्छे बुरे अवसरों पर सभी सपरिवार एकत्रित होते थे इसलिये परिवारजन अपने सम्बंधियों से अपरिचित नहीं रहते थे।

वर्तमान में परिस्थिति यह है कि संयुक्त परिवार प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। नौकरी, व्यवसाय के कारण दूर देश-विदेशों में स्थायी हुए परिवारजन प्रत्येक अवसर पर उपस्थित नहीं रह पाते है। इस कारण नई पीढ़ी अपने निकट के सम्बंधियों को भी पहचानते न हों यह स्वाभाविक है। इस कारण से विवाह परिचय सम्मेलनों का आयोजन होता है। ऐसी मुश्किलें दूर करने के उपाय के रूप में ही ऐसे आयोजन होते हैं। इनमें से ऐसा सम्मेलन हाल ही में गुजरात के एक छोटे से गांव मांगरोल (जिला जूनागढ़) गुजरात में, जहाँ भक्त शिरोमणी श्री नृसिंह मेहता के चाचा श्री परबत मेहता रहते थे, सम्पन्न हुआ। मांगरोल के कई नागर परिवार जो बाहर बसें हैं उनमें से एक परिवार स्व.वृजदास जटाशंकर शुक्ल का परिवार भी है। उनके 6 सुपुत्र हैं उसके बाद भी दूसरी-तीसरी पीढ़ी में कुल 120 परिवारजन है, परन्तु काफी समय से नौकरी व्यवसाय के कारण बाहर बसे हुए हैं। उनमें से एक वडिल को विचार आया कि सबको एक स्थान पर इकट्ठा करें व श्री मिनाकिन भाई शुक्ल और उनके विचार को मूर्तरूप दिया श्री विरंचीभाई शुक्ल (भूतपूर्व ज्ञाति प्रमुख) तथा अन्य युवाजनों ने।

यह आयोजन हाल ही में 14-15 अगस्त 2015 को सम्पन्न हुआ। जिसमें पुत्रियों-दामादों सहित लगभग 105 सदस्यों ने भाग लिया। आयोजन की पूर्व संध्या को नागरों की परंपरा के अनुसार, रास गरबा की रमघट देर रात तक होती रही। उसके बाद पुराने संस्मरण सबने साथ मिलकर दोहराये। तत्पश्चात् विरासत से चले आ रहे पारिवारिक मंदिर पुरातन श्री सिद्धनाथजी महादेव मंदिर, जिसमें पूर्वजों की समाधी है, वहाँ तथा महादेवजी के मंदिर में पूजा-अर्चना कर सब धन्य हुए।

आयोजन का शुभारंभ परिवार के सबसे बड़े जमाई श्री रमेशचन्द्र पंड्या द्वारा दीप प्रागट्य तथा ईश-वंदना से हुआ। उसके बाद प्रत्येक घर में एक स्मृति चिन्ह मु.श्री पिनाकीम भाई तथा डॉ.स्व. चारुमति बेन (जो परिवार की मुखिया हैं) के करकमलों से वितरित हुआ। तत्पश्चात् मांगरोल की प्रसिद्ध कुल्फी-पानी वाले नारियल का रसास्वादन कर पारंपरिक भोजन ग्रहण कर सब स्वस्थान जाने के लिये भारी हृदय और अश्रुपुरित आँखों से यह सोचते हुए विदा हुए कि अब कब मिलेंगे? यह एक अनुकरणीय सम्मेलन बन गया जिसका अनुसरण प्रत्येक परिवार में ही यह इच्छनीय है।

आयोजन की श्री विश्वेष भाई पाठक ने भूरी-भूरी प्रशंसा कर इसमें सक्रिय भाग लेने वाले श्री विरंचीभाई, श्री प्रबोधभाई तथा श्री भरतभाई की मेहमानों की ओर से भेंट देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के समापन में आभार विधि श्री महर्षीभाई पंड्या द्वारा सम्पन्न की गई, जिसमें सभी आयोजकों तथा इस सम्मेलन में पधारे परिवारजनों का आभार माना गया।

-रश्मि पी.पाठक
राष्ट्रीय मंत्री एवं राष्ट्रीय जनसम्पर्क अधिकारी,
राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान, दिल्ली

8-9 सरदार जुआ खेल रहे थे...
तभी पुलिस आ गई....
एक सरदार दौड़कर पुलिस की गाड़ी में बैठ गया.
पुलिस-तू अपने आप ही क्यूं बैठ गया?
सदरा- पिछली बार मैं पकड़ा गया था तो सीट नहीं मिली थी खड़ा होकर जाना पड़ा था।

हाटकेश्वर मंदिर में रुद्राभिषेक का आयोजन

विशनगरा नागर ब्राह्मण समाज के तत्वावधान में खान्दू कॉलोनी (बांसवाड़ा) में स्थित हाटकेश्वर महादेव मंदिर में श्रावण मास के अंतर्गत विविध धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम में दिनांक 24-8-2015 सोमवार को हरिप्रसाद मेहता, ललित मेहता सहित ग्यारह विप्रवरों द्वारा रुद्राभिषेक किया गया।

इस अवसर पर अर्जुन महाराज एवं उनके परिवार द्वारा ब्रह्मभोज कराया गया। सायंकाल प्रकाश शर्मा, नरेन्द्र पंड्या, कल्पेश व्यास, उपेन्द्र मेहता ने भगवान हाटकेश्वर का मनोहारी श्रृंगार किया। मंदिर की आकर्षक सजावट की गई तथा 108 दीपकों की झांकी की गई। तत्पश्चात् आरती हुई। पूरे कार्यक्रम में समाजजनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। रात को महिला मंडल द्वारा भजन-कीर्तन किये। अन्त में बाबा हाटकेश्वर के जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-चंचरलाल जोशी
3/198, खान्दु कॉलोनी, बांसवाड़ा

अ.भा. नागर परिषद् मुंबई शाखा द्वारा

वीणा बेन का अभिनंदन

अ.भा. नागर परिषद् शाखा की अध्यक्ष श्रीमती वीणा बेन चंपक भाई जोशी 60 वर्षों में पहली बार 21 वें सत्र में भारी बहुमत से विजयी हुई। उनके सम्मान में मुंबई शाखा ने बुके पार्टी का आयोजन किया, जिसमें टिफीन पार्टी का भी समावेश था। यह कार्यक्रम तुंगारेश्वर महादेव पहाड़ी पर रखा गया। यहाँ पहुँचने हेतु बस में चाय, काफी, फरियाली आहार की व्यवस्था की गई सबने भोजन और भजन का आनन्द लिया। कीर्तन करते हुए यात्रा पूर्ण की। स्थानीय शाखा के पंकज भाई रावल, प्रकाश भाई भट्ट, मालाबेन हाथी, रमिला बेन पंड्या, श्रद्धा बेन तथा अन्य सदस्यों ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती वीणा बेन एवं अन्य अतिथियों का बुके से स्वागत किया।

मेलापक 2016 का प्रकाशन

नागर ब्राह्मण समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा फोटो सहित प्रकाशन का वृहद् कार्य प्रतिवर्ष 'मेलापक' में किया जाता है, इस वर्ष भी जनवरी 2016 में मेलापक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें प्रकाशन हेतु अपनी प्रविष्टियां निःशुल्क प्रकाशन हेतु कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं।

श्री भगवती मण्डल मुम्बई का प्रतिनिधि मण्डल जिसमें श्री परेशभाई नागर, श्री ललितजी नागर, श्री नेनमल नागर, श्री अशोक नागर, श्री रमनलाल नागर और श्री योगेश भाई शामिल थे। उज्जैन एवं ओंकारेश्वर में वृहद आयोजन के सिलसिले में इन्दौर प्रवास के दौरान खजराना स्थित श्री गणेश मंदिर में दर्शन हेतु पहुँचा।

राष्ट्रीय नागर प्रतिष्ठान का भी मुखपत्र प्रकाशित होगा

गाँधी पीस फाउण्डेशन नईदिल्ली में नागर ब्राह्मण समाज प्रतिष्ठान की बैठक का आयोजन 11 जुलाई को हुआ। प्रथम सत्र में विभिन्न प्रांतों से आए पदाधिकारियों का परिचय के साथ बैठक प्रारम्भ कर अपने प्रांत में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी गई। बैठक की अध्यक्षता उपप्रधान श्री सूर्यकान्तजी नागर ने की।

बैठक में केप्टन सी.एम.व्यास (प्रधान), नरेश राजा, श्रीमती विशाखा बेन पोटा, पवन नागर, राजेन्द्र नागर (शाजापुर), रश्मिन भाई पाठक (गुजरात), हेमंत दुबे (म.प्र.), डॉ. प्रेम नागर (बिहार), सुभाष नागर (उ.प्र.), शैलेष पण्ड्या (हरियाणा), राजेन्द्र नागर (मन्दसौर), मनमोहन नागर (गुड़गाँव), मोलेश भाई (मुम्बई), अनिल भाई (भावनगर), तथा म.प्र. नागर परिषद् के अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी (उज्जैन), सुभाष नागर (नीमच), बसन्त दवे, अमिताभ पण्डया, प्रदीप व्यास, (नई दिल्ली), उपेन्द्र नागर (उ.प्र.) विशेष आमंत्रित किए गए, जिन्होंने भाग लिया। संचालन राजेन्द्र नागर सचिव द्वारा किया गया।

प्रतिष्ठान के वार्षिक प्रतिवेदन को राजेन्द्र नागर ने प्रस्तुत किया। श्रीमती विशाखा बेन (महिला शाखा अध्यक्ष) ने महिलाओं हेतु किये गए कार्यक्रम की जानकारी दी एवं युवा शाखा के कार्यों का विवरण अध्यक्ष युवा शाखा श्री हेमन्त दुबे ने प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कई निर्णय लिये गए

प्रधान केप्टन सी.एम. व्यास ने प्रतिष्ठान के कार्यों को विस्तार देने हेतु सभी से आह्वान किया कि बैठक में प्रस्तावों पर गंभीरता से चर्चा कर इस पर शीघ्र क्रियान्वयन किया जाए। बैठक में वेबसाईट के उपयोग व अपडेट करने के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर 'मुख-पत्र' (न्यूज लेटर) प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। सदस्यता, युवा/महिला गतिविधियों के प्रसार, संगठन के विस्तार आदि विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिये गए।

बैठक के दूसरे दिन 12 जुलाई को पुनः गाँधी पीस फाउण्डेशन पर केप्टन सी.एम. व्यास की अध्यक्षता में बैठक प्रारम्भ हुई। जिसमें बिन्दु क्र. 4 अन्तर्गत युवाओं/महिलाओं हेतु सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं नैतिक मूल्यों एवं समाज की परम्पराओं आधारित कार्यों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों के आयोजन पर बल दिया।

सदस्यता अभियान चलाया जाना तय किया गया। प्रारम्भिक दौर में प्रत्येक पदाधिकारी को लक्ष्य दिया गया।

बैठक के अन्त में प्रधान केप्टन सी.एम. व्यास ने उपस्थित प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सभी को सम्मानित किया। इसके बाद समाज की दिवंगत आत्माओं के प्रति 2 मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजली दी गई।

-हेमंत दुबे
(अध्यक्ष, युवा शाखा)
राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान,
नई दिल्ली

श्री आरासुरी महिला बहुउद्देशीय क्रेडिट को-ऑप. सोसायटी

महिला सदस्यों को रोजगार एवं गृहउद्योग के अवसर

बांसवाड़ा वडनगरा नागर मण्डल, बांसवाड़ा की महिलाओं द्वारा संचालित श्री आरासुरी महिला बहुउद्देशीय क्रेडिट को-ऑपरेटीव सोसायटी के प्रथम वर्ष पूर्ण करने पर हाटकेश्वर मंदिर परिसर में बैठक सम्पन्न हुई और आगे बढ़ने के लिए विचार-विमर्श किया। महिला मण्डल ने गत वर्ष गंगादशमी को अपनी सोसायटी की स्थापना की थी और दीनबन्धु चौराहे पर अपने कार्यालय का उद्घाटन किया। अध्यक्षा श्रीमती रुची याज्ञिक ने बताया कि इस सोसायटी की वर्तमान सदस्य संख्या 225 पहुंच गई है और सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। सदस्यों की सुविधा हेतु यह कार्यालय खोला गया है, जिसमें 4 से 6 बजे (सायं) तक अपनी मासिक किस्त जमा करवायी जा सकती है।

इस वर्ष रक्षा बन्धन पर्व के अवसर पर काजुकतली नागरवाड़े के प्रचलन में गुड़पापड़ी और खण्ड पापड़ी, रसगुल्लों का निर्माण कराकर बिक्री की जिससे समाज में बाजार से कम दामों पर और शुद्ध मिठाइयां प्राप्त हुई। जिसकी सभी ने सराहना की। सोसायटी द्वारा एक कदम और बढ़ाते हुए बाबा रामदेव संचालित पंतजली द्वारा निर्मित उत्पादों के साथ नमकीन चिप्स आदि की बिक्री के लिए कार्यालय में उपलब्ध कराये हैं। जिसकी बिक्री जोरों से हो रही है। यही नहीं इसकी सफलता सोसायटी को अन्य क्षेत्रों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही है।

महिलाओं को कम ब्याज पर ऋण देकर दिलवाकर रोजगारोन्मुखी भी इस सोसायटी द्वारा किया जा रहा है। श्रीमती याज्ञिक ने समाज की सभी महिलाओं को इस संगठन से जुड़ने का आव्हान किया है।

-रुचि नागर

बांसवाड़ा में भी जय हाटकेश वाणी का वितरण हेन्ड-टू-हेन्ड

नागरवाड़ा बांसवाड़ा में डाक विभाग की लापरवाही के चलते मासिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी का वितरण सुचारु नहीं हो पा रहा था। श्री भास्कर हिम्मतलालजी त्रिवेदी ने स्वयं पहल कर इस सम्बंध में सहयोग का आश्वासन दिया है।

अतः बांसवाड़ा के सभी सदस्यों की प्रतियां एक साथ उन्हें भेजी जा रही है, वे सभी सदस्यों तक पत्रिका का वितरण हेंड-टू-हेंड करेंगे। जिन सदस्यों की तीन साल की सदस्यता अवधि पूर्ण हो गई है, वे भी अपनी सदस्यता नवीनीकरण करवाकर श्री त्रिवेदीजी से नियमित पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञातव्य है कि श्री त्रिवेदी माही विभाग में कार्यरत है, परन्तु सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं और इसी वजह से उन्होंने यह जिम्मेदारी ली है।

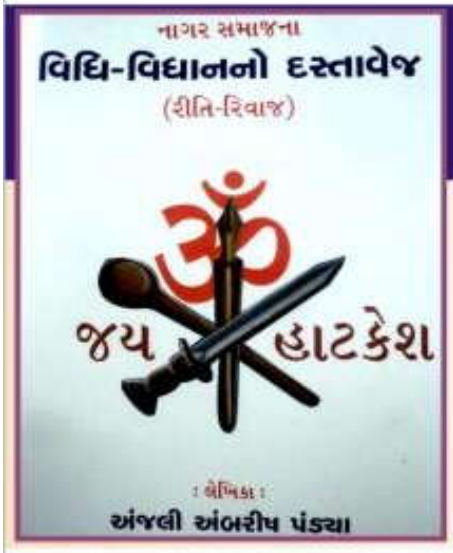

नागर समाज ना विधि-विधान नी दस्तावेज फोन से सम्पर्क करने वालों के सूचनार्थ

मासिक जय हाटकेश वाणी अगस्त 2015 में प्रकाशित उपरोक्त पुस्तक समीक्षा के पश्चात् लेखक श्री प्रमोदराय झा के मो. 08003063616 पर पुस्तक के बारे में निरन्तर पूछताछ हो रही है। आप सभी जिज्ञासुओं की सूचनार्थ निम्न पते पर सम्पर्क द्वारा प्रति प्राप्त हो जाएगी। अहमदाबाद में श्री नरेश राजा से सम्पर्क कर प्रति प्राप्त की जा सकती है।

-श्रीमती अंजली अमरीश पंड्या
13 आरोही निलीमा पार्क सोसायटी
विजय चार रास्ता, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009, मो. 09925000021
(बांसवाड़ा में उनके खाते में रकम डालकर कोरियर से प्रतियां प्राप्त हुई है।)

बांसवाड़ा नागर समाज का इतिहास कर्मकांडी विद्वान आचार्यों अहमदाबाद, भावनगर, सौराष्ट्र में रसोई कार्य करने वालों, अध्यापकों और सिन्टेक्स, मयूर मिल, बैंकों, साफ्टवेयर कंपनियों में कार्यरत मध्यम परिस्थिति के लोगों के साथ ही सम्पन्नता के अनुरूप धार्मिकता से परिपूर्ण लोगों से भरा रहा।

केशवाश्रम धर्मशाला के विस्तार हेतु

10 लाख रुपये की घोषणा

संत श्री केशवाश्रमजी महाराज की धर्मशाला नागर समाज के हृदय स्थल में विराजमान है। जो लगातार निर्माण और विकास के फलस्वरूप सामाजिक पर्वों और प्रसंगों के लिए बेहतरीन स्थल बना हुआ है। विगत 2010 और 2014 में यहाँ विस्तार हुआ तथा हाल ही में दीनबंधु सभागार के ऊपर वैसा ही हाल बनवाने के लिए किसी भामाशाह ने 10 लाख रुपये देने की घोषणा की है और निर्माण कार्य का श्री गणेश भी कर दिया है। यह समाचार वाट्सअप तथा अन्य सोशल मीडिया पर जारी हुआ तो जानने वालों को आश्चर्य मिश्रित खुशी हुई। बांसवाड़ा नागर समाज का इतिहास कर्मकांडी विद्वान आचार्यों अहमदाबाद, भावनगर, सौराष्ट्र में रसोई कार्य करने वालों, अध्यापकों और सिन्टेक्स, मयूर मिल, बैंकों, साफ्टवेयर कंपनियों में कार्यरत मध्यम परिस्थिति के लोगों के साथ ही सम्पन्नता के अनुरूप धार्मिकता से परिपूर्ण लोगों से भरा रहा। बांसवाड़ा में 6 बार तोला महारुद्र की रकम से धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए हैं। श्री केशवाश्रम और बाबा डेरी की पत्थर निर्मित तुला (तराजू) प्रामाणिक रूप में उपलब्ध है जबकि करणीरामजी की तुला श्री दुर्लभविलासी मंदिर की करणी धर्मशाला के नवनिर्माण के समय ध्वस्त होकर ओझल हो गई।

कर्नाटक के तुंगभद्रा गंगा तट पर गंगादेवी की कोख से जन्मे श्री महेश्वर के सुपुत्र का नाम चंद्रशेखर था, परन्तु प्रयाग में संन्यास ग्रहण करने के बाद उनके गुरु द्वारा केशवाश्रम नाम प्रदान किया गया। बांसवाड़ा में उनका प्रागट्य सम्वत् 1902 में हुआ, आप परमहंस थे, दिगम्बर (नग्न स्वरूप) रहते थे।

नीलकंठेश्वर के पास पीपल के नीचे कुटिया बना कर रहते थे, आपको कोपीन (गेरुआ वस्त्र) पहनाने का प्रयास किया गया, जिसे वे बार-बार फैंक देते थे। इस बात की शिकायत पर उन्हें बांसवाड़ा राज्य की सीमा से बाहर भेज दिया गया। संवत 2011 में रतलाम के अफीम कलेक्टर गंगासिंहजी ने गुरुजी हेतु गंगेश्वर मंदिर और धर्मशाला बनवाई जिसमें उनका निवास भी बना दिया, जहाँ वे धर्मोपदेश दिया करते थे। बाद में बांसवाड़ा के नागर उन्हें यहां लाए, बांसवाड़ा के तत्कालीन महा रावल, श्री लक्ष्मणसिंहजी धर्मविमुख होकर मुस्लिम धर्मावलंबियों के प्रभाव में आ गए थे। उन्हें संदेश भेजा गया कि 'धर्म और कर्त्तव्य से विमुख राजा नपुंसक पति के समान होता है। ये वचन महारावल के आचरण को निर्मल करने के लिए रामबाण का काम कर गए और वे शिव भक्त हो गए, उन्होंने राज्य में सैकड़ों शिवलिंगों का निर्माण करवाया। योगीराज ने परसोलिया गांव में अपना निवास बनाया तथा माहीगंगा में बारह गोते लगाकर शिवलिंग हांसिल किए और उन्हें सर्वेश्वर महादेव मंदिर बनवाकर स्थापित करवाया। गुरु भाव के रहते उनकी सेवा में तत्पर रहने वालों की कोई कमी नहीं रही। अभी सरकारी रिकार्ड में सर्वेश्वर मंदिर के नाम से 85 बीघा से अधिक जमीन का उल्लेख है, जिसका उन्होंने कभी उपयोग नहीं किया। भारी बाढ़ में भी मंदिर और उसमें विराजित ताम्र नाग यथावत रहे। ऐसे ही अनगिनत चमत्कारों के धनी गुरु महाराज नागरवाड़ा में भी हाटकेश्वर महादेव हेतु शिवलिंग लाए और भस्म से निर्मित शिवलिंग को देवदेवेश्वर मंदिर में प्रतिष्ठापित किया। महारावल ऊवतो भृंगी उनके अनुचर बन गए थे। गणपतलालजी ने कुंवर का कार्य किया, वहाँ कुए और धर्मशाला का निर्माण करवाया, जिस तोला महारुद्र का उल्लेख किया गया है

वह इसी धर्मशाला के निर्माण में काम आया था। नागरवाड़े के सभी प्रसंगों में हाटकेश्वर मंदिर और केशवाश्रमजी की इसी धर्मशाला का उपयोग किया जाता था। आवश्यकतानुसार दोनों ही स्थानों पर समाज के लोगों ने सहयोग किया और निर्माण कार्य, विस्तार चलते रहे। केशवाश्रम धर्मशाला का निर्माण कई कालखंडों में हुआ।

आज जहां महंत दीन-बंधु सभागार है, वहां नागरवाड़े की शासकीय प्राथमिक शाला हुआ करती थी और महंतजी का पैतृक निवास स्थान। उसे खाली करवाकर उसे धर्मशाला का हिस्सा बनाया गया, जिससे सभी प्रसंग और जाति भोज में सुगमता हो गई और मंदिर वाले हिस्से को अलग रखना आरम्भ कर दिया। जय हाटकेश वाणी के श्री पवन शर्मा ने सहयोग कर्ताओं के नामों वाला सुंदर ढंग से लगाया गया बोर्ड देखा तो प्रशंसा करते हुए आग्रह किया कि अगर इसकी सूची भेजी गई तो सहर्ष इसे प्रकाशित किया जाएगा। समाज को ऐसे ही सेवाभावी लोगों की आवश्यकता है। हाल के ऊपर दूसरा निर्माणाधीन हाल और हाटकेश्वर के बाहर हो रहे निर्माण को भी उन्होंने देखा, इसी बीच करणी धर्मशाला के नवनिर्माण ने नागर समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता को पूर्ण किया है। केशवाश्रमजी धर्मशाला में ऊपर के हाल के निर्माण के लिए दस लाख रुपए और अपनी सेवा देने वाले भामाशाह की पहचान हो गई है, परन्तु नवम्बर माह में केश्वाश्रम की परसोलिया में शिला पर अंकित चरण पादुका और समाधि का पर्व मनाने के लिए जब पूरा समाज इस प्रांगण में एकत्रित होगा और ट्रस्ट द्वारा इसकी घोषणा हो, तब तक इन्तजार करना ही श्रेष्ठ है।

-प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा (राज.) मो. 08003063616

श्री हाटकेश्वर बचत व साख सहकारी समिति लि.

वार्षिक साधारण सभा में प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत

श्री हाटकेश्वर बचत व साख सहकारी समिति लि. की 14वीं वार्षिक साधारण सभा 13 सितम्बर 2015 को नागर संत श्री भेरवानंदजी की छत्री परिसर में सिद्धनाथ महादेव की पूजा अर्चना के पश्चात् उत्साह के साथ सम्पन्न हुई।

वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए उपाध्यक्ष श्री प्रमोदराय झा ने समिति की उत्तरोत्तर प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उपरोक्त संस्था की सदस्य संख्या 330 और हिस्सा पूंजी 31 मार्च 2015 को 8,91,000 हो गई है, साथ ही अनिवार्य मासिक जमा राशि 3400355 और ऋण वितरण का आंकड़ा 2806469 रुपये तक पहुंच गया है। इस कार्यकारिणी द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदन के अनुसार 4 वर्षों में नए प्रदान किए गए ऋणों का कीर्तिमान एक करोड़ से भी आगे निकल गया है। सदस्यों को ऋण अपने सन्तानों की उच्च शिक्षा, शादी-ब्याह, भवन, निर्माण एवं मरम्मत वाहन एवं ग्रहोपयोगी वस्तुएं क्रय करने के लिए प्रदान किए गए हैं। सदस्यों के ऋण चुकाने के सहकार को देखते हुए फण्ड की उपलब्धता ऋण की पात्रता और उपयोगिता को देखते हुए ऋण की वर्तमान सीमा को 50000 से बढ़ाकर 70000 तक का अधिकार प्रबंधकारिणी को प्रदान किया गया है, परन्तु संस्था के स्वास्थ्य की चिंता करते हुए विशेषाधिकार के रूप में इसका उपयोग करने की सलाह दी गई है। वर्ष 2014-15 हेतु समिति ने 10 प्रतिशत लाभांश देने की अनुशंसा की जिसका सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। बैंकों की निरन्तर घटती जा रही ब्याज दरों की स्थिति में भी समिति अनिवार्य मासिक जमा पर 9 प्रतिशत ब्याज प्रदान कर रही है। आदतन ऋण पर बंदिश हेतु ब्याज दर 12 प्रतिशत रखी गई है। समिति का संचालन वेतन न होकर मानदेय के आधार पर होने तथा कार्य के प्रति समर्पण हेतु पहले लोग श्री देवेन्द्र पंड्या और श्री बलदेव दवे की समिति कहा करते थे, वह स्थान अब समिति के कोषाध्यक्ष श्री पवन दवे ने प्राप्त किया है। सभी सदस्यों ने उनके कार्य और व्यवहार की प्रशंसा के साथ ही प्रबंध कार्यकारिणी को आगे बढ़ते रहने का संदेश देकर अपने सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। अंत में सपरिवार पधारे सभी सदस्यों ने श्रीखंड-कचोरी के साथ सहभोज का आनंद लिया।

-मधुसूदन झा (सचिव)

श्री हाटकेश्वर धाम में वाटर कूलर भेंट

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास हरसिद्धिपाल स्थित श्री हाटकेश्वर धाम में पूर्व घोषणा अनुसार स्व.श्री रामगोपालजी नागर (सामगी वाले) बैंक कॉलोनी इन्दौर की स्मृति में इनकी धर्मपत्नी श्रीमती गीतादेवी नागर एवं इनके परिवार द्वारा वाटर कूलर भेंट किया गया। एक सादे समारोह में भगवान श्री हाटकेश का पूजन आरती कर वाटर कूलर का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर न्यास मंडल की ओर से श्रीमती गीतादेवी नागर का शाल-श्रीफल से वरिष्ठ समाजसेवी श्रीमती रमा मेहता एवं श्रीमती पद्मा जोशी ने सम्मान किया।

कार्यक्रम में न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' कोषाध्यक्ष रामचन्द्र नागर, सचिव संतोष जोशी, वरिष्ठ आशीर्वाददाता श्री जमनाप्रसादजी पाठक (शुजालपुर वाले) पत्रकार राकेश नागर, श्री अजय प्रकाश मेहता, युवा साथी गोविन्द नागर, मनीष मेहता, संजय जोशी, सूरज मेहता सम्पादक (दैनिक अवंतिका) अमित नागर, अतुल मेहता, विशाल नागर, पं.सतीश नागर, विजय नागर, प्रदीप नागर, हेमन्त मेहता, विकास नागर, कैलाश रावल, गिरीश मेहता, शुभम रावल, विवेक मेहता (इन्दौर), प्रमोद नागर, श्रीमती वंदना जोशी, श्रीमती तृप्ति मेहता, श्रीमती वीणा नागर, श्रीमती रीना नागर, श्रीमती अजय प्रकाश मेहता आदि उपस्थित थे।

श्री हाटकेश्वर धाम में उत्तरकार्य एवं छैः श्रादि के लिये निःशुल्क व्यवस्था

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास हरसिद्धिपाल स्थित श्री हाटकेश्वर धाम में जो भी (समाजजन उत्तरकार्य एवं छैःश्रादि कार्य करने के लिये उज्जैन आते हैं, इनके लिये न्यास मंडल द्वारा निःशुल्क व्यवस्था समाजहित में प्रदान की गई है।)

मात्र व्यवस्था शुल्क ही लिया जाएगा।

छैःश्राद्धि के लिये ब्राह्मणों एवं भोजन की व्यवस्था के लिये समाजसेवी श्री जगदीशचन्द्र नागर (नागर इजि.वर्क्स) मो. 9826988983 से सम्पर्क कर सकते हैं।

छैःश्रादि एवं उत्तरकार्य के लिये पूर्व सूचना-

श्री हाटकेश्वर धाम के फोन 0734-2584599 पर व्यवस्थापक को नोट करवा सकते हैं। (न्यास मंडल)

एक निवेदन

सम्मानीय दानदाता,

जय हाटकेश

श्री हाटकेश्वर धाम नव निर्माण के समय आपने अपनी स्वेच्छा से दान राशि देने की घोषणा की थी। वह राशि अभी तक शेष है। चूंकि श्री हाटकेश्वर धाम परम पूज्य गुरुदेव पं.श्री कमल किशोरजी नागर महाराज की अनुकम्पा से नवनिर्मित होकर समाज को समर्पित हो गया। लोकार्पण के पश्चात् न्यास मंडल द्वारा इसमें मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था की गई अभी और भी सुविधाएँ उपलब्ध करना बाकी है। साथ ही न्यास की भावी योजना चौथी मंजिल में कमरों का निर्माण सिंहस्थ 2016 के पूर्व करना भी है। यदि समाज के दानदाता से न्यास को सहयोग मिला और पर्याप्त राशि इकट्ठा हो गई तो कमरों का निर्माण शीघ्र शुरु कर देंगे इसी संबंध में शेष राशि वाले दानदाताओं को न्यास की ओर से एक स्मरण पत्र भी भेजा रहा है। आपके द्वारा घोषित स्वेच्छिक राशि शीघ्र जमा कर सहयोग प्रदान करें।

इसी आशा एवं विश्वास के साथ...

न्यास मंडल, श्री हाटकेश्वर धाम

उज्जैन में अन्नकूट महोत्सव 15 नवम्बर को

प्रतिवर्षानुसार नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास एवं अन्नकूट आयोजन समिति के संयुक्त तत्वावधान में अन्नकूट महोत्सव दीपावली पर्व के पश्चात् 15 नवम्बर 2015 में रविवार को श्री हाटकेश्वर धाम में आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष अन्नकूट महोत्सव का आयोजन नागदा निवासी श्री विजय प्रकाशजी मेहता के संयोजन से उनकी माताजी स्व.सुशीला देवी मेहता एवं पिताजी स्व.श्री कांतिलालजी मेहता की स्मृति में किया जा रहा है। आयोजन का समय अपरान्ह 11 बजे रहेगा। छप्पन भोग का आयोजन श्री विकास रावल की तरफ से होगा। उपरोक्त आयोजन में सभी समाजजन आमंत्रित है।

मिट्टी की मूर्तियां स्थापित करें.....

चल समारोह में फूहड़ गाने न बजाएं-स्वामीजी

महामंडलेश्वर स्वामी दिव्यानंद जी भिक्षु महाराज हरिद्वार के धार्मिक यात्रा पर उज्जैन आने पर भक्तो ने स्वामी जी को रक्षासूत्र बांधकर आशीर्वाद लिया एवं गुरुपूजन का आयोजन महानंदा नगर स्थित श्री मिथिलेश त्रिवेदी के निवास पर आयोजित हुआ। स्वामी जी के गुरुपूजन के पश्चात स्वामी जी का पुष्पों के द्वारा अभिषेक पंडित श्री श्यामनारायण जी व्यास एवं नारायण उपाध्याय के द्वारा आयोजित किया गया। स्वामी जी का पुष्पाभिषेक उज्जैन नागर समाज युवा अध्यक्ष श्री हेमंत व्यास, संजय व्यास, कमलेश त्रिवेदी, मिथिलेश त्रिवेदी, महेश शर्मा, सुनील मेहता (एएसपी उज्जैन), अंकुश त्रिवेदी, आयुष त्रिवेदी, नीलाम्बुज त्रिवेदी, मौसम मेहता, नीरज रावल, के द्वारा किया गया। अभिषेक के पश्चात स्वामी जी ने पर्यावरण अभियान के बारे में भी चर्चा की।

स्वामी जी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाये जा रहे अभियान से जुड़ने के लिए लोगो को प्रेरित किया। इस अभियान में बताया गया कि गणेश चतुर्थी एवं नवरात्रि पर घर प्रतिष्ठान, ऑफिस में मिट्टी के गणेश जी की प्रतिमा ही स्थापित करे। बाजार में बिकने वाली केमिकलयुक्त मूर्तियों से जलीय जन्तुओ को हानि होती है एवं पानी भी दूषित होता है। स्वामी जी ने धार्मिक आयोजनों के चल समारोह में बजाने वाले फूहड़ गानो की जगह भक्ति संगीत के बारे में बताया। इस अवसर पर बाबा गुमानदेव परिवार के ज्योतिषाचार्य पंडित श्यामनारायण जी व्यास, चन्दन व्यास, नागर समाज के युवा अध्यक्ष भाई संजय व्यास, अंकुश त्रिवेदी आदि उपस्थित थे।

-अंकुश कमलेश त्रिवेदी उज्जैन, 9977891389

जहां सुमति तहं सम्पति नाना

रामचरित मानस की श्रेष्ठ चोपाइयां

मंगल भवन अमंगल हारी,
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहु
सो तेहि मिलई न कछु संदेहू।
करम प्रधान बिस्व करि राखा,
जो जस करइ सो तस फल चाखा।
धीरज, धरम, मित्र, अरु नारी,
आपद काल परिखि आई चारी।
जहां सुमति तहं संपत्ति नाना,
जहां कुमति तहं बिपत्ति निदाना।
परहित सरिस धर्म नहि भाइ,
पर पीड़ा सम नहि अधमाइ।
सरल स्वभाव न मन कुटिलाइ,
जथा लाभ संतोष सदाई।
दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
रामराज, नहि काहु हि ब्यापा।

-उषा ठाकोर, मुम्बई

लाटरी

एक बार संता की 20 लाख की लाटरी निकली।
संता लाटरी वाले के पास गया।
नंबर मिलाने के बाद लाटरी वाले ने कहा, 'ठीक है सर, हम आपको अभी एक लाख रूपए देंगे और बाकी के 19 लाख आप अगले 19 हफ्तों तक ले सकते हैं।
संताः नहीं, मुझे तो पूरे पैसे अभी चाहिए नहीं तो आप मेरे पांच रूपए वापस कर दीजिए।

झोंकर में धर्मशाला निर्माण का शंखनाद

मक्सी के पास झोंकर ग्राम में लगभग आधा बीघा भूमि पर धर्मशाला निर्माण का शंखनाद 20 सितम्बर को किया गया। प्रातः भगवान हाटकेश्वर का पूजन अभिषेक पश्चात् एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित समाजबंधुओं ने धर्मशाला निर्माण हेतु अपने-अपने सुझाव दिए। कई समाजजनों ने प्रस्तावित निर्माण हेतु धनराशि की घोषणा भी की। धर्मशाला निर्माण के सम्बंध में मुख्य बिन्दू यह है कि झोंकर में मुख्य बाजार में स्थित जो भूमि है वहां किसी समय धर्मशाला थी, समय बीतने के साथ वह धर्मशाला जीर्ण-शीर्ष हो गई तथा उपरोक्त भूमि पर अन्य ग्रामीण जनों की नजर रहने लगी। उपरोक्त भूमि को बचाने तथा उसे उपयोगी बनाने के उद्देश्य से स्थानीय नागरजनों ने एक समिति बनाकर पिछले दिनों शाजापुर, इन्दौर, उज्जैन आदि स्थानों के प्रबुद्ध समाजजनों से मिलकर धर्मशाला निर्माण का रास्ता खोला है। स्थानीय समिति ने प्रबुद्धजनों से प्राप्त सुझावों के आधार पर आगामी कार्ययोजना तैयार की है। कार्यक्रम में म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् के अध्यक्ष राजेश त्रिवेदी, उपाध्यक्ष चंद्रकांत त्रिवेदी, केदार रावल, भेरुलाल मेहता, सचिव गोपालकृष्ण व्यास, कोषाध्यक्ष योगेन्द्र त्रिवेदी, संरक्षक डॉ.मनोहरलाल शर्मा, म.प्र. महिला परिषद् अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई, आशीष त्रिवेदी, अमिताभ मंडलोई जय हाटकेश वाणी से दीपक शर्मा, प्रवीण त्रिवेदी, व्रजेन्द्र नागर, मणीशंकर नागर, राजेश नागर, आशीष नागर, संजय नागर, राजू व्यास, दिलीप नागर, राम व्यास आदि उपस्थित थे, कार्यक्रम का संचालन लव मेहता ने किया तथा आभार मक्सी शाखा अध्यक्ष डॉ.विजय कृष्ण व्यास ने व्यक्त किया।

झोंकर शाखा का गठन म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् ने अपने क्षेत्रीय विस्तार के रूप में झोंकर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान परिषद् की 37वीं शाखा के रूप में झोंकर शाखा का गठन किया। जिसमें अध्यक्ष नवीन नागर सचिव प्रमोद मेहता, संरक्षक चंद्रकांत नागर, रमेश पौराणिक, उपाध्यक्ष श्रीधर नागर, कोषाध्यक्ष बालकृष्ण भंडारी, कार्यकारिणी सदस्य- सुधांशु नागर, प्रकाश नागर, संजय नागर, मुकेश नागर, ओमप्रकाश भंडारी, नितिन नागर, योगेश मेहता, राहुल मेहता, बब्बू भंडारी, राजेन्द्र नागर, राम नागर, भरत भण्डारी, नरेन्द्र भंडारी, भौमिक मेहता, गोपाल भंडारी चुने गए।

प्रथम आयोजन ही बन गया यादगार...

टीकोन शाखा द्वारा भगवान हाटकेश्वर का अभिषेक

नागर समाज के विद्वानों द्वारा जब लाउड स्पीकर पर उच्च स्वर में शुक्ल यजुर्वेद की ऋचाएँ सस्वर एक साथ पढ़ी जा रही थी तब मधुर वेद ध्वनी सुनकर पूरे गाँव के लोग सुनने देखने व भगवान हाटकेश्वर के दर्शन के लिए दौड़ पड़े। मौका था म.प्र. नागर परिषद् शाखा टीकोन द्वारा अपने इष्ट देव भगवान हाटकेश्वर का श्रावण मास के उपलक्ष में आयोजित रुद्राभिषेक का इस पुनीत भव्य आयोजन की तैयारी एवं महत्व को देख ग्राम में स्थित बाबा रामदेव के सेवक आचार्य श्री शिवनारायण पाटीदार भी शाखा अध्यक्ष श्री दुर्गाशंकर नागर के साथ सपत्नीक यजमान बने एवं पूर्ण भाव-भीने अंदाज में भगवान हाटकेश्वर के अभिषेक में सहभागी बने। इस प्रकार का भव्य आयोजन इस शाखा द्वारा पहली बार किया गया था। आयोजन को देख सिर्फ नागर समाज ही नहीं, संपूर्ण ग्राम टीकोन के दर्शनार्थी गदगद हो गए। महाआरती के बाद सहभोज का आयोजन श्री शिवनारायण पाटीदार के यहाँ श्री बाबा राम देव आश्रम पर किया गया। रुद्राभिषेक पं.संतोष नागर एवं पं. दिनेश शास्त्री के नेतृत्व में 11 विद्वान पंडितों द्वारा किया गया। इस अवसर पर नागर समाज के कार्यकर्ता पं.महेश नागर, जानकीलाल नागर, मनोहर नागर, गोवर्धन नागर, सुरेश नागर, ललित नागर, संजय नागर, सतीष नागर, जगदीश नागर, मोहनलाल नागर, रमेश नागर, बाबूलाल नागर, दिनेश नागर, राजेन्द्र नागर, विजय नागर, दीपक नागर आदि समस्त नागर समाज के पुरुष महिलाएँ उपस्थित थे।

दिव्य संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

पं. श्री बालकृष्ण नागर के मुखारविन्द से सम्पन्न हुआ सात दिवसीय आयोजन

नागर समाज के उभरते भागवत कथा वाचक पं. बालकृष्ण नागर द्वारा विगत दिनों ग्राम दुहानी में सात दिवसीय भागवत कथा का पाठ किया गया । ग्रामु दुहानी के श्रीराम मन्दिर में 9 सितम्बर से 15 सितम्बर तक आयोजित भागवत ज्ञान गंगा यज्ञ में प्रतिदिन दोपहर 12 से 3 बजे तक कथा वाचक पं. बालकृष्ण नागर द्वारा भागवत पाठ किया गया । प्रतिदिन बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने श्रवण लाभ लिया । कथा के समापन वाले दिन एक चल समारोह भी ग्राम के प्रमुख मार्गो से निकाला गया एवं भण्डारे का आयोजन भी किया गया । सम्पर्क सूत्र-

-भागवताचार्य पं. बालकृष्ण नागर, मक्सी, मो. 9826508504

बॉस अपनी सेक्रेटरी से- तुम आज फिर आधे घंटे देर से आयी हो, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यहां पर काम कितने बजे से शुरू होता है?
सेक्रेटरी बोली- मालूम नहीं सर, जब भी मैं यहां आती हूं तो लोगों को काम करते हुए ही पाती हूं.

श्रीमती दिव्या मंडलोई की संगीतमय प्रस्तुति

संभवतः पहली बार किसी नागर गृहिणी ने भव्य सभागार में आयोजित समारोह में अपनी प्रशंसनीय संगीतमय प्रस्तुति दी। अवसर था 'गीत गाते हैं हम गुनगुनाते हैं हम' संस्था के 20 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम का जिसमें अन्य कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी। परन्तु श्रीमती दिव्या मंडलोई की विशिष्ट प्रस्तुतियों ने उपस्थित श्रोताओं का मन मोहा। श्रीमती मंडलोई ने 'आँखों में काजल है' मेरे ख्वाबों में जो आए ये रातें ये मौसम... आदि सुप्रसिद्ध गीतों की प्रस्तुति दी।

खास बात- श्रीमती दिव्या मंडलोई ने समाज की उन महिलाओं के लिए प्रेरणास्पद कार्य किया है, जो अन्य जिम्मेदारियों के साथ अपने व्यक्तिगत शौक को न केवल पूरा करें, बल्कि उसे वृहद् स्तर पर समाज के सामने भी ले जाएं। अपनी कला का दमन कतई न करें।

हो सकता है- सुझाव है कि नागर ब्राह्मण समाज की संगीत रसिक प्रतिभाएँ अपना एक ग्रुप बनाएं तथा अपने-अपने स्तर पर तैयारी कर भव्य सभागार में श्रोताओं के बीच अपनी प्रस्तुति दें। इससे सभी प्रतिभाओं को विशेष मंच भी मिलेगा तथा हमारे समाज की ख्याति कला के क्षेत्र में भी बुलंदियां छू सकेगी।

नवदुर्गोत्सव के अंतर्गत रास-गरबा एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन

म.प्र. नागर परिषद् शाखा इन्दौर एवं म.प्र. नागर ब्राह्मण महिला मंडल शाखा इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान में नवदुर्गोत्सव का आयोजन 13 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2015 तक स्थानीय कम्यूनिटी हाल बगीचा नं. 3 कंचन बाग इन्दौर में किया जा रहा है, जिसमें प्रतिदिन रास गरबा एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन होंगे।

अध्यक्ष श्री जयेश झा एवं महासचिव श्री राजेन्द्र व्यास ने यह जानकारी देते हुए बताया कि घटस्थापना (श्रीमती राजकुमारी मेहता द्वारा) 13 अक्टूबर मंगलवार को दोपहर 12 बजे की जावेगी। आरती प्रतिदिन-रात्रि 8.30 बजे एवं द्वितीय रात्रि 10-45 बजे होगी। गरबा प्रतिदिन 13 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक 8.45 से 10.45 तक होंगे।

हवन महाअष्टमी 20 अक्टूबर को दोपहर 12 बजे होगा। घटस्थापना एवं माताजी की प्रतिमा की स्थापना पं.विश्वनाथ व्यास, पं.रमेश रावल, पं. उमाशंकरजी नागर एवं डॉ.सतीश त्रिवेदी के आचार्यत्व में दोपहर 12 बजे होगी।

18 अक्टूबर 2015 रविवार को मेहंदी तथा रांगोली प्रतियोगिता दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक (रांगोली बिंदी वाली एवं फ्री हेंड)

(2) तात्कालिक भाषण- 3 से 4 बजे तक (सभी के लिए) विषय 3 मिनट पहले दिया जाएगा एवं भाषण 3 मिनिट का होगा। (3) फेन्सी ड्रेस प्रतियोगिता दोपहर 3.30 से 2 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चों हेतु। (4) फलाहारी व्यंजन प्रतियोगिता (मीठा एवं नमकीन) स्वाद, पोष्टिकता एवं प्रस्तुति पर आधारित निर्णय होगा। अष्टमी के दिन 8.30 बजे प्रथम आरती के समय 'आरती थाली सजाओ' प्रतियोगिता होगी। नोट- मेहंदी-कोन, रांगोली स्वयं साथ लाना है चित्रकला का विषय 'पर्यावरण एवं स्वच्छता' रहेगा।

विशेष आग्रह- कृपया महिला वर्ग साड़ी, लहंगा, चुनरी एवं पुरुष वर्ग पायजामा, धोती-कुर्ता पहनकर आएं, ड्रेस कोड का पालन अनिवार्य है, काले वस्त्र वर्जित है।

गरबा प्रस्तुति देने वाले सभी महिला-पुरुष, बच्चों को बिना पास के प्रवेश नहीं दिया जाएगा, कृपया गरबा करने वाले प्रतिभागी अपना पासपोर्ट आकार का फोटो श्रीमती सोनिया मंडलोई मो.9826344266 को देवें ताकि आपका परिचय पत्र बन सके। अन्य किसी जानकारी के लिए श्रीमती शारदा मंडलोई 9425085052 एवं राजेन्द्र व्यास 9893715930 से सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रतिभा सम्मान हेतु दसवीं, बारहवीं, स्नातक, स्नातकोत्तर, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वालों का सम्मान किया जावेगा। समाजजन 60 फीसदी से अधिक अंकों के प्रमाण स्वरूप अपनी अंकसूची की फोटो प्रति गरबोत्सव आयोजन स्थल कंचन बाग में जमा करवा देवें। प्रतिभा सम्मान समारोह आगामी हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर आयोजित होगा।

बीसी के माध्यम से काम हो सकता है इक्कीसा

अन्नपूर्णा क्षेत्र की नागर महिलाओं की पहल

आजकल बीसी बहुत चलन में है, क्षेत्र विशेष, मोहल्ले या समाज स्तर पर बीसियां चल रही है, महिलाओं में बीसी का आकर्षण इसलिए ज्यादा है कि उन्हें महिने में एक बार अपनी सखियों के साथ बाहर जाकर मनोरंजन का अवसर तो मिलता ही है, प्रतिमाह दिया जाने वाला पैसा भी एक साथ मिल जाता है, जो किसी बड़ी जरूरत या गहनें बनवाने में उपयोग आता है। नागर ब्राह्मण समाज की महिलाओं ने भी बीसी के माध्यम से एक कदम आगे बढ़ाते हुए इक्कीसा काम किया है, वह यह कि बीसी के दौरान परिवार एवं समाज के सम्बंध में भी चर्चा हो जाती है। लगभग 22 नागर महिलाओं की एक बीसी इन्दौर में चल रही है। दूसरी बीसी अन्नपूर्णा क्षेत्र में शुरु हुई है, जिसमें सोनाली नागर, बिन्दू मेहता, स्मिता मेहता, सुनिता मेहता, श्रद्धा मेहता, मोना मेहता, संगीता शर्मा, ज्योति सुनीता दवे, अनिता नागर, यशस्वी एवं अनिता अशोक नागर जुड़ी हैं। ये महिलाएँ प्रतिमाह बीसी हेतु मिलती है, इसी बीच वे समाज संगठन का काम भी कर सकती है तथा साल में एक आयोजन जिसमें सभी सदस्य सपरिवार उपस्थित हो सके। इसी प्रकार के प्रयास रतलाम, राऊ, देवास, उज्जैन आदि स्थानों पर चल रहे हैं। सामाजिक संगठनों से भी निवेदन है कि वे विभिन्न स्थानों पर चल रही बीसी की जानकारी लेकर उनके सदस्यों के माध्यम से अपनी बात का विस्तार करें।

जन्मदिन की बधाई

पं. कैलाश मेहता
19 अक्टूबर 1956

चि.पंकज मेहता
11 अक्टूबर 1996

शुभाकांक्षी- समस्त परिवार इन्दौर पीपलू
श्री रावलजी का डेरा, केसूर 9329471787

कु.इस्नेही (खुशी) तिवारी, महू
2-10-2015
कु.सोम्या (डिम्पी) अमित जोशी, इन्दौर
15-10-2015
कु.वन्या (अवि) आशुतोष जोशी, इन्दौर
25-10-2015
जोशी, नागर, तिवारी, जाधव परिवार
-पी.आर.जोशी

धन्या अंकुश त्रिवेदी
21 ओक्टूबर 2015
समस्त त्रिवेदी परिवार
उज्जैन 9977891389

हमारे प्रेरणा स्त्रोत, म.प्र.नागर ब्राह्मण परिषद् के पूर्व अध्यक्ष, स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रेमनारायणजी नागर को 1 अक्टूबर 2015 को 90वें वर्ष प्रवेश की हार्दिक बधाई।

चित्र में विगत 12 जुलाई 2015 को फुटबाल मैच का मुख्य अतिथि के रूप में शुभारंभ करते श्री नागर।

-दिलीप मेहता, उज्जैन

वाणी की मुखरता में आपका भी योगदान

जय हाटकेश वाणी के सहयोगी

श्री संजय शंकरलालजी नागर
बीमा नगर, इन्दौर

श्री विजयप्रकाशजी मेहता
बिरलाग्राम नागदा जं.

श्री अनिल स्व.प्रभाषचन्द्रजी झा
राऊ, इन्दौर

श्री मुकेश स्व.रामरतनजी शर्मा
रवीन्द्र नगर, उज्जैन

आवेदन प्रपत्र

मैं ..... पता.....

.....मो..... जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन सहयोगी सदस्य बनना चाहता हूँ। मैं निर्धारित शुल्क नकद/चेक/ड्राफ्ट द्वारा जमा कर रहा हूँ तथा मेरे निम्नलिखित विज्ञापन दर्शाई गई दिनांक एवं माह पर प्रकाशित करने का कष्ट करें।

नाम	दिनांक/माह	विषय
(1) पिता/माता का नाम-		
(2) पिता/माता का नाम-		
(3) पिता/माता का नाम-		
(4) पिता/माता का नाम-		
(5) पिता/माता का नाम-		
(6) पिता/माता का नाम-		

मैं उपरोक्त दिनांक/माह में प्रकाशित विज्ञापन हेतु फोटो एवं अन्य सामग्री उपलब्ध करवा दूंगा।

हस्ताक्षर
प्रकाशन सहयोगी

जैसा कि आप सभी नागरजन जानते हैं कि मासिक जय हाटकेश वाणी ने विगत दस वर्षों में कामयाबी के कई आयाम छुए हैं, इसकी लोकप्रियता अब देश की सीमाओं से बाहर निकलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गई है। पठनीय सामग्री की साजसज्जा एवं उसकी बहुरंगी प्रस्तुति में एक बड़ा बजट खर्च होता है, यदि आप इसमें सहभागी बनेंगे तो समाज और हम आपके आभारी होंगे। आपका सहयोग एवं विज्ञापन प्रकाशन की राशि अग्रिम प्राप्त हो जाए इस उद्देश्य से एक स्कीम बनाई गई है, जिसमें 3000 रुपये अग्रिम देकर आप एक वर्ष तक डेढ़पृष्ठ रंगीन विज्ञापन प्रकाशित करवा सकते हैं। ये विज्ञापन अवसर विशेष जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, पुण्य स्मरण आदि के प्रकाशित करवाए जा सकते हैं, यदि आप इस योजना के अंतर्गत हमारे साथ जुड़ते हैं, तो आपका नाम, पता भी हम सहयोगियों की सूची में प्रकाशित करेंगे। जनजागरुकता एवं समाज कल्याण की दिशा में उठे कदम में आप हमारे सहभागी, सहयोगी बनें इसी निवेदन के साथ...

पंकज नागर का सम्मान

शिक्षक दिवस के अवसर पर लायन्स क्लब इन्दौर द्वारा श्री पंकज नागर का शाल-श्रीफल भेंटकर सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि सन् 1991 की जनगणना में उत्कृष्ट कार्य के लिये श्री नागर को राष्ट्रपति पुरस्कार 'रजत पदक' से भी सम्मानित किया जा चुका है। श्री नागर वर्तमान में शास.प्राथमिक विद्यालय मूसाखेड़ी में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत है। स्व.श्री गणेशलालजी नागर एवं स्व.श्रीमती गौरीप्रभा नागर के सुपुत्र श्री पंकज नागर की उपलब्धियों पर समाजजनों, परिजनों एवं इष्टमित्रों ने बधाई प्रेषित की है।

डॉ.राजेन्द्र शर्मा का सम्मान

गुजराती कॉमर्स महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ.राजेन्द्र शर्मा (सुपुत्र- श्रीमती प्रेमलता-स्व.रामप्रसादजी शर्मा) इन्दौर का सम्मान शिक्षक दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब ऑफ इन्दौर नार्थ के पदाधिकारियों द्वारा शाल-श्रीफल से किया गया। ज्ञातव्य है कि कामर्स विषय में अध्यापन के साथ ही डॉ.शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें देशभर के शिक्षण संस्थानों में प्रयुक्त होती है। बधाई।

श्री बी.एल.मेहता सचिव पद पर निर्वाचित

म.प्र.डिप्लोमा इंजीनियर्स एसोसिएशन भोपाल के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभागीय समिति मे इंजी श्री बी.एल.मेहता निर्विरोध सचिव निर्वाचित हुए निर्वाचन 13-9-15 रविवार को भोपाल मे सम्पन्न हुआ। श्री मेहता म.प्र.डिप्लोमा इंजीनियर्स एसोसिएशन जिला समिति शाजापुर के अध्यक्ष पद पर वर्ष 2003 से लगातार 12 वर्षों से निर्विरोध निर्वाचित होते आ रहे है,एवं लो.स्वा.या.विभाग शाजापुर में वरिष्ठ प्रवर श्रेणी उप यंत्री के पद पर कार्यरत है। श्री मेहता वर्तमान में म.प्र. नागर ब्राम्हण परिषद में उपाध्यक्ष भी है। सचिव पद पर निर्वाचित होने पर ईष्ट मित्रो द्वारा बधाई एवं हर्ष जताया गया।

-बी.एल.मेहता, शाजापुर मो.997752453

श्रीमती मीनू नागर को सफलता

पचपहाड़ (राजस्था) निवासी श्री चन्द्रप्रकाश सौ.राधानागर की पुत्रवधू श्रीमती मीनू नवीन नागर ने राजस्थान लोकसेवा आयोग की स्कूल व्याख्याता परीक्षा (अंग्रेजी) में 81वीं रैंक प्राप्त कर समाज का गौरव बढ़ाया है। म.प्र. एवं राजस्थान के नागरजनों ने श्रीमती नागर को बधाई प्रेषित की है।

मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित हुई मेधावी कु. शालिनी नागर

कु.शालिनी नागर (सुपुत्री- श्रीमती राधा-महेश नागर) उज्जैन ने 12वीं म.प्र. बोर्ड परीक्षा 2014-15 में 85.6 प्रतिशत अंक ले कर उज्जैन पब्लिक स्कूल में विशिष्ट सफलता प्राप्त की। प्रतिफल स्वरूप म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने भोपाल में मेधावी विद्यार्थी प्रोत्साहन कार्यक्रम में सम्मान कर प्रमाणपत्र के साथ लेपटॉप हेतु 25,000/- रुपये की राशि प्रदान की। इस उपलब्धि पर परिवार के सदस्यों ने कु.शालिनी नागर को बधाई प्रेषित की।

-संतोष जोशी

मेधावी विद्यार्थी प्रोत्साहन
प्रशस्ति-पत्र

कु.वैभवी को प्रथम स्थान

मध्यप्रदेश शासन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा खण्डवा में डिजीटल इंडिया सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के अंतर्गत वैश्वीककरण के युग में डिजीटल इंडिया कार्यक्रम का योगदान विषय पर आयोजित जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में खण्डवा नागर समाज की कु. वैभवी प्रफुल्ल मण्डलोई ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्थानीय इंडोर स्टेडियम में हुए समारोह में जिलाधीश श्री एम के अग्रवाल, सीईओ जिला पंचायत श्री अमित तोमर एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ श्रीराम परिहार ने वैभवी को प्रशस्ति पत्र एवं होम थियेटर पुरूस्कार स्वरूप भेंट कर सम्मानित किया। वैभवी खंडवा की सेंट पायस हायर सेकेंडरी स्कूल की कक्षा नौवी की छात्रा है। उल्लेखनीय है कि कु. वैभवी इसके पूर्व भी बेटी बचाओ अभियान के अंतर्गत महिला बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी हैं एवं अपनी शाला के विज्ञान क्लब की सचिव हैं।

-प्रफुल्ल मण्डलोई, 9827331200

श्रीमती सुशीला रावल का सम्मान

श्रीमती सुशीला रावल 31 अगस्त 2015 को शिक्षक के पद पर govt माध्यमिक विद्यालय बड़ावदा में रहकर सेवानिवृत हुई। 1983 में आपने जिस विद्यालय से अपनी सेवा आरम्भ की उसी विद्यालय से सेवानिवृति लेकर एक विशिष्ट पहचान बनाई। रतलाम में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सांस्कृतिक संगठन मंच के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में कलेक्टर ओर जिला शिक्षा अधिकारी रतलाम के हाथो आपकी शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि पर सम्मानित किया साथ ही मध्य प्रदेश नागर ब्राह्मण शाखा रतलाम की ओर से भी अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया। इस अवसर पर shrimati रावल ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैंने अभी तक सर्विस में रहते हुए देश के कई नोनिहालो का भविष्य बनाया है किन्तु समाज को समय नहीं दे सकी। अब मेरा जीवन समाज के लिये समर्पित रहेगा। श्रीमती रावल ने अपने जीवन की सफलता का श्रेय अपने पति राष्ट्रपति पुरुस्कार से सम्मानित स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश जी रावल को दिया। समाज जनो ने भी श्री ओमप्रकाश रावल का जिक्र आते ही उनके समाज के प्रति अपने समर्पण ओर कार्य को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी।

ज्ञाति गौरव
श्री हर्ष परेश भाई पंड्या

बी.एच. गार्डी इंजीनियरिंग कॉलेज राजकोट (गुजरात) के मेकेनिकल इंजीनियरिंग के मात्र उन्नीस वर्षीय विद्यार्थी श्री हर्ष परेशभाई पंड्या तथा उनके दो सहपाठियों ने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर उनवेक अनुसंधान प्रोजेक्ट को प्रस्तुत कर न केवल विदेशी विज्ञानिकों को अचंभे में डाल दिया, वरन ज्ञाति, गुजरात तथा देश को भी सम्मान दिलवाया है। अमेरिका की एक सौ अस्सी वर्ष पुरानी संस्था अमेरिकन सोसायटी फोर मेकेनिकल इंजीनियरिंग ऑर्गेनाइजेशन द्वारा आयोजित इनोवेटिव जीजाईन सिम्युलेशन चेलैंज की अन्तरराष्ट्रीय स्पर्धा में उनका प्रोजेक्ट थियो जेनसन सायकल प्रस्तुत कर 2 अगस्त 2015 को बोस्टन शहर में प्रतियोगिता प्रथम स्थान तथा दो हजार डॉलर का इनाम प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में विश्व के समस्त देशों में से 12 टीमों को अंतिम चरण में प्रवेश मिला, जिसमें से 6 टीमें भारत वर्ष की थी। प्रतियोगिता के अन्त में श्री हर्ष पंड्या को टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है। अनेक अभिनंदन श्री पंड्या का प्रोजेक्ट प्राकृतिक विपत्ति के समय वस्तुओं के परिवहन के लिये अत्यन्त उपयोगी उपकरण से सम्बंधित है।

-अनिल कुमार मेहता
सदस्य सलाहकार समिति
राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान

श्री उमेश मेहता को पदोन्नति

श्री उमेश गुणेश्वर मेहता वर्तमान में भारतीय वायु सेना में मास्टर वारन्ट ऑफिसर के पद पर एयर एन.सी.सी.विंग इन्दौर में पदस्थ है। अप्रतीम एवं सराहनीय सेवाओं की मान्यता के प्रतिफलस्वरूप 15 अगस्त 2015 से उनकी पदोन्नति ऑनररी फ्लाईंग ऑफिसर के पद पर हुई है। इस उपलब्धि पर परिवार एवं समाज की सभी शाखाओं की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। **-दिलीप मेहता, उज्जैन**

वैवाहिक (युवक)

अभिषेक नवीन नागर

जन्मदि. 6-7-1989
4.45 ए.एम.,उदयपुर (राज.)
कद- 5'10"
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए. फायनेंस
कार्यरत- सीनियर अका.मैनेजर फ्यूचर ग्रुप. अहमदाबाद
सम्पर्क- 09783718508, 09649356113

दिपेश रमेशचन्द्र नागर

जन्मदि. 29-8-1988, सोमवार
समय-6.24 पी.एम., इन्दौर
शिक्षा- एम.टेक.
कार्यरत- मुख्य प्रबंधक, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, उदयपुर
सम्पर्क-09352750589, 07597226882

सौरभ सुधीर नागर

जन्मदि. 13-7-86, कद- 6'5"
समय- 9.5 ए.एम., उज्जैन
शिक्षा- एम.बी.ए. (एच.आर.)
कार्यरत- टाटा डोकोमो, एच.आर.मैनेजर, अहमदाबाद
सम्पर्क- उज्जैन 09827283475, 09907025611

लोकेश मनोहरलाल नागर (भंडारी)

जन्मदि. 6-8-1990
8.00 ए.एम., डेलची (माकड़ोन)
कार्यरत- कर्मकांड ज्योतिष एवं प्रायवेट नौकरी
सम्पर्क- मो.9755210829

नीरज ओमप्रकाश मेहता

जन्मदि. 17-3-1990
12.120 पी.एम., कोटो (राज.)
कार्यरत- फूल डेकोरेशन एवं म्यूजिशियन,
सम्पर्क- 09680204073

सुमित मेहता (मांगलिक)

जन्मदि. 9-12-1985
समय- 7.10 ए.एम., आगरा
शिक्षा- बी.कॉम. (एम.बी.ए.)
कार्यरत- फायनेंस कंपनी
सम्पर्क- 09252197733, 08742867462

लोकेश शरद नागर

जन्मदि. 8-5-1986
5.30, मक्सी (जि.शाजापुर)
गोत्र- भारद्वाज, कद- 5'8"
शिक्षा- बी.एस.सी., एम.बी.ए.
कार्यरत- राष्ट्रीयकृत बैंक में
सम्पर्क- उज्जैन फोन 0734-2524052, मो. 9826485952

कविश डॉ.बी.एस. दशोरा

जन्मदि. 2-11-1985, उदयपुर
शिक्षा- एम.टेक. सीएस फ्रॉम एनआईटी भोपाल
कार्यरत- युनिसिस ग्लोबल, बैंगलोर
सम्पर्क- 09461925274, 02940-2464110

तुषार गौरांग त्रिवेदी

जन्मदि. 9-1-1986
समय-12.05 पी.एम., नीमच
शिक्षा- बी.ई. मैकेनिकल, एम.बी.ए., कद- 6'11"
कार्यरत- बिजनस एनालिस्ट इन स्टार केपिटल, इन्दौर
सम्पर्क- नीमच 07423-202163, 09893642227

प्रवीण स्व.राजेन्द्र रावल
जन्मदि. 28-1-1989
समय-12.30 पी.एम., भोपाल
कद- 5'10"
शिक्षा- एम.बी.ए. (एचआर)
कार्यरत- रीयल एस्टेट
सम्पर्क- अनिल नागर (उज्जैन)
09826470339, 9826012383

अंकित राकेश दवे

जन्मदि. 18-05-1987
समय-08.10 पी.एम., उज्जैन
कद- 5'8"
शिक्षा- एम.सी.ए.
कार्यरत- सॉफ्टवेयर इंजीनियर, इन्दौर
सम्पर्क- जाल कम्पाउण्ड, मक्सी रोड़, उज्जैन
मो. 09926059358, 09926186796

संताः यार पेट्रोल के दाम फिर बढ़ गए हैं।
बंताः क्या फर्क पड़ता है यार मैं तब भी सौ रुपए का पेट्रोल डलवाता था और आज भी उतने का ही डलवाता हूं।

वैवाहिक युवती

मोनिका अशोक नागर

जन्मदि. 12-1-1993
10.00 पी.एम., अहमदाबाद
शिक्षा- बी.कॉम., एम.कॉम.
कार्यरत- स्वयं का ब्यूटी पार्लर, कद- 5'10"
सम्पर्क- 09826769403

कु. नीति विपिन कुमार त्रिवेदी

जन्मदि. 16-9-1986
समय-12.20 पी.एम. (नून)
बूंदी (राज.), कद- 5'
शिक्षा- पी.एच.डी., युजीसी नेट
कार्यरत- असिस्टेंट प्रोफेसर (गुजरात सरकार)
सम्पर्क- बांसवाड़ा 09012387178

कु.टीना जगदीशचन्द्र नागर

जन्मदि. 1-10-1986, शाजापुर
गौत्र- पंड्या
शिक्षा- एम.ए. हिन्दी लिट. बी.एस.सी. (बायोलॉजी) बी.म्युजिक, डी.एड. (गर्व.)
कार्यरत- शिक्षक ग्रेड-2 (म.प्र.शासन)
सम्पर्क- नरसिंहगढ़, राजगढ़
मो. 09179746254, 09630314512

कु.प्राची सन्तोष नागर

जन्मदि. 26-10-1989, उज्जैन
कद- 5'4", गौत्र- गौतम
शिक्षा- बी.कॉम., सी.ए. फायनल अध्ययनरत
सम्पर्क- भोपाल
मो. 08435941360

कु.प्रीति प्रकाशचन्द्र नागर

जन्मदि. 4-5-1990
गौत्र- भारद्वाज, कद- 4'10"
शिक्षा- बी.कॉम. (टेक्सेशन)
एम.बी.ए. (फायनेंस)
सम्पर्क- उज्जैन
मो. 09406626863

कु.अर्पणा अरुण शंकर नागर

जन्मदि. 19-2-1993
1.50 पी.एम., सवाई माधोपुर (राज.), कद- 5'6"
शिक्षा- इंग्लिश लिटरेचर एम.ए. (अध्ययनरत)
आर.टी.ई.टी. ई.टी.टी. (जम्मू)
सम्पर्क- भगवतगढ़(राज.)
मो. 08764076354, 09667290857

कु. ललिता मनोहरलाल मंडारी

जन्मदि. 14-9-1995
समय- 5.30 पी.एम.
सम्पर्क- मो. 09755210829

डॉ.मेघा दिनेशचन्द्र जोशी

जन्मदि. अगस्त 1980, इन्दौर
कद- 5'4"
शिक्षा- एम.बी.ए. (एच.ए.), बी.पी.टी. फिजिओथेरेपिस्ट
कार्यरत- असिस्टेंट मैनेजर (एचआर)
सम्पर्क- इन्दौर 0731-2491007, 07869714442

संताः क्या तुम बिना खाना खाए जीवित रह सकते हो?
बंताः नहीं।
संताः लेकिन मैं रह सकता हूं।
बंताः कमाल है यार, मगर कैसे?
संताः नाश्ता करके और कैसे!

सर्किटः भाई, बोले तो पहले तो सिर्फ रात को ही मच्छर काटते थे, अब तो दिन में भी काटने लगे हैं।
मुन्नाभाईः अबे सर्किट, तूने ये रिसेशन के बारे में नहीं सुना क्या? पूरे वर्ल्ड में मंदी की मार ऐसी है कि इंसान तो क्या, अब मच्छरों को भी दिन-रात काम करना पड रहा है।

नवरात्रि में कैसे करें मां दुर्गा का पूजन

मां जगदंबा दुर्गा देवी जो ममतामयी मां अपने पुत्रों की इच्छा पूर्ण करती है, ऐसी देवी मां का पूजन संक्षिप्त में प्रस्तुत है।

सबसे पहले आसन पर बैठकर जल से तीन बार शुद्ध जल से आचमन करे- ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः फिर हाथ में जल लेकर हाथ धो लें। हाथ में चावल एवं फूल लेकर अंजुरि बांध कर दुर्गा देवी का ध्यान करें।

आगछ त्वं महादेवि। स्थाने चात्र स्थिरा भव।
यावत पूजां करिष्यामि तावत त्वं सन्निधौ भव।।

श्री जगदम्बे दुर्गा देव्यै नमः। दुर्गादेवी-आवाहयामि! - फूल, चावल चढ़ाएं।
श्री जगदम्बे दुर्गा देव्यै नमः आसनार्थे पुष्पानी समर्पयामि।- भगवती को आसन दें।
श्री दुर्गादेव्यै नमः पाद्यम, अर्ध्य, आचमन, स्नानार्थं जलं समर्पयामि।- आचमन ग्रहण करें।
श्री दुर्गा देवी दुग्धं समर्पयामि - दूध चढ़ाएं।
श्री दुर्गा देवी दही समर्पयामि - दही चढ़ाएं।
श्री दुर्गा देवी घृत समर्पयामि - घी चढ़ाएं।
श्री दुर्गा देवी मधु समर्पयामि - शहद चढ़ाएं
श्री दुर्गा देवी शर्करा समर्पयामि - शक्कर चढ़ाएं।
श्री दुर्गा देवी पंचामृत समर्पयामि - पंचामृत चढ़ाएं।
श्री दुर्गा देवी गंधोदक समर्पयामि - गंध चढाएं।
श्री दुर्गा देवी शुद्धोदक स्नानम समर्पयामि - जल चढ़ाएं।
आचमन के लिए जल लें,
श्री दुर्गा देवी वस्त्रम समर्पयामि - वस्त्र, उपवस्त्र चढ़ाएं।
श्री दुर्गा देवी सौभाग्य सूत्रम् समर्पयामि-सौभाग्य-सूत्र चढाएं।
श्री दुर्गा-देव्यै पुष्पमालाम समर्पयामि-फूल, फूलमाला, बिल्व पत्र, दुर्वा चढ़ाएं।
श्री दुर्गा-देव्यै नैवेद्यम निवेदयामि-इसके बाद हाथ धोकर भगवती को भोग लगाएं।
श्री दुर्गा देव्यै फलम समर्पयामि- फल चढ़ाएं।
तांबुल (सुपारी, लौंग, इलायची) चढ़ाएं- श्री दुर्गा-देव्यै ताम्बूलं समर्पयामि।
मां दुर्गा देवी की आरती करें।
यही देवी पूजा की संक्षिप्त विधि है।

समाज को समृद्ध बनाने के उपाय

नागर ब्राह्मण समाज में बहुत सारे संगठन देश एवं प्रदेश स्तर पर सक्रिय है, परन्तु ये संगठन समाज को समृद्ध या उन्नत बनाने के प्रयासों से कहीं दूर ही दिखते हैं।

कार्यकारिणी की बैठक करना, बोलवचन झाड़ना एवं भोजन कर अपने-अपने घर चले जाने से समाज में आमूलचूल परिवर्तन की अवधारणा को मूर्तरुप नहीं मिल पाएगा। वास्तव में यदि समाज को समृद्ध बनाना है तो अन्य समाजों में चल रही गतिविधियों को आत्मसात करना ही पड़ेगा। हमारे आसपास ही विभिन्न समाज है जो अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं।

हमारे समाज में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा के विशेष प्रबंध एवं शहरी युवाओं को स्वरोजगारोन्मुख बनाने की पहली आवश्यकता है। गाँव के होनहार बच्चों को शहरों में लाकर उनकी शिक्षा के प्रबंध कर उन्हें स्वावलंबी बनाना पड़ेगा। साथ ही विवाह, यज्ञोपवीत संस्कार के आयोजन सामूहिक होकर उसमें सभी आयवर्ग के समाजजन हिस्सा लें।

पाटीदार समाज से सीखें करोड़पति व्यक्ति भी सामूहिक विवाह में अपने बच्चों का विवाह करना गौरव का विषय मानता है, वे फिजुलखर्ची को रोककर उससे धर्मशालाएँ बनवाते हैं, छात्रावास बनाते हैं उन छात्रावासों में गांव के लड़के-लड़की

आकर रहते हैं तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा प्राप्त करते हैं। बोहरा समाज में पिछड़े बंधुओं को बगैर ब्याज का ऋण मिलता है, वे व्यवसाय में एक-दूसरे की मदद करते हैं।

महाराष्ट्रीयन तो 'आपला माणुस' के लिए प्रसिद्ध है वे अपने जातिबंधु को ही आगे बढ़ाते हैं। हमारे समाज में आज भी महंगे विवाहों एवं भव्य मृत्युभोज लेण प्रथा में बड़ी राशि अपव्यय की जा रही है। यहाँ समाज की उन्नति से ज्यादा चिंता लेण में दिए जाने वाले बर्तन का आकार बढ़ाने में है। प्रतिस्पर्धा है कि उसने बाल्टी यदि लेण में दी है तो मैं कोठी दूंगा। समाज को यदि उन्नत और समृद्ध बनाना है तो गाँवों में पिछड़ रहे बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए। प्रत्येक शहर में आज ऐसे कई परिवार मिल जाएँगे जहाँ केवल अधेड़ दम्पत्ति रह गए हैं लड़कियों की शादी कर दी और लड़के नौकरी के सिलसिले में बाहर चले गए हैं।

यह किस तरह की उन्नति है, ये युवा तो परिवार और समाज से कट गए हैं ये स्वरोजगार से क्यों नहीं जुड़ते और समाज इस में उनकी मदद क्यों नहीं करता। समाज के संगठन इस दिशा में पहल क्यों नहीं करते? आज समाज में ऐसे कदम कठोरता से उठाने की जरूरत है कि आयोजनों में फिजुलखर्ची रुके और उस राशि को होनहार बच्चों की शिक्षा एवं रोजगार में लगाया जाए। कोई भी संगठन अपनी उपलब्धि यह नहीं माने कि उसने इतने सदस्य बना लिए हैं, पहले की कार्यकारिणी द्वारा दी गई जमापूंजी में और वृद्धि कर दी है। उसे समाज को समुन्नत बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए और पूरी ताकत से करना चाहिए। समाजजन भी उसी को समर्थन दे जो उन्नति की बात करें।

-सम्पादक

चैत्र नवरात्र में नहीं कर सकें कोई पाठ तो बस यह मंत्र पढ़ें....

चैत्र नवरात्रि में आप विधि-विधान से पूजन या पाठ न कर सकें तो अष्टमी या नवमी के दिन मात्र दुर्गासप्तशती का पाठ करें। दिन भर की अखंड ज्योति प्रज्वलित करें। जो व्यक्ति दुर्गा सप्तशती का पाठ करने में भी असमर्थ हों वे सिद्ध कुंजिका स्त्रोत का पाठ करें।

इस पाठ को करने से पूर्व अर्गला स्त्रोत एवं दुर्गा कवच पढ़ें। अगर आप इनमें से कोई

भी पाठ न कर सकें तो सबसे सरल और दिव्य मंत्र को शांत चित्त होकर पढ़ें इससे घर में सदा सुख-शांति का वातावरण रहता है।

सर्वमंगल मांगल्यै
शिवे सर्वार्थसाधिके
शरण्यै त्र्यंबके गौरी
नारायणी नमोक्स्तुते॥

यारों की रंजिशें भी निभा रहे हैं हम...

'यारों से यारी तो निभाते हैं, परन्तु उनकी रंजिशें भी खूब निभा रहे हैं हम' जय हाटकेश वाणी की सितम्बर 2015 अंक की विचारवाणी में प्रकाशित विषय 'आदर्श परम्परा की राजधानी के बारे में मैं भी अपनी आँखिन देखी प्रकट करना चाहूँगा।

समाज सेवा से जुड़े पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के मतभेद एवं मनभेद के दुष्परिणाम केवल दो व्यक्तियों के बीच सीमित नहीं रह रहे हैं, वे एक बड़े दल या समूह तक अपना प्रभाव छोड़ रहे हैं। मैंने देखा है कि समाज के किसी पदाधिकारी के किसी अन्य महानुभाव से मतभेद के पश्चात् रंजिश हो गई है तो उसके जितने भी साथी या मित्र है वे भी उस व्यक्ति के स्थायी दुश्मन बन गए हैं, बिना काम से उनका कोई लेना-देना ही नहीं है, उन्हें पता भी नहीं कि इन दो व्यक्तियों का विवाद या रंजिश का कारण क्या रहा, वे तो देखते हैं कि अपना दोस्त इसका विरोधी है तो वे भी विरोधी बन जाते हैं, यह बड़ी अजीब स्थिति है। समाज के दो पदाधिकारियों या समाजसेवकों के बीच किसी भी कारण से विवाद हो सकता है, परन्तु यह विवाद यदि स्थायी तथा सामाजिक मंच से बाहर आकर स्थायी रंजिश का रूप ले ले तो यह बहुत दुर्भाग्य पूर्ण है, यह तो समाज की उन्नति में बाधक तत्व है।

सबसे खास बात है कि कई बार लंबी रंजिशें निभाने वाले ये तथाकथित समाजसेवक लंबी अवधि के बाद रंजिश का कारण भी भूल जाते हैं, लेकिन रंजिश फिर भी निभाते रहते हैं, इनके इष्ट मित्र इनसे दो कदम आगे ही रहते हैं, उन्हें भी पता नहीं है कि फलां व्यक्ति और अपने दोस्त के बीच किस बात का झगड़ा है, पर वे अपने दोस्त के इतने बड़े वफादार है कि उसकी रंजिशे भी अपनी समझकर उन्हें निभाते रहते हैं, किसी दिन पूछ लो उनसे कि क्यों भाई तुमको उस व्यक्ति से किस बात की नफरत है उसको देख कर तुम क्यों गुर्राने लगाते हो या एकदम काले पड़ जाते हो, तो सच कहता हूँ कि वे नहीं बता पाएंगे क्या कारण है। इसीलिए आजकल समाजसेवा के नाम से लोग घबराने लगे हैं। कब्बी काटने लगे हैं, क्योंकि यहां बिना बात के दुश्मनी हो जाती है और वह भी रिटेल में नहीं होती, होलसेल में हो जाती है। उस व्यक्ति से जितने भी इष्टमित्र, रिश्तेदार जुड़े हैं वे प्रतिद्वंदी के दुश्मन बन जाते हैं। उसके विरोधी हो जाते हैं। यारी निभाने में ये भले ही एक बार चूक जाए, परन्तु अपने यारों की रंजिशों को बड़ी शिद्दत से निभाते हैं।

-योगेश शर्मा, खजराना

भैया अपना मानूंगी...

कृष्ण कन्हैया आज तुम्हारे हाथ में राखी बाधूंगी।
भाव भक्ति के सिवा कन्हैया, तुमसे कुछ नहीं मांगूंगी।।
राखी के इस तार-तार में, प्यार छिपा है बहिनों का।
सौगंध है तुम्हें मेरी कन्हैया, कहना मानो बहिनो का।।
मुझको अपनी बहिन बना लो, भैया अपना मानूंगी।
भाव भक्ति के सिवा कन्हैया, तुमसे कुछ नहीं मांगूंगी। कृष्ण...
बहिन द्रोपदी जैसा भैया, अपना प्यार मुझे देना।
आशा लेकर आई भैया मुझको सदा निभा लेना।
आज से तुमको सुनो कन्हैया, भैया अपना मानूंगी।
भाव भक्ति के सिवा कन्हैया, तुमसे कुछ नहीं मांगूंगी। कृष्ण..
हाथ बढ़ाओ आगे भैया, इस राखी को बंधवा लो।
आशीर्वाद मुझे दो भैया, अब तो मुझको अपना लो।।
बहिन सुभद्रा जैसी बनकर, तुमसे प्रीत निभाऊँगी।
भाव भक्ति के सिवा कन्हैया, तुमसे कुछ नहीं मांगूंगी।। कृष्ण..
मधुर मिलन की इस बेला में, ये राखी स्वीकार करो।
चरण कमल में बहिन खड़ी है, सिर पे दया का हाथ धरो।।
बिना बंधाये राखी भैया, आज नहीं जाने दूंगी।
भाव भक्ति के सिवा कन्हैया, तुमसे कुछ नहीं मांगूंगी। कृष्ण..
नागर देखो श्याम ने सबसे, कैसी प्रीत निभाई है।
हाथ बढ़ाकर बहिन से देखो, राखी आज बंधाई है।।
तन-मन-धन ओर प्राण भी भैया, तुमपे आज लूटा दूंगी।
भाव भक्ति के सिवा कन्हैया, तुमसे कुछ नहीं मांगूंगी।।

-सुमनलता नागर
मोहन बड़ोदिया

विसंगति...
आदर्श परम्परा की

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व.लाल बहादुर शास्त्री के अनुसार कोई भी समाज विकास करते हुए अपने लक्ष्यों तक तभी पहुँच सकता है जब कि वह एकजुट रहे। बिखरा हुआ या गुटों में बंटा हुआ समाज कभी भी विकास नहीं कर सकता। वस्तुतः एक अच्छा समाज वह नहीं जिसके अधिकांश सदस्य अच्छे हो वरन जो अपने बुरे (दिशाहीन) सदस्यों को अच्छा बनाने (सही दिशा में लाने) हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता हो।

बिल ड्रारांट के अनुसार- सभ्यता, सुव्यवस्था के साथ जन्मती है। स्वतंत्रता के साथ फलती है, किन्तु अव्यवस्था होते ही नष्ट हो जाती है।

सामाजिक स्तर पर कार्यक्रम समाज सेवी लोगों को समाज में सभ्यता को बनाये रखना है तो उन्हें भी सुव्यवस्था को महत्व देना चाहिये। इन लोगों को कभी भी प्रतिस्पर्धा जैसी मानसिकता नहीं लाना चाहिए, क्योंकि ऐसा होने पर वे दूसरों के द्वारा की जा रही कोशिशों को नाकाम करने का प्रयास करने लगते हैं और उनमें एक अस्वस्थ-प्रतिस्पर्धा पैदा हो जाती है। गुटबाजी में फंसकर वे अपने मूल लक्ष्य (सेवा कार्य) से भटक जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप समाज का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

निःसंदेह यह अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा वे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु ही करते हैं किन्तु वे भूल जाते हैं कि एक महान व्यक्ति और एक प्रतिष्ठित व्यक्ति में यही अंतर होता है कि महान व्यक्ति सदैव समाज की सेवा में तत्पर बना रहना चाहता है। आचार्य विनोबा भावे व मदर टेरेसा उदाहरणार्थ है।

समाज के विकास के कार्य तो जमीन पर दिखाई देने चाहिए ना कि केवल शब्दों में। चैन्नई के सामाजिक कार्यकर्ता रामास्वामी कहते हैं कि अगर-मगर से डगर नहीं मिलती इसे पाने का एकमात्र रास्ता है एकजुट रहकर संकल्पित होकर कार्य में लगे रहना।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक अलेक्जेंडर ग्राह्म बेल ने भी एकजुटता के बारे में कहा कि सूर्य की असंख्य किरणों से तब तक अग्नि प्रज्ज्वलित नहीं होती जब तक कि वे एक बिन्दु पर आकर (कनवर्ट होकर) नहीं मिल जाती। समाज कार्य में रत् लोगों को तो वर्ष की ऋतुओं की तरह सदैव परिवर्तनशील सदैव अनुकुलनशील व सदैव विकासशील होना चाहिये। समाज के विकास की राह में कोई समस्या आती है तो उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक ताले का निर्माण उसकी कुंजी के बिना नहीं होता। इसी तरह प्रत्येक समस्या का एक निदान भी अवश्य होता है, और उन सबको मिलकर इस निदान की खोज करना चाहिए। मेरीन विलियनसन् लिखते हैं कि अहम् और अंतरात्मा में यही अंतर है कि अहम् शांति के पहले व्यवस्था चाहता है जबकि अंतरात्मा पहले शांति चाहती है व बाद में व्यवस्था।

प्रत्येक समाज में कुछ न कुछ बुराई तो अवश्य विद्यमान रहती है। समाजसेवी कार्यकर्ताओं को इस बुराई में पहले कुछ अच्छाई खोजना चाहिये जो एक जटिल कार्य है, किन्तु कहते हैं कि संसार में घटित होने वाली प्रत्येक घटना जैसे युद्ध, प्राकृतिक आपदा, महामारी... आदि में भी कोई साधारण सा व्यक्ति कुछ असाधारण करता हुआ मिल ही जाता है।

समाज के विकास की प्रक्रिया में कभी-कभी जोखिम भी उठाना पड़ जाता है। विकास की राह में आई इस जोखिम को उठाएं। इसमें यदि आप को जीत हांसिल हो जाती है तो आपकी प्रसन्नता अति आनंददायी होगी, यदि नहीं तो आपको अनुभव या समझदारी का लाभ तो अवश्य मिलेगा ही।

मुंशी प्रेमचंद कहते हैं सौभाग्य उन्हीं को मिलता है जो अपने कर्त्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं। आपस में लड़ने से अधिक महत्वपूर्ण है अपने अंदर के अहम से लड़कर ऊपर उठना। समाज सेवा में रत लोगों को चाहिये कि यदि वे समाज को वास्तव में संवारना चाहते हैं तो उसे केवल प्रेम के रंग में संवारे। आपस में तर्क करने से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सकता। बुद्धिमान तो आपस में विचार-विमर्श ही करते हैं। अतः बोलने से पहले सोचें कि क्या यह बोलना उचित है? क्या यह आवश्यक है? क्या यह सत्य है? और क्या यह बोलना मौन रहने से बेहतर है?

सत्य को सदैव इन तीन कसौटियों से गुजरना पड़ता है। पहले तो उसका उपहास होता है, फिर उसका घोर विरोध व अंत में उसे स्व-प्रमाण के आधार पर ही स्वीकार किया जाता है।

विचार-विमर्श के दौरान क्रोध न करें, धैर्य रखें, धैर्य कड़वा अवश्य होता है किन्तु उसका फल सदैव मीठा होता है। ऐसा करने से आप विनम्र तो बनेंगे ही और देखेंगे कि अभिमान आपके सामने सर झुकाए खड़ा होगा और अब अंत में-

तन समर्पित, मन समर्पित,
धन समर्पित

सोचता हूँ- मातृभूमि- तुझे कुछ और दूं, ओर दूं।।

-मोरेश्वर मंडलोई
खंडवा (म.प्र.)

परिजन यदि मित्रवत रहे, तो कई समस्याओं का समाधान

बदलती दुनिया समय, युग, विकास, विज्ञान विस्तार ऋतु, देशों की नजदीकियों में निकटता बढ़ने के साथ सभी ओर व दिशाओं में परिवर्तन की दौड़ को नकारा नहीं जा सकता। प्राकृतिक नियमन के अनुसार परिवर्तन तो शनैःशनैः होता ही रहता है। इस बदलाव के क्रम में व्यवहार, समाज, सम्बन्ध परिवार और मानव पर क्या प्रभाव हो एगा इसका अनुमान करना कठिन ही है।

जीवन काल में परिवार, रहन-सहन, परम्परा, कार्य-सहकार, जिम्मेदारियां, रिश्ते, मान्यताएं, सामाजिक सरोकार, उपार्जन आदि वालों का मानव-विचारण पर प्रभाव पड़ता है एवं इस क्रम में स्वयं के कार्य के प्रति मानसिकता उत्पन्न हो घर कर जाती है। तत् समय-चक्र की परिवेशी परिस्थितियों का आंकलन भी सहयोगी बन जाता है। ये जीने की प्रवृत्ति हो जाती है। मानसिकता व प्रवृत्ति परस्पर पूरक है। देखें तो मानसिकता के परे कोई निर्णय नहीं हो पाता।

इक्कीसवी सदी परिवर्तनशील युग में जहाँ हम सभी ओर परिवार, समाज, व्यवहार, जीवन शैली, प्रशासन व देश में नवीन बदलाव को महसूस कर रहे हैं। पीढ़ियों के अंतर के विग्रह भी दृष्टव्य है। मानसिकता के बदलाव के प्रति हम अपनों को ही परस्पर गहन ठोस विचार-मंथन करना अवश्यंभावी है। परिवार में बुजुर्ग व युवा वर्ग बड़े-छोटे के अंतर के परे मैत्रेयी-मित्र स्वरूप शांत बैठकर अंतर-परिवर्तन के प्रति प्रत्येक दशा पर सोच-विचार कर गुणात्मक पहलुओं पर एकमत हो जीवन-शैली तय कर लेवें तो मतभेद का शमन होकर परिवार के सुखी जीवन की राह प्रशस्त होगी। परिजनों के मित्रता-स्वरूप की विजय महसूस करेंगे। मानसिकता बदलाव की दिशा में समुचित कदम होगा।

पुरानी पीढ़ी के आचार-विचार सामाजिक सरोकार आचरण व व्यवहार अधिक अच्छे व अनुकरणीय थे। सभी परिवारों में आत्मियता के साथ सुख-दुख व समागम एकजुट हो सहयोगात्मक स्वरूप बिना किसी दिखावे के दृष्टव्य होता। वर्तमान में महिला शिक्षा व जागरण के दौर में पुरुष व महिला समानता हर क्षेत्र में विकसित हो रही है। यही सोच परिवार में बेटी व बेटे के प्रति परिजनों में मानसिक बदलाव के साथ होना, युग परिवर्तन का संकेत है।

पारिवारिक रिश्तों के अनुसार छोटे व बड़े तथा आदर सम्मान का ताना-बाना होता है, वहीं पर अंशतः गौरव की बात भी आ जाती है। परिवार हंसी-खुशी स्नेही हो तो परिजनों में मित्रता व मैत्रेयी भावना का स्वरूप विद्यमान होना आवश्यक है। माँ-बेटी-बेटा का रिश्ता आत्मीयता व स्नेह का श्रेष्ठ उदाहरण है। विवाह उपरांत सुशासन में सास-बहु का सम्बन्ध जुड़ता है। बड़प्पन की भावना आ जाना स्वाभाविक है। सास भी कहीं न कहीं माँ की बेटी ही होगी। यदि अधिकार के तथ्य का रिश्तों के अनुसार जो भी स्थिति हो यदि सोच को सास स्वतः माँ-बेटी के स्वरूप में मित्रता के गुणों के साथ व्यवहार में देवें (सास-माँ व बहू-बेटी)। मित्रता में निकटता स्पष्टता, समन्वय अधिक होता है। इस तरह पति-पत्नी में भी मित्रता का पुट हो। मित्र से मन की बात अधिक होती है। तो परस्पर समन्वय समझ से परिवार में टकराव शून्य हो खुशियों की उज्ज्वलता का प्रकाश सदैव फैला रह सकता है। इस प्रकार से परिवारों में सोच-विचार बढ़ता जाए तो समाज में बेटी-बेटो का दर्जा समानता की दिशा में आगे बढ़ता जाएगा।

मानसिकता बदलना है उस दिशा में आगे आना है तो समाज में परिवारों व परिजनों को सोच-विचारकर गुणात्मकता के साथ परिवर्तन समझना होगा। व्यक्तित्व समाज का साधिकार सोच मानसिक प्रवृत्ति को बदल सकता है। अन्यथा अंतर व अलगाव बना रहेगा।

-पी.आर जोशी
528, उषा नगर एक्स. इन्दौर

संता (अपनी प्रेमिका से)- अगर तुम्हारे पिता ने हमारी शादी नहीं होने दी तो मैं जहर खा लूंगा और फिर भूत बनकर उनको डराया करूंगा।
प्रेमिकाः कोई फायदा नहीं मेरे पिता भूत-प्रेतों पर विश्वास नहीं करते।

जहाँ तृष्णा-वहाँ नहीं कृष्णा

इस संसार में जो भी जन्म लेता है उसे सुख तथा दुख दोनों का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक मनुष्य दुखी जीवन से बचना चाहता है और जीवन भर सुख शांति का जीवन जीने के लिये ईश्वर से कामना/प्रार्थना करता रहता है। मनुष्य जीवन में सुख-दुख का आना-जाना एक स्वाभाविक क्रिया है, सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख क्रमशः जीवन में आते हैं। सुख तथा दुख एक ही सिक्के के दो पहलू है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता (12/17) में कहा है जो सभी प्रकार के सुख-दुख में सफलता और असफलता में सम रहता है वह मुझे प्रिय है-

यो न ह्रष्यति न द्वेष्टि
न शोचति न काङ्.क्षति।
शुभाशुभ परित्यागी
भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।

महाकवि गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी कहा है-

तुलसी इस संसार में, सुख-दुख दोनों होय। ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।।

यह आवश्यक है कि सुख में न तो घमण्ड करें और दुख में विचलित न होकर धैर्य के साथ सामना करें। प्रायः यह दृष्टिगत होता है कि मनुष्य सुख की लालसा में पथभृष्ट होकर दुख को स्वतः ही आमंत्रित कर लेता है। आज के इस भौतिकवादी युग में मनुष्य धन अर्थात् माया को ही सर्वश्रेष्ठ सुख मानता है। उसे अर्थ प्राप्ती के साधनों में अनर्थ मार्ग दृष्टिगत नहीं होता है। उक्त कथन का तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य को धन नहीं कमाना चाहिए, परन्तु धन के पीछे पागल हो जाना वस्तुतः दुखों के द्वारा खोलना है। अपने सामर्थ्य, योग्यता, पुरुषार्थ एवं ईमानदारी से अर्जित धन जहां सुख शान्ति प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर लोभ-लालच, अनितीपूर्ण तथा बेइमानी से अर्जित धन तृष्णा को जन्म देता है तथा तृष्णा का कभी अन्त नहीं होता है।

कहा गया है- 'तृष्णा न जीर्णा' अर्थात् तृष्णा कभी बूढ़ी नहीं होती। यह सदा तरोताजा और जवान बनी रहती है। बचपन में खिलौने से आरम्भ हुई मानवमन की यात्रा अर्थी तक पहुँच जाती है, मुख पर झुर्रियाँ पड़ जाती है, सिर के बार सफेद हो जाते हैं, अंग-प्रत्यंग ढीला हो जाता है, किन्तु तृष्णा फिर भी तरुण ही रहती है 'तृष्णैका तरूणायते'। धन का लोभ मनुष्य को अनैतिक कार्य करने की ओर अभिमुख करता है। वह कम से कम समय में अधिक से अधिक धन प्राप्त करना चाहता है। उसकी त्वरित उर्ध्वगामी होने की अभिलाषा उसे अधोगामी होने के लिये मजबूर कर देती है। कहा गया है कि धन जीवन के लिये कमाओ न कि जीवन धन एकत्र करने में गवा दो।

यह सार्वभौम सत्य है कि मनुष्य को अपने परिवार के लिये (जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु) धन कमाना आवश्यक है, परन्तु धन संग्रह की तृष्णा में उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि अपनी एवं परिजनों की सुख शान्ति न होने पाए। स्वामी विवेकानंदजी का कथन है- 'इस दुनिया में सबके लिये बहतु कुछ उपलब्ध है पर लोभी के लिये पूरी दुनिया का साम्राज्य भी नाकाफी है।' भगवान महावीर ने कहा है- तृष्णा से ही शोक उपजता है तृष्णा से ही भय का जन्म होता है। यदि आदमी तृष्णा से मुक्त हो जाय तो न शोक रहेगा और न भय ही। आज सब जगह भ्रष्टाचार का जो दावानल धधक रहा है उसका मुख्य कारण मानव की तृष्णा ही है। हमारे धर्म शास्त्रों में धन की तीन गतियाँ दर्शाई गयी है- पहली- दान, दूसरी- भोग तथा तीसरी - नाश। इसमें दान सर्वश्रेष्ठ गति है तथा बुद्धिमत्ता से उपभोग न करने पर उसको विलुप्त होने में देर नहीं लगती।

दानेनतुल्यो निधिरस्ति नान्यो, लोभाच्य नान्योअस्ति रिपुः पृथिव्याम्।
विभूषणं शीलसमं न चान्यत्, संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत्।।

दान के बराबर कोई दूसरा खजाना नहीं है, लोभ के बराबर पृथ्वी पर दूसरा कोई शत्रु नहीं है, विनम्रता के समान कोई दूसरा आभूषण नहीं है और संतोष के बराबर कोई धन नहीं है।

महाभारत में कहा गया है कि मनुष्य धन का दास है, परन्तु धन किसी का दास नहीं।

'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' (कठोपनिषद) अर्थात् मनुष्य की तृप्ति धन से नहीं होती वह अधिक धन संग्रह में अपनी सुख शान्ति नष्ट कर देता है। अधिक धन को विष एवं मद भी कहा गया है। 'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय'। इसलिये यह आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति को मितव्ययी बन, अपनी आवश्यकताएं पर अंकुश रखना चाहिये। जैसे- हाथी के बाहर निकले हुए दांत फिर अन्दर नहीं जाते हैं वैसे ही एक बार बढ़ी हुई आवश्यकताओं कम नहीं हो

पाती। सामान्य व्यक्ति की धन लालसा उसकी अल्प बुद्धि का परिणाम है, परन्तु आश्चर्य तब अधिक होता है जब समाज को आध्यात्मिक ज्ञान एवं मार्ग दर्शन देने वाले तथाकथित साधु संन्यासी (जैसे आशाराम बापू, रामपाल, राधेमाँ इत्यादि) भी धन एश्वर्य की तृष्णा में भोले भाले व्यक्तियों का शोषण करने से बाज नहीं आते। अपनी लोक लुभावनी भाव भंगीमा प्रदर्शित कर लोगों से धन ऐंठते हैं। कृष्णा के उपदेश/प्रवचन में मूल रूप में धन की तृष्णा छुपी होती है।

अंधेरी रात में जो जन्मां जेल में,
वो बना जगत का कल्याणकारी।
उजियारे में जो ढोंगी ज्ञान बांटे,
उसे मिले जेल की चारदिवारी।

संत मनीषियों का कहना है कि तृष्णा से विमुक्त होने का सहज एवं सरल उपाय है- ईशभक्ति के साथ साक्षी भाव का विकास। मानव जीवन में सुख, समृद्धि, शान्ति की प्राप्ति ही सही अर्थों में कृष्णा की प्राप्ति है। 'कृष्ण' शब्द धातु से बना हैं जिसका अर्थ है- खुरचन, क्योंकि वह अपने भक्तों के समस्त पापों/बुराईयों को खुरच देता है, दूर कर देता है इसलिये 'कृष्ण' कहलाता है। मनुष्य के हृदय में जब कृष्ण का जन्म होता है तब उसकी आँखों से परदा हट जाता है। (ज्ञानोदय) तथा कारागार (मन) के द्वार खुल जाते हैं। अध्यात्म का मार्ग संतोष के मार्ग की ओर ले जाता है। इसलिये कृष्णभक्तों ने सूत्र दिया है 'जब नाम जपोगे कृष्णा तो मिटेगी मन की तृष्णा'। संत कबीर ने भी कहा है-

मन लागो मेरो यारा फकीरी में,
जो सुख पाऊँ राम भजन में, वो सुख
नाहि अमीरी में।

-प्रो.राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40, चन्द्रनगर,
एम.आर.9, इन्दौर

समाज की बैठक में अहंकार को साथ न ले जाएं

परम्परा एवं मानसिकता की चर्चाएँ हो रही है, होएगी भी, लेकिन समाज के दृष्टिकोण से इससे भी आगे सोचने की आवश्यकता है। सीख ली जा सकती है। जीवन में शिक्षण के उपरांत भी संस्कार, समय, घटनाएं, संयोग, महापुरुषों के जीवन-चरित्र, साहित्य, मित्रों, अनुभव, आसपास व देश में हो रही हलचलों आदि से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। मानव को सीखने के लिये समय का कोई अंत नहीं है। इन सब के उपरांत मन-मस्तिष्क में विचार-मंथन के साथ जीवन में व्यवहारिक एवं समाज की समस्याओं के प्रति अच्छाई बुराई, सहमति, मतएक्यता विरोध असमर्थता, सहमत न होना आदि की उहा-पोह चलती रहती है।

व्यक्ति के जीवन में परिवार एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व के वैचारिक पहलू होते हैं। समाज के प्रति चिंतन से सेवा धर्म के दृष्टिकोण से प्रेरित योगदान हेतु सामाजिक कार्यकर्ता की सक्रियता अपनाते हैं। तो जीवन यापन में आपकी दोहरे अभिनय की भूमिका स्वयमेव उपस्थित हो जाती है। इस दोहरी भूमिका की कार्यशैली में महीन अंतर होना जरुरी होना चाहिए। इस बात का ध्यान रखते संगठन में कार्य-सम्पादन किया तो आपका व्यक्तित्व उभर जाएगा। प्रायः यह देखा गया है कि सामाजिक संगठनों में कार्यरत सामाजिक जनों में वैचारिक मतभेद के साथ आकांक्षा गौरव व अहंकार फलस्वरूप समस्याओं के प्रति समर्थन विरोधाभास चलते गुटबाजी में बट जाना स्वाभाविक हो जाता है। इससे समाज की क्षति ही होती है।

नाटकीय रंगमंच में कलाकारों की भूमिका एवं उसके पश्चात् उनका मित्रतापूर्ण व्यवहार काफी सटीक है। ऐसी भावना सामाजिक संगठनों में कार्यरत समाजजनों की होनी चाहिए। संगठन की बैठक में समाज के विकास अथवा समस्याओं के प्रति जो भी विचार, मतभेद या उनकी नियमन सार्थकता या विरोध पर बहस बैठक में ही हो निर्मित होए। उसका बाहर आना अनुचित होगा। बैठक की जाजम से उठकर बाहर आकर कार्यकर्ताओं में मित्रता, प्रेम, समन्वय हो पारिवारिक सम्बन्ध सुप्रिय बने रहे बैठक की वैचारिकता का कोई प्रभाव न होए।

आपने राजधानी शीर्षक में जो दृष्टांत दिया है वह समुचित है। नागर समाज संगठक कार्यकर्ता इस दिशा में कदम बढ़ाये तो समाज का विचारोदय होगा। लेकिन राह आसान नहीं है, लेकिन सक्रियता के लिये विचारणीय है। समाज का विकासोन्मुखी दृष्टि से ऐसी मानसिकता से बाहर आना होगा।

-पी.आर. जोशी, इन्दौर

गतांक से आगे...

मानस के चिंतनीय प्रसंग..

नीच व्यक्ति के साथ विनम्रता का कोई औचित्य नहीं

सुन्दरकाण्ड से... प्रसंग अष्टम

जो सम्पति सिव रावनहि,
दीन्हि दिये दस माथ।
सो सम्पदा विभीषनहि,
सकुचि दीन्हि रघुनाथ।।

उक्त दोहे के अंतिम चौथे चरण पर पाठक सोचते हैं जिस विशाल ऐश्वर्य को रावण ने अपने दसों मस्तकों व भगवान शंकर को अर्पण करने पर शंकरजी ने रावण को दिया था। उसी अतुलनीय सम्पदा को श्रीराम ने विभीषण को सकुचा कर क्यों दी? समाधान स्पष्ट है कि श्रीराम जानते थे कि रावण का सपरिवार मारा जाना सुनिश्चित है। तब मुझे या लक्ष्मणादि को तो यहाँ लंका में राज करने आना नहीं है। ऐसी स्थिति में रावण के बाद इस लंका का राज्य तो विभीषण को यूँ भी मिलना ही है। तब इसे मैं दे क्या रहा हूँ। श्री राम को बस इसी बात का संकोच था।

प्रसंग नवम ..... बाबा तुलसी ने सुन्दर काण्ड में श्री राम के माध्यम से नीति सम्बंधी कतिपय अत्यंत महत्वपूर्ण बातें कहीं तथा तीन दिन समुद्र तट पर बैठकर प्रार्थना करने पर भी समुद्र ने मार्ग नहीं दिया तो मर्यादा पुरुषोत्तम क्रोधित होकर बोले, जो दोहा क्र. 57 एवं 58 में प्रगट होता है।

यथा-

विनय न मानत जलधि जड़,
गए तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब,
भय बिनु होइ न प्रीति।।
कारेहि पइ कदरी फरइ,
कोटि जतन कोउ सींचि।
विनय न मान लगेस सुनु,
डाटेहि ते नव नीच।।

अर्थात् नीति कहती है कि भय के बिना प्रीति नहीं होती। नीच व्यक्ति के साथ विनम्रता का कोई औचित्य नहीं है। वह तो डांटने अथवा प्रताड़ित करने पर ही नमता है। आदि इसके अतिरिक्त कतिपय चौपाइयों के माध्यम से भी नीति सम्बंधी बातें कहीं गई है।

लंकाकाण्ड से.... दशम प्रसंग-

जो मम चरन सकहि सठ टारी, फिर हि राम-सीता, मैं हारी।

उक्त चौपाई का सामान्यतः पाठक अर्थ करते हैं कि यदि तूने (रावण ने) मेरे चरण को उठा दिया तो मैं कहता हूँ कि श्रीराम अयोध्या लौट जावेंगे और मैं सीता को हार

जाऊँगा। अर्थात् श्रीराम बिना युद्ध किये ही लौट जाएंगे। जबकि यह अर्थ मानस रचनाकार के प्रति न्याय नहीं करता। लंका दूत को अपने स्वामी की पत्नी को जुए की तरह दाव पर लगाने का अधिकार क्या है? वास्तव में चौपाई का अर्थ यह होना चाहिए ये कि यदि तूने मेरे चरण को हटा दिया तो श्रीराम तो तुझसे युद्ध करके विजय प्राप्त कर सीता सहित अयोध्या लौट जावेंगे। (फिर हिं राम-सीता) लेकिन मैं अपनी हार आज ही मानकर युद्ध नहीं करुंगा (मैं हारी) द्वितीय चरण में फिरहिं राम सीता का अर्थ एक साथ करके तथा मैं हारी का अर्थ पृथक से करना चाहिए।

प्रसंग- एकादश- इसी प्रकार पाठक शंका करते हैं कि जब पवन-पुत्र को 'ज्ञानि नामग्र गण्यम', सकल गुण निधानम, तथा बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना की उपाधी से विभूषित किया जाता है। तब सुषेण वैद्य द्वारा संजीवनी बूटी (औषधि) की पहिचान बतला देने के बाद भी पवन-पुत्र पूरा का पूरा पहाड़ ही क्यों उठा लाये? मानस टीकाकारक कहते हैं कि हनुमान औषधि (संजीवनी) की पहिचान न कर सके, जबकि वास्तविकता यह है कि चौपाई को गौर से पढ़ने पर अर्थ स्पष्ट हो जाता है कि 'देखा शैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा।। वास्तव में न औषध चीन्हा का अर्थ औषधि का चयन न कर सके ऐसा नहीं है। अपितु न चीन्हा का अर्थ चयन ही नहीं किया, से है। अर्थात् कौनसी औषधि ले जाना है। यह सोचा ही नहीं। बल्कि हनुमान अचानक पूरा पहाड़ ही उठाकर चल दिये।

यह कैसे हो सकता है कि हनुमान जैसा विवेकशील तथा विज्ञान के निधान (बड़ा भारी वैज्ञानिक) औषधि की पहिचान ही भूल जाते अथवा समझ में न आवे। वास्तविकता तो यह है कि हनुमान जी अग्र सोची दूरदर्शी देव है। औषध चयन करते समय उन्होंने सोचा पता नहीं युद्ध कितने दिन और चलेगा और इन दिनों कब किसको किस औषधि की आवश्यकता पड़ जाये? बार-बार यहाँ से कब किस वीर के लिये कौनसी औषधि ले जाना पड़े। यह गिरि तो विभिन्न औषधियों का भण्डार है। अतः पूरा का पूरा पहाड़ ही उठा ले चलता हूँ और रामादल के पास स्थापित कर दूंगा। ताकि जब जिस-जिस औषधि की आवश्यकता हो तुरंत प्रस्तुत कर दूँ। इसी कारण मारुत सुत ने पूरा का पूरा पहाड़ ही उठा लिया।

प्रसंग द्वादश- राम विमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कोई रोवन हारा।।

राम से विरोध का परिणाम तो स्पष्ट है कि वंश में कोई नाम लेने वाला नहीं बचा। लेकिन जिस क्रम से बंधुओं तथा पुत्रों को रावण ने मरवाया वह चिंतनीय है। शुर्पणखा ने जब नाक कटने की बात खरदूषण को बताई तो वे सेना लेकर चल पड़े। राम ने दोनों का वध कर दिया। यहाँ विचारणीय यह है कि इन दोनों को रावण ने नहीं भेजा था। अपितु शुर्पणखा की शिकायत पर दोनों स्वेच्छा से चले गये थे और अंततः उनका वध हुआ। खरदूषण वध के समाचार सुनकर शूर्पणखा ने रावण को देखकर जब राम-लक्ष्मण से प्रतिशोध के लिये उत्तेजित किया तब रावण ने आश्चर्य से मन ही मन विचार किया कि 'खरदूषण सम सम बलवंता। तिन्हहि मार ई बिनु भगवंता।' अर्थात् खर और दूषण तो मेरे समान बलवान है, उन्हें बिना भगवान के कोई और मार ही नहीं सकता। सुर रंजन भंजन महि भारा। जो भगवंत लीन्ह अवतारा।। तो मैं जाइ बैर हरि कर हूँ। प्रभु सर प्राण तजे भव तरऊँ।। ऐसा सोचकर रावण ने निर्णय लिया कि यदि भगवान अवतरित हो चुके हैं तो उनसे बैर कर प्रभु के बाणों से मरना श्रेयस्कर होगा। चूँकि मेरे कारण ही मेरे पुत्र तथा बंधुओं ने भी तामस वृत्ति धारण करने से कई पाप किये हैं। अतः उनका उद्धार भी श्रीराम के हाथों करवाना मेरा कर्तव्य है। इसलिये उसने सबसे छोटे अक्षय कुमार फिर उससे बड़े इसी क्रम से एक-एक कर सभी का उद्धार करा दिया और मोक्ष रुपी फल का लाभ सभी को दिलवाया और अंत में रावण भी मोक्ष फल का अधिकारी हुआ। अस्तु।

-हरिनारायण नागर (पत्रकार)
देवास

दाग मिट सकते हैं, आप डॉक्टर के पास तो जाइए

17 साल की उम्र में निशा को अपनी त्वचा पर अजीब से सफेद धब्बे दिखाई दिए। पता चला यह तो सफेद दाग है! इसके बाद बीमारी से ज्यादा दूसरे खौफ निशा को सताने लगे। लोगों के सामने आने की हिचक, किसी को पता चल जाने का डर, सफेद दाग बढ़ा तो कुष्ठ रोग का रूप ले लेगा जैसी गलफहमी निशा को परेशान करने लगीं। निशा अकेली नहीं है, जो सफेद दाग यानी विटिलाइगो से कम, इसके बारे में प्रचलित गलतफहमियों से ज्यादा घबराती है। गंगाराम हॉस्पिटल में कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजिस्ट डॉक्टर रोहित बत्रा कहते हैं,'लोग अभी भी इस बीमारी के बाबत जागरूक नहीं हैं, जिसकी वजह से बीमारी तो ठीक नहीं होती, हां दूसरे नुकसान जरूर हो जाते हैं।'

आइए जानें कुछ ऐसी गलतियां, जो अक्सर इस बीमारी से जूझ रहे लोग करते हैं। डॉक्टर बत्रा बताते हैं कि अमूमन मरीज इस सच को स्वीकार नहीं करते कि इस बीमारी का इलाज नहीं है। इसे केवल आगे बढ़ने से रोका जा सकता है, न कि पूरी तरह से खत्म किया जा सकता है। इसीलिए लोग बाजार में बैठे ऐसे झोलाछाप डॉक्टरों के पास जाते हैं जो आयुर्वेद, होम्योपैथी, एलोपैथी या यूनानी थेरेपी से उन्हें बीमारी ठीक करने का झूठा दिलासा देते हैं। कई बार तो मरीज जो दवाएं खाते हैं, वे उनके लिए दूसरी परेशानियों का सबब बन जाती हैं। मसलन शरीर का वजन बढ़ा देती हैं। शरीर पर सूजन आ जाती है वगैरह-वगैरह। इसलिए इधर-उधर भटकने की बजाय किसी एक्सपर्ट की सलाह पर ही भरोसा करें। अमूमन लोग शुरुआत में सफेद दाग को नजरअंदाज करते हैं। इसे त्वचा संबंधी बीमारी समझते हैं। कई बार तो लड़कियां शर्म या हिचक से डॉक्टर के पास नहीं जातीं। लोग ऐसे कपड़े पहनने लगते हैं, जिससे ये दिखाई न दे। जब बीमारी बहुत बढ़ जाती है या सामने दिखाई देने लगती है तो डॉक्टर को दिखाते हैं। डॉक्टर बत्रा की मानें तो इससे काफी नुकसान होता है। अगर किसी एक हिस्से पर दाग दिख रहा है तो तुरंत एक्सपर्ट की राय लें, ताकि वह उस बीमारी को वहीं रोक सके। ये कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका ध्यान रखेंगे तो बीमारी को कंट्रोल कर पाएंगे।

हथेली पर ऐसे चिन्ह से चमक जाती है किस्मत

हथेली को ध्यान से देखने पर उसमें कई रेखाएं मिलकर कुछ चिन्ह से बनाती हुई प्रतीत होती हैं। इन चिन्हों में से कुछ चिन्ह जैसे बिन्दु, धब्बा आदि जिनका होना सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभ नहीं माना गया है। इसके विपरित कुछ चिन्ह ऐसे होते हैं जिनकी आज हम बात कर रहे हैं जो इंसान के आने वाले सुनहरे भविष्य की ओर इशारा करते हैं। ऐसे लोग बहुत भाग्यशाली माने जाते हैं। त्रिशूल का चिन्ह हथेली में होना बहुत ही शुभ होता है। यह निशान जिस रेखा के शुरू में होता है उस रेखा की गुणवत्ता एवं प्रभाव में वृद्धि होती है और आपको इसका शुभ फल प्राप्त होता है। यह जिस रेखा पर होता है उस रेखा का प्रभाव तो बढ़ता ही साथ ही जिस रेखा की ओर इसका सिरा होता होता है वह भी शक्तिशाली एवं प्रभावशाली हो जाता है। त्रिशूल का निशान सामुद्रिक ज्योतिष में अति उत्तम कहा गया है यह जिस पर्वत पर होता है वह पर्वत काफी फलदायी होता है साथ ही उसके समीप के पर्वत भी उत्तमता प्रदान करने वाले हो जाते हैं। यह निशान मंगल पर्वत पर होने से शिवयोग बनता है जो आपको परोपकारी, धनवान, गुणवान एवं प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

इसलिये जरुरी है हर पल ईश्वर स्मरण-3

मन वश में रहता है तो अनुचित कर्म नहीं होते...

यानी कि मन को स्थिर करने का व ध्यान करने का अभ्यास दोनों एक साथ करने होते हैं। सिद्ध साधकों द्वारा ईश्वर पर ध्यान करने का सुझाव दिया गया है, जिससे मन ईश्वर पर केन्द्रित होने लगता है। इस प्रकार धीरे-धीरे अभ्यासी को स्वधर्म में लगे हुए भी अपने इष्टदेव का स्मरण करना सुगम हो जाता है।

प्रत्याहार- मनुष्य का मन स्वभाव से चंचल होता है। उसकी वृत्ति सांसारिक विषयों पर टिकने की होती है। मन पर अंकुश न रख पाने की अवस्था में मनुष्य अनेक प्रकार के दुष्कर्म करता है और तरह-तरह के कष्ट भोगता है। यदि मन वश में रहता है तो उसके द्वारा अनुचित कर्म नहीं होते।

गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा है कि मन की चंचलता को अभ्यास द्वारा विराम दिया जा सकता है। चंचलता दूर होने से मन संयत हो जाने पर वह फिर इन्द्रिय-विषयों के साथ अपने को नहीं जोड़ता। ऐसा होने पर हमारी इच्छाएं और इन्द्रियां हमारे वश में रहने लगती है।

प्रत्याहार व यौगिक अभ्यास है जिसके द्वारा इन्द्रियां अपने विषयों से हट जाती है व मन का अनुसरण करने लगती है। जब मन नियंत्रित होता है तो इन्द्रियां भी नियंत्रित हो जाती है।

प्रत्याहार में स्थित होने के लिए प्राणायाम का अभ्यास बहुत सहायक होता है। प्रत्याहार में स्थित हो जाने पर साधक अपनी इन्द्रियों विचारों और भावनाओं पर अधिकार प्राप्त कर लेता है व उन्हें सही दिशा में समर्थ होता है और यदि यह दिशाभक्ति भाव से ओतप्रोत हो तो साधक के अन्तिम श्वास तक ईश्वर स्मरण की संभावना अधिकाधिक हो जाती है।

भक्तिपथ- भगवान को स्मरण करने का सबसे आसान उपाय है- भावपूर्वक भगवान के साथ जुड़ जाना। भक्ति परमेश्वर के समीप पहुँचने का एक उत्तम साधन है जिस प्रकार कृषि, शेम्पू, साबुन, सीमेन्ट, फर्श साफ करने वाला रसायन पानी के बिना काम नहीं करते उसी प्रकार भक्ति भाव के बिना चित्तशुद्धि के सब साधन जैसे यज्ञ-दान, जप-तप ध्यान-धारण इत्यादि साधक को कोई फल नहीं देते। ईश्वर प्राप्ति के सब साधनों को भक्ति की आवश्यकता होती है।

श्रीमद् भगवत् में नवधा-भक्ति का स्पष्ट स्वरूप सामने आया है-

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।।

यहां सर्वव्यापी परमेश्वर को रिझाने के नौ उपाय बताएं हैं-

श्रवण	कीर्तन	स्मरण
पादसेवन	अर्चना	वन्दना
दास्यभाव	सख्यभाव	आत्मनिवेदन

संत शिरोमणियों ने नौ प्रकार की भक्तियों में कीर्तनभक्ति को सर्वश्रेष्ठ बताया है। कीर्तन में प्रभू नाम के साथ उनके गुणों का भी श्रवण होता रहता है। नाम के साथ ही स्वरूप एवं छवि का स्मरण स्वाभाविक है। अतः कीर्तन भक्ति से श्रवण एवं स्मरण भक्ति भी हो जाती है। नाम कीर्तन के साथ पाद सेवा, अर्चना तथा वन्दना स्वयं होने लगती है। दास्य भावना, सख्य भावना तथा आत्मसमर्पण की भावना अन्तःकरण से होती है। कीर्तन में तल्लीन होकर, भावविभोर होकर भक्त अपना समर्पण प्रभू के दास के रूप में सखा के रूप में करते हैं।

भक्ति के अभ्यास से भगवान के प्रति अनुराग बढ़ता है। भगवान के प्रति यह अनुराग मन की चंचलता को नियंत्रित करता है। भक्तिमार्ग की प्रगति में श्रद्धा मुख्य है। श्रद्धा तथा प्रेम के बिना व्यक्ति हृदय से ईश्वर को देख नहीं पाता। श्रद्धाविहीन व्यक्ति ऊपर-ऊपर भक्ति में लगे रहें तो भी उन्हें सिद्ध अवस्था प्राप्त नहीं होती। वे भले ही भक्ति में लगे रहे, किन्तु पूर्ण प्रेम तथा श्रद्धा के अभाव में इष्टदेव की भक्ति उपासना में लगे रहना कठिन होता है।

ईश्वर अर्न्तयामी है, दयावान है, सर्वज्ञ है। मन और बुद्धि से यह समझना है। यह समझने से परमात्मा में प्रेम तथा श्रद्धा जागृत होती है तथा भक्ति फलीभूत होती है। भक्तिपथ पर स्थित होने पर प्रेम (भगवान में आकर्षण) बढ़ता रहता है। आनन्द की अनुभूति होती है एवं श्रद्धा उसका अनुसरण करती है।

निष्ठापूर्वक भक्ति साधना में लगे रहने से भक्त क्रमशः अधिकाधिक स्थिर तथा पवित्र होता जाता है व परमात्मा का सानिध्य अनुभव करने लगता है। भक्ति पथ के चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर भक्त पूर्णतः भगवान भावानन्द से शरणागत हो जाता है. 'भगवान मेरे हैं और मैं भगवान का हूँ' इस भावानन्द से शरणागत होने से साधक भक्ति कार्यकलापों में तीव्रता से प्रगति करता है। इस अवस्था में दृढ़रूप से स्थित होने लगता है। भगवान का स्मरण उसकी दिनचर्या का प्रमुख अंग बनने लगता है। निरन्तर भक्तिपथ का अनुसरण साधक को भगवान की स्मृति करवाता है, जिससे उसके द्वारा अन्तिम क्षणों में भी ईश्वर को पकड़े रखने की संभावना को बल मिलता है।

अन्त में समुचित सर्वसम्मत सार यही है

राम राम रटते रहो जब लग घट में प्रान।
कबहुँ तो दीन दयाल के भनक पड़ेगी कान।।

प्रतिदिन सूर्य के अस्ताचल की ओर जाने के साथ हमारी आयु का एक अंश घट जाता है। इस प्रकार दिन ब दिन हमारे जीवन का अन्त निकट आता जाता है। यदि हमने अपने अन्तिम क्षणों को पुण्यमय पावन तथा मधुर बनाने का प्रयास जीवन पर्यन्त किया है तो चिरनिद्रा भी शांति पूर्वक आएगी और यदि भारतीय वैदिक दर्शन में विश्वास है तो अग्रिम यात्रा भी शुभ होगी। हम जीवनभर अनेक कर्म करते रहते हैं, जिससे अनेकानेक संस्कारों को इकट्ठा करते रहते हैं, परन्तु विद्वानों के अनुसार बढ़ती आयु के साथ कुछ व्यवस्थित संस्कार ही शेष रह जाते हैं। जब जीवन की अंतिम घड़ी आती है तो इन थोड़े से संस्कारों में से भी मात्र कुछ दृढ़संस्कार ही जीवात्मा याद करने लगती है। क्या ही उत्तम हो यदि इन दृढ़ संस्कारों में परमात का स्मरण भी मिला हो।

-अवनिन्द्र नागर
भुवनेश्वर मो. 09040592383

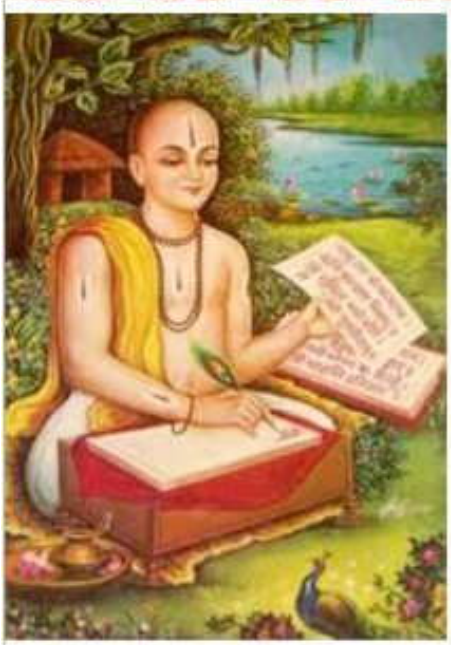

रामचरितमानस
विश्व की एक धरोहर

वास्तव में यदि महात्मा गांधी के सपनों को साकार करना है तो देश में पुनः राम राज्य की स्थापना करनी है तो राम के चरित्र को पुनः पाठ्यपुस्तकों में लाया जाना चाहिये । जब तक राम के चरित्र को जनता नहीं समझेगी तब तक राम राज्य की कल्पना भी कैसे की जा सकती है? राम चरित्र भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है ।

श्री रामचरित मानस विश्व की एक अनुपम धरोहर है यह ग्रन्थ प्रत्येक धर्म,प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर्श जीवन,आदर्श ग्रहस्थ,आदर्श राजधर्म एवं प्रेम से परिपूर्ण ग्रंथ है। पारिवारिक जीवन को उत्कृष्ठ बनाने के लिए इससे बढ़कर कोई कृति नहीं ।

आदर्श भातृ प्रेम,आदर्श मित्र,आदर्श पुत्र,आदर्श पत्नि,आदर्श पति,आदर्श माता और आदर्श पिता,आदर्श राजा इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति,प्रत्येक परिवार के लिए यह अत्यन्त श्रेष्ठ दर्पण है जिसमे झांक कर व्यक्ति अपने को परम श्रेष्ठ मित्र, भ्राता, पति, पत्नि, पुत्र, माता-पिता, गुरु, शिष्य एवं अत्यन्त प्रजापाल राजा बन सकता है । इन सभी विशेषताओं के कारण यह हिंदू धर्म का ही ग्रन्थ नहीं यह विश्व के समस्त धर्मो के,सभी जाति के,सभी आयु वर्ग के मानव मात्र के लिए नित्य स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है एवं अनुकरण करने योग्य चरित्र है । वास्तव में यदि महात्मा गांधी के सपनों को साकार करना है तो देश में पुनः राम राज्य की स्थापना करनी है तो राम के चरित्र को पुनः पाठ्यपुस्तकों में लाया जाना चाहिये । जब तक राम के चरित्र को जनता नहीं समझेगी तब तक राम राज्य की कल्पना भी कैसे की जा सकती है । राम चरित्र भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है । इसे सभी धर्म के लोग भी समझे । क्यो किसी भी धर्म का पिता नहीं चाहेगा कि राम के समान आज्ञाकारी पुत्र हो,क्यों किसी भी समाज का व्यक्ति नहीं चाहेगा कि राम के समान सत्यवादी, पराक्रमी, धर्मनिष्ठ, प्रजापाल राजा हो ।

क्या किसी भी धर्म का व्यक्ति अच्छा मित्र नहीं चाहेगा । क्या किसी भी धर्म का व्यक्ति अपने परिवार में सुख-शांति, प्रेम, त्याग की कामना नहीं करता है तो राम चरित्र इन सभी अच्छाइयों को सिखाने वाला चरित्र है इसमें किसी को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिये एवं देश को सुदृढ़ एवं एश्वर्य पूर्ण बनाने के लिए पुनः पाठ्यपुस्तकों में राम चरित्र को शामिल करना आवश्यक है तभी महात्मा गांधी का स्वप्न पूर्ण हो सकता है । वैसे कोई भी श्रेष्ठ इतिहास हो उसे धर्म से आबद्ध नहीं करना चाहिये ।

वर्तमान में पिता अपने पुत्र के लिए सोचता है मेरा पुत्र मेरी आज्ञा का पालन करे किन्तु पुत्र माता-पिता,गुरु की आज्ञा का महत्व ही नहीं समझता जबकि मानस के आज्ञाकारी पुत्र (श्री राम) के वनवास के समय महाराज दशरथ,भगवान आशुतोष शिव से प्रार्थना करते है कि है आशुतोष (शीघ्र प्रसन्न होने वाले) आप अवढर दानी हो अतः मुझे अपना दीन सेवक जानकर मेरे दुःख को दूर कीजिये,आप सबके ह्रदय में प्रेरणा देने वाले है अतः आज आप राम को ऐसी बुद्धि दीजिये कि मेरे वचनों का पालन नहीं करे और शील स्नेह त्याग कर घर पर ही रहे वन नहीं जावे। किन्तु आज के पुत्र अधिकांशतः इसके विपरित ही है ।

मां केकई को मातृ भक्त राम कहते है

सुनुजननी सोई सुत बडभागी,जो पितु मात वचन अनुरागी ।
तमय मातु पितु तोष निहारा,दुर्लभ जननी सकल संसारा ।।

हे माता सुनो वही पुत्र बडभागी है जो माता पिता के वचनों का पालन करे और आज्ञा का पालन कर माता पिता को संतुष्ट करने वाला पुत्र ही हे जननी सारे संसार में दुर्लभ है ।

अतः मुझे आपके आज्ञा पालन करने का बहुमुल्य समय आया है और

मुनिगण मिलनु विशेषि
वन सबहि भॉति हित मोर ।।
होहि महा पितु आयसु बहुरि
संमत जननी तोर ।।

वन में विशेष रुप से मुनियों से मिलन होगा इसमे मेरा सभी प्रकार से हित ही होगा उसमें भी फिर पिता की आज्ञा और उसमें भी आपकी सहमति है । आगे अपने प्रिय भाई के लिए कहते है कि मेरा प्राण प्रिय भरत राज्य को प्राप्त करेगा,आज विधाता सब प्रकार मेरे अनुकूल है ।

देखिये आज का भाई कुछ संपत्ति के लिए भाई की हत्या कर देता है वहॉ मानस में दोनों भाइयों ने उस अतुल्य संपदा से युक्त राज्य को त्याग दिया यह है भाई भाई का प्रेम ।

-डॉ.ओ.पी.नागर
श्री रामांक, 08
गोपालपुरा उज्जैन
फोन-0734-2526252

भाग्य का निर्माण प्रारब्ध से होता है

श्रीराम चरित मानस के रचियता श्री तुलसीदासजी ने कहा है कि, कर्मप्रधान विश्व करि राखा, जो जस करै सो तस फल चाखा, लेकिन मेरे मतानुसार उक्त चौपाई मौजू नहीं हैं, क्योंकि अपने इर्द-गिर्द ही कई ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं जिनके कर्मों को देखकर यह नहीं कहा जा सकता है इसने बुरे कर्म किये हैं तो उसका फल भोग रहा है अथवा उसने अच्छे कर्म किये हैं तो वह सुखी है। संसार के सुख भोग रहा हैं।

उदाहरण के स्वरूप मैं अपने परिवार का ही एक उदाहरण प्रस्तुत करती हूँ कि मेरी सास श्रीमती सुशीलादेवी नागर (दडियावाले) लगभग 40 वर्ष की आयु में ही विधवा हो गई थी और उनके पुत्रगण भी नाबालिग थे। उनकी त्याग, तपस्या, समर्पण और निःस्वार्थ सेवा को पूरा समाज जानता है। उनकी सहनशक्ति, का अंदाजा तो लगाया भी नहीं जा सकता। उन्होंने अपने पूरे जीवन में सत्य का ही आचरण किया है। उसके पश्चात् भी उनकी समस्याएँ अंतहीन है और उन्हें सुखी एवं सम्मानपूर्ण जीवन जीने के पर्याप्त अवसर है। उसके बावजूद भी वे उससे वंचित है तो ऐसी स्थिति को हम क्या कह सकते हैं कि उनका प्रारब्ध ही ऐसा है।

कई भ्रष्ट एवं बेईमान व्यक्ति जिनसे एक अच्छा व्यक्ति बात करना भी पसंद नहीं करता है जिनके कर्म भी घृणित हैं, वे समाज में सम्मान प्राप्त करते हैं, सभी ऐशो-आराम का लाभ ले रहे हैं और एक तरफ ऐसे व्यक्ति भी हम देखते हैं जो सद्कर्म, सद्विचार से ओतप्रोत है जो हर व्यक्ति का हित सोचते हैं, भला करने की कोशिश करते हैं जो भ्रष्टाचार और बेईमानी के खिलाफ हैं लेकिन दुःखी हैं। कई समस्याओं का सामना करते हैं। ऐसी स्थिति को क्या कहेंगे? उसका प्रारब्ध ऐसा ही है यही कि व्यक्ति को अपना प्रारब्ध निर्माण करने के लिये अच्छे कर्म करना चाहिये।

मेरे मत में इस जन्म में जो कर्म कर रहा है अगले जन्म के प्रारब्ध को संजो रहा है, जिसका हिसाब किताब भी अगले जन्म में होगा यदि जन्म-मरण अवश्यम्भावी है तो प्रारब्ध भी निश्चित है वही महत्वपूर्ण है। भाग्य में जो लिखा है वही व्यक्ति भोगता है, भाग्य का निर्माण प्रारब्ध से होता है। इसीलिये कहा जाता है कि भाग्यं फलाति सर्वत्र, न च विद्या, न च पौरुषम् । श्रीरामचरितमानस में भी यही उल्लेखित है कि, 'जो विधि लिखा लिलार, देव, दनुज, मुनि कोऊ न मेटन हार।।' भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भागवद्गीता में दूसरे अध्याय के बारहवें श्लोक में कहा है कि वांसासि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि ग्रहयति नरोऽपाणि, तथा शरीराति विहाय, जीर्णान्यानि नवानि देहि। अर्थात् संसार में जिस प्रकार मनुष्य अपने पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्र ग्रहण करता है, उसी प्रकार जीवात्मा भी पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करती है। यह आत्मा अदाह्य है, अशोष्य है ना कोई मार सकता है ना कोई काट सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद् भागवत् गीता में यह भी कहा है कि किसी काल में मैं नहीं था या तुम नहीं थे ये सम्भव नहीं है। प्रत्येक जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है और हर मरने वाले का जन्म निश्चित है।

इसीलिये हर व्यक्ति को अच्छा सोच रखना चाहिये एवं अच्छे कर्म करना चाहिये। यदि हमने अच्छे कर्म नहीं किये हैं तो भले ही वह व्यक्ति जिसके लिये हमने बुरा किया है वह हमें क्षमा भी कर दे, लेकिन वह दुष्कर्म स्मृति पटल पर लिख जाते हैं। हमें प्रारब्ध को अच्छा निर्मित करने के लिये अपने मन पर नियंत्रण रखना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि हमारा मन हवा की रफ्तार से बेलगाम दौड़ता रहता है। क्षण प्रतिक्षण अच्छे बुरे विचारों की श्रृंखला बनी रहती हैं। इसलिये हमें इसे नियंत्रित करना चाहिये। अपने कर्मों के प्रति सदैव सजग रहना चाहिये। हमें समाज एवं राष्ट्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी चाहिये। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि सभी व्यक्ति सद्कर्म, सद्विचार के साथ अपने जीवन को जीते हुए प्रारब्ध का निर्माण करें।

-श्रीमती सलिला नागर
बी-3, शिवम् परिसर
नानाखेड़ा, उज्जैन
मो. 9425987689, फोन 2533029

याद

संता एक बियावान जगह में बैठा रो रहा था।
बंता ने पूछाः यार संता तुम क्यों रो रहे हो?
संताः यार एक लडकी को भूलने की कोशिश कर रहा हूं।
बंताः इसमें रोने की क्या बात है?
संताः जिस लडकी को भूलने की कोशिश कर रहा हूं, उसका नाम याद नहीं आ रहा।

सावधान! कालसर्प दोष प्रामाणिक नहीं है

जैसे मंदिर में भोग का, चिकित्सालय में रोग का महत्व है, उसी प्रकार फलित ज्योतिष में योग का महत्व है। इन योगों में कुछ लाभकारी व कुछ अलाभकारी योग है। 'कालसर्प योग' भी ऐसा योग है, जिसे ज्योतिषियों ने कष्टकारी बताकर उनका (पीड़ित का) आर्थिक दोहन करते हैं जो अनुचित है। किसी की कुंडली में राहु-केतु के मध्य एक ही ओर शेष सात ग्रहों के आने पर काल सर्प योग बनता है। कुछ विद्वान इसे व्यय तथा कुछ इसे 288 प्रकार का मानते हैं। प्रचलन में मात्र 12 प्रकार का यह भोग बताया है, जिसे 12 सर्पों के नाम से घोषित किया है। इसके अतिरिक्त फलित ज्योतिष में मार्केश, मंगल दोष, शनि का अढ़ैया, साढ़े साती, पुनरक्तो योग (शनि चन्द्र का आपस में सम्बन्ध) का अनिष्टकारी दोष होता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि जब लोग कष्ट से पीड़ित होते हैं तो उसके निवारणार्थ ज्योतिषी सलाह लेते हैं।

'कालसर्प योग' के निवारणार्थ त्रिपिंडी श्राद्ध, नारायण बलि, नाग पूजा, नाग चिन्ह धारण करने की सलाह देते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की पूजन व्यवस्था है। जहाँ पीड़ित इसकी शांति हेतु हजारों रुपये तथा समय देकर शांति कराता है, इसके इस कृत्य से लाभ हुआ तो आस्था में वृद्धि होती है, अन्यथा वह ठगा सा महसूस करता है।

इस तथा कथित अनिष्टकारी योग की शांति हेतु लोग हजारो रुपये खर्च कर रहे हैं, उसकी प्रमाणिकता ही संदेह के घेरे में आ गई है। गत वर्ष 'दिल्ली संस्कृत अकादमी' की ओर से आयोजित गोष्ठी में काल सर्प योग दोष पर विस्तृत चर्चा हुई तथा इस तथाकथित दोष के अस्तित्व को नकार दिया है। इस सम्बन्ध में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं सर्पूणानंद संस्कृत विद्यालय संस्कृत धर्म विज्ञान संकाय के प्रमुख विद्वानों ने इसे कपोल कल्पित माना है। शोधपत्र में इस योग के अस्तित्व को ही नकार दिया है। उनका शोधपत्र अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका

'कालसर्प योग' के निवारणार्थ त्रिपिंडी श्राद्ध, नारायण बलि, नाग पूजा, नाग चिन्ह धारण करने की सलाह देते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की पूजन व्यवस्था है।

नैसर्गिधी में प्रकाशित हो चुका है। उन्होंने गत वर्ष दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में स्पष्ट रूप से 'काल सर्प दोष योग' को नकार दिया है। इस गोष्ठी में अन्य विद्वतजन भी शामिल थे।

ज्योतिष के किसी भी प्रमाणिक ग्रंथ में 'कालसर्प योग' का वर्णन नहीं है। मत्सागरी, ब्रहज्जातकम सारावली, बृहत्पाराशरी, होरा शास्त्र आदि ग्रंथों में इस योग का वर्णन नहीं है। कुंडली का सूक्ष्म अध्ययन कर निर्णय देना उचित है, इस सम्बन्ध में विद्वतजनों का अपना मत है। इस योग से लोगों को गुमराह किया जा रहा है। इस योग की अवधारणा शास्त्रीय नहीं है। जिससे इसे मान्यता नहीं दी जा सकती है। यह पूर्णरूप से व्यापारिक क्षेत्र बन चुका है। जिसका ज्योतिष से कोई लेना देना नहीं है।

कुंडली में 'कालसर्प दोष' के सम्बन्ध में जो दूष्प्रचार किया जा रहा है तथा समाज के लोगों का भय व आर्थिक दोहन किया जा रहा है। वह अनुचित है तथा उसे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इस सम्बन्ध में मेरे विचार से कोई सजाती बन्धु (नागर बन्धु) इस योग से पीड़ित होकर घबरा रहे हैं। उन्हें श्रद्धा पूर्वक प्रदोष महाशिवरात्रि, श्रावण सोमवार को किसी प्राण प्रतिष्ठित श्री हाटकेश्वर, नर्मदेश्वर शिव मंदिर में शिवलिंग उनका रुद्राभिषेक उत्तम फलदायी है एवं शिवलिंग पर दूध जल से 'ॐ नम शिवाय' 'ॐ हाटकेश्वराय नमः' मंत्र द्वारा अभिषेक से नागरो के इष्ट देव प्रजाधिपती श्री हाटकेश्वर भगवान प्रसन्न होकर शांति प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त इन पर्वों पर श्रद्धापूर्वक पंचाक्षरी शिवमंत्र ॐ नमः शिवाय का उच्चारण करते हुए एक हजार बिल्वार्चन, अक्षतार्चन, तुलसी मंजरी (जो खंडित न हो) करने से भी श्री हाटकेश्वर प्रसन्न हो जाते हैं।

-आचार्य संतोष कुमार व्यास
देवज्ञ (सर्वेश्वर शरण)
10, बीमा नगर, इन्दौर)

स्वाईन फ्लू से बचाव एवं इलाज

जब-जब मौसम में परिवर्तन होता है। बीमारियों का प्रकोप बढ़जाता है जिनमें मुख्य है मलेरिया, स्वाईन फ्लू, डेंगू आदि। पिछले वर्ष इन्हीं दिनों में स्वाईन फ्लू का प्रकोप रहा और उसके बचाव के लिये बड़े पैमाने पर आयुर्वेदिक औषधियों का काढ़ा घरों में एवं सार्वजनिक स्थानों पर पिलाया गया था, जिसके परिणामस्वरूप रोग पर नियंत्रण रहा।

एक व्यक्ति के लिये काढ़ा बनाने की विधि निम्न प्रकार है-

1. गिलोय- यदि ताजी उपलब्ध हो तो अंगुली की मोटाई की डंडी 6 इंच लम्बी या गिलोय पाउडर एक चाय का चम्मच।
2. तुलसी पाँच-सात पत्ते।
3. अदरक एक टुकड़ा जितनी एक कप चाय में डाली जाती है।
4. हल्दी पाउडर आधा चम्मच और गुड़ स्वाद के अनुसार।

बनाने की विधि- आधा लीटर पानी में उबालें। चौथाई शेष रहने पर रोग से बचने के लिए प्रातः खाली पेट एक सप्ताह तक रोग होने पर सुबह, दोपहर एवं रात्रि तीन बार स्वस्थ होने तक लेवें। रोगी की संख्या के अनुसार उपरोक्त मात्रा उतनी गुनी बढ़ा ली जाती है। इस काढ़े से रोग प्रतिरोध क्षमता भी बढ़ती है। यह योग आयुष विभाग द्वारा अनुमोदित है।

अमलतास-बहु उपयोगी औषधि- इसे आयुर्वेद में आरग्वध एवं अंग्रेजी में पाईप ट्री कहते हैं। इसके वृक्ष वनों के अतिरिक्त शहरों में, बगीचों में या सड़क के किनारे होते हैं। इस वृक्ष में मार्च अप्रैल के बाद डेढ़-दो फुट लम्बी गोल नुकिली फली निकलती है। जो अधिक समय तक वृक्ष पर लटकती रहती है। तेज हवा के झौकों में गिरती रहती है व सड़कों पर या बगीचों में यहाँ-वहाँ पड़ी रहती है। जिससे बच्चे खेलते रहते हैं, किन्तु यह बड़ी उपयोगी औषधि है। इसका मुख्य कार्य विबन्ध (कब्ज) को दूर करना है। इसकी फली के 25 ग्राम गूदे को पानी में उबाल कर काढ़ा बनाकर पीने से सुखत मल विसर्जन होता है। अतः यह अर्श के रोगी के लिये बहुत उपयोगी है। इसका काढ़ा गर्भवती स्त्री को पिलाने से सुखद प्रसव होता है। अमलतास के 10-15 पत्तों को पीसकर, गरम करके पुल्टिस बांध देने से सुन्नवात, गठिया और अर्दित (मुँह का टेढ़ा होना) में लाभ होता है। साथ ही पत्तों का स्वरस भी पिलाने से लाभ होता है। लेप व स्वरस त्वचा रोग एवं कुष्ठ रोग में भी लाभ करता है।

-डॉ.बालकृष्ण व्यास
एल.आय.जी.सी-12/12, ऋषि नगर, उज्जैन (म.प्र.) मो.9424045826

जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान बनाता है। स्वास्थ्य परिश्रम में है और श्रम के अतिरिक्त वहाँ पहुँचने का कोई दूसरा राजमार्ग नहीं है।

संताः अरे यार तुम्हारे दांत कैसे टूट गए?
बंताः हंसने के कारण।
संताः मैं समझा नहीं?
बंताः कुछ नहीं यार कल मैं एक पहलवान को देखकर हंस रहा था।

स्वाईन फ्लू के लक्षण-डॉक्टरों के अनुसार स्वाईन फ्लू में शुरु में बुखार आता है, सर्दी लगती है, खांसी आती है, नाक से पानी बहता है, उल्टी होती है, डायरिया भी हो जाता है। इसमें कुछ लोगों को ही यह लक्षण होते है। शेष को सर्दी, जुकाम व बुखार आता है।

स्वाईन फ्लू की बीमारी से बचने के उपाय

स्वाईन फ्लू से बचाव-

(1) तुरन्त डॉक्टर को दिखाएँ। डॉक्टर के अनुसार जाँच व ईलाज शुरु कर देवें।
(2) पीने के पानी में, खाने के बर्तन में हाथ धोकर हाथ लगायें।
(3) बाहर से आने के बाद हाथ धोयें।
(4) भीड़ में से आने के बाद गर्म पानी में नमक डालकर कुल्ला (गरारा) करें।
(5) खाने पीने की वस्तुएँ बाहर ले जाते समय सफाई का ध्यान अवश्य रखें।

योग में-

(ए) शरीर संचालन पांव की उंगली से सिर तक प्रत्येक अंग को स्ट्रेच कर रिलेक्स करें। 10 बार जिस तरह क्रिकेट खिलाड़ी मैदान में करते हैं ॐ का उच्चारण 11 बार करना है।
(बी) योगेन्द्र प्राणायाम (लोम-अनुलोम) 10 बार बांई नाक से सांस लेना व दाहिनी नाक से सांस छोड़ना - 10 बार।
(सी) भ्रामरी प्राणायाम - 5 बार।
(डी) श्वासन - 10 मिनिट।
(इ) योग निन्द्रा - 20 मिनिट।
(एफ) सुबह व शाम गर्म पानी में नमक डालकर गरारा (कुल्ला करना)।
(जी) थोड़ा अदरक, 7 तुलसी के पत्ते, 3 काली मिर्ची, एक छोटा चम्मच गुड़ मिलाकर 4 कप पानी को उबालकर, 2 कप करें, आधा पानी सुबह व आधा पानी रात को एक व्यक्ति को लेना है।
(एच) रात को गर्म दूध में एक छोटी चम्मच हल्दी मिलाकर पीना है।
(आई) खुली हवा में सड़क, बगीचा, वराण्डा, छत पर अपनी शक्ति के अनुसार 1 से 4 किलोमीटर पैदल घूमना है।
(जे) दिन में एक बार दिल खोलकर हंसना है। हरी सब्जी खान-पान में ध्यान रखना है। रात का खाना सोने से डेढ़ घण्टा पहले खाना है।

-ए.के. रावल योगाचार्य
25, पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर फोन 2565052

स्वास्थ्य रूपी घर को स्थिर रखने के लिये उसके तीनों पाये आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य को ठीक रखना चाहिए।

बेटी बचाओ देश बचाओ

भारत में वर्ष दर वर्ष स्त्रियों की संख्या आश्चर्यजनक रूप से पुरूषों की अपेक्षा कम होती जा रही है। हम इक्कीसवी सदी में प्रवेश कर रहे हैं परन्तु हमारी सोच आज भी पुरानी है। आज भी हम सन्तान सुख लडके के जन्म को ही मानते हैं।

आज जहाँ स्त्री पुरूषों के साथ-साथ कन्धा मिलाकर बराबरी से काम कर रही है। वहाँ ऐसी सोच निश्चित ही दकियानुसी घटिया सोच है। सन्तान होने पर पुत्र रत्न ही प्राप्त हो ऐसी प्रवृति अशिक्षित व निम्न मध्यम वर्ग ही नहीं बल्कि उच्च व शिक्षित समाज की भी है। भारत के सबसे समृद्ध राज्यों पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं गुजरात में लड़कियों की अपेक्षा लड़को की संख्या कहीं अधिक है। हरियाणा में तो खाप पंचायतों ने बकायदा लड़कियों के पैदा होने पर आपत्ति जताते हुए एक फरमान तक जारी किया है।

वर्ष २००१ की जनगणना के अनुसार एक हजार बालको पर बालिकाओं की संख्या पंजाब में ७९८ हरियाणा में ८१९ और गुजरात में ८८३ है। पूरे देश में वर्ष १९८१ में एक हजार बालको पर ९६२ बालिकाएं थी वर्ष २००१ में यह अनुपात घटकर ९०० हो गया हैं,वर्तमान में २०१५ तक यह अनुपात घट कर ७७५ ही रह गया है। जहाँ हम इलेक्ट्रॉनिक एवं दूर संचार इत्यादि क्षेत्रों में आश्चर्य जनक रूप से उन्नति कर रहे हैं वहीं हम सन्तान के मामले में आज भी पुरानी दकियानुसी सोच अपनाएँ हुए है। कहने को हम कम्प्यूटर युग में जी रहे है परन्तु लड़कियों को लेकर आज भी वही सोच है।

लड़कियों की घटती संख्या को कुछ राज्यों ने गंभीरता से लिया है। एवं इसे रोकने के लिये अनेक कदम उठाएं है जैसे गुजरात में ''डीकरी बचाओ अभियान'' एवं मध्यप्रदेश में ''बेटी बचाओ अभियान'' गंभीरता से प्रारम्भ किये है। वैसे देश के अन्य राज्यों में भी ऐसे ही अभियान चलाए जा रहे है। परन्तु इन अभियानों में जितनी गंभीरता पूर्वक कार्यवाहियाँ की जाना थी उतनी नहीं की जा रही है। वर्तमान समय में इस समस्या को दूर करने के लिये सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ प्रसव से पूर्व तकनीकि जाँच अधिनियम को सख्ती से लागू किये जाने की जरूरत है।

हमारे देश के अधीन हिमाचल प्रदेश राज्य बहुत छोटा है परन्तु लड़को की अपेक्षा लड़कियों की घटती संख्या को देखते हुए उन्होंने एक अनूठी स्कीम तैयार की है। जिसके तहत कोख में पल रहे बच्चे का लिंग परीक्षण एवं इसकी हत्या करने वाले लोगो के बारे में जानकारी देने वाले को १०,००० रूपये का नगद ईनाम देने की घोषणा की है। राज्य सरकार का यह प्रयास बहुत कारगर सिद्ध भी हुआ है। उपरोक्त विषय पर एक रोचक किस्सा निम्नानुसार प्रस्तुत है।

एक औरत गर्भ से थी पति को जब पता लगा कि कोख में बेटी है तो वो उसका गर्भपात करवाना चाहता है दुखी होकर पत्नि अपने पति से क्या कहती है:-

सूनो ना मारो इस नन्ही कली को वो खूब सारा प्यार हम पर लूटायेगी, जितने भी टूटे है सपने फिर से वो सब सजाएगी..... सूनो ना मारो इस नन्ही कली को, जब जब घर आओगे तुम्हें खूब हसाँएगी तुम प्यार ना करना बेशक उसको, वो अपना प्यार लूटाएगी..... सूनो, ना मारो इस नन्ही कली को, हर काम की चिंता पल में भगाएगी, किस्मत को दोष ना दो वो अपना घर आँगन महकाएँगी.... ये सब सुन पति अपनी पत्नि को कहता है।

सुनो मैं भी नहीं चाहता मारना इस नन्ही कली को, तुम क्या जानो, प्यार नही है क्या, मुझको अपनी परी से, पर डरता हूँ समाज में हो रही रोज- रोज की दरिन्दगी से क्या फिर खुद वो इन सबसे अपनी लाज बचा पाएगी, क्यूँ ना मॉरू में इस कली को वो बाहर नोची जाएँगी..... मैं प्यार इसे खूब दूँगा पर बाहर किस किससे बचाऊँगा, जब उठेगी हर तरफ से नजरे, तो रोक खुद को ना पाउँगा..... क्या तू अपनी नन्ही परी को, इस दौर में लाना चाहोगे, जब तडपेगी वो नजरो के आगे, क्या वो सब सह पाओगी, क्यो ना मारूं अपनी नन्ही परी को क्या बीती होगी उनपे जिन्हे मिला है ऐसा नजराना, क्या तू भी अपनी परी को ऐसी मौत दिलाना चाहेगी।

ये सुनकर गर्भ से आवाज आती है..... सुनो माँ पापा मैं आपकी बेटी मेरी भी सुनो..... पापा सुनो ना साथ देना आप मेरा, मजबूत बनाना मेरे होसले को, लक्ष्मी हैं आपकी बेटी, वक्त पड़ने पर मै काली भी बन जाउंगी, पापा सुनो, ना मारो अपनी नन्ही कली को उड़ान देना मेरे हर वजूद को, मैं भी कल्पना चावला की तरह, ऊँची उड़ान भर जाऊंगी..... पापा सुनो ना मारो अपनी नन्ही कली को, आप बन जाना मेरी छत्र छाया, मैं झाँसी की रानी की तरह खुद की गैरो से लाज बचाऊँगी..... पिता ये सुनकर मौन हो गया और अपने फैसले पर शर्मिन्दगी महसूस करने लगा और कहता हैं अपनी बेटी से मैं अब कैसे तुझसे नजरे मिलाऊंगाँ, चल पड़ा था तुम्हारा गला दबाने, अब कैसे खुद को तुम्हारे सामने लाऊँगा, मुझे माफ करना ए मेरी बेटी तुझे इस दुनियाँ में सम्मान से लाऊँगा..... वहशी है ये दुनिया तो क्या हुआ तुझे बहादूर बिटीया बनाऊंगा..... मेरी इस गलती की मुझे है शर्म, घर-घर जाके सबका भ्रम मिटाऊंगा बेटियाँ बोझ नहीं होती..... अब सारे समाज में अलख जगाऊंगा।

-राजेश शर्मा
२४, आशीष नगर, इन्दौर (म.प्र.)

परम्पराएँ और हम बनाम सुरेश दवे प्रोटोकॉल

नागर समाज अनुवांशिकी दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट समाज है। एक असीम बुद्धिजीवी अग्रणी और शालीनता सम्पन्नता लिए हुए। इसमें हर उम्र के पुरुष व स्त्री हीरे हैं यह प्रशंसा नहीं, वरन सत्य भी है नागर समाज के वरिष्ठ व प्रबुद्ध वडील तो मानो परिवार व समाज के कल्पवृक्ष या कहे वटवृक्ष हैं मालवा की भूमि के शालीन व समाज के पथ प्रदर्शक सम्माननीय सुरेश दवे मामा की समाज के लिए की गयी सेवाओं के लिए मैं नतमस्तक होकर उन्हें प्रणाम करता हूं उनके परम्पराए और हम विषय के आलेख को पढ़कर मैंने उन्हें मोबाइल पर बधाई दी, मेरा जय हाटकेश वाणी के पाठकों से अनुरोध है कि वे इस विचारोत्तेक आलेख पर अपनी छोटी ही सही टिपण्णी अवश्य लिखें। मृत्यु तो शाश्वत हैं **'जायते हि ध्रुओर्म्रत्यु'** मृत्यु तो सत्य है, वरन जिस घर आती है, कहर बरपाती है ज्ञान की बात अपनी जगह परन्तु घटना सहने वाले की पीड़ा तो असह्य ही होती है...किसी भी परिवार के लिए किसी भी उम्र के मानव के दिवंगत होने पर 13 दिवसीय शोक रखे जाने का यह ही प्रमुख अभिप्राय रहा है कि परिवार व परिचितों के साथ रहने व सांत्वना से परिवार को दु:ख के समुद्र से उबरने में मदद मिले.सुरेश जी दवे मामा का आलेख आज के परिवेश में समीचीन है जहाँ परिवार के सदस्य दूर दराज व विदेश तक हो गये है दवे जी की अभिव्यक्ति कि मृत्यु पर 13 दिवसीय शोक का समय अपेक्षाकृत अधिक है। कहना तो आसान है दवेजी। इसे प्रायोगिक रूप से अमलीजामा पहनाने के लिए मानव व समाज को आगे आना होगा.जो परिवार इसे 3 दिवसीय शोक में परिवर्तित करता हैं, उसे भिन्न भिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियों का सामना भी करना पड़ेगा, यह निश्चित है। जिस प्रकार मानव अपने आँखों के व अन्य अंगो के मृत्यु उपरांत दान की घोषणा करता हैं। उसी प्रकार इस परम्परा को मूर्तरूप देने के लिए जीते जी एक ऐसा घोषणा पत्र बनाया जावे जिसमें आँख व शरीर के अन्य अंगो के दान और स्वयं मृत्यु उपरांत शोक दिवसों की घोषणा भी अंकित हो। स्वयं की घोषणा के बाद दिवंगत की भावनाओं का आदर करना परिवार के सदस्यों का कर्त्तव्य व उत्तरदायित्व होगा और यह नई परम्परा न केवल नागर समाज में वरन राष्ट्र के लिए भी एक श्रेष्ठ मिसाल होगी.इस परम्परा को सुरेश दवे प्रोटोकॉल नाम दिया जावे तो श्रेयस्कर होगा. सुरेश दवे प्रोटोकॉल का फार्मेट भाई दीपक शर्मा व पवन शर्मा बनाकर हाटकेश वाणी में प्रकाशित करें फार्मेट में मृत्यु उपरांत अंग दान व मृत्यु उपरांत शोक के 3 या 5 या 7 दिवस का उल्लेख भी हो सुरेश जी दवे के 13 दिवसीय शोक को 3 दिवसीय में यह परिवर्तन या संशोधन करते हुए दिवसों में स्वेछिक छूट से किया जावे तो समाज इसे अपेक्षाकृत अधिक आसानी से स्वीकार कर सकेगा और सुरेश जी दवे के मौलिक व स्वीकार किये जाने योग्य चिंतन को बल मिलेगा.मालव नागर समाज के पुरोधा व ज्ञान के चाणक्य श्री सुरेश जी दवे को अंतर्मन से वंदन व अभिनन्दन करता हूं भाई दीपक शर्मा सुरेश दवे प्रोटोकॉल का फॉर्मेट हाटकेश वाणी में प्रकाशित करते हैं तो मैं फॉर्मेट बनाकर मेल कर सकता हूं। अभिव्यक्ति पर वाद प्रतिवाद हो सकते हैं। हाटकेश वाणी के खुले मंच में प्रबुद्ध समाजगण अपनी प्रतिक्रिया ज़रूर देवें, मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूरा समाज ध्वनिमत से इस प्रोटोकॉल का समर्थन करेगा।

-डॉ. तेज प्रकाश व्यास
प्रभु कुञ्ज 135 सिल्वर हिल्स धार
454001 मप्र 7024543360

आफताब है बेटियां..

है समस्या बेटे गर, समाधान है बेटियाँ,
तपती धूप में जैसे, ठंडी छाँव है बेटियाँ।
होकर भी धन पराया है सच्चा धन अपना,
दिखावे की दुनिया में, गुप्त दान है बेटियाँ।
अपनी बदहाली की कि सबने बहुत चर्चाएँ,
है ढाँपती कमियों को, मेह है बेटियाँ।
तनाव भरी गृहस्थी में है चारो ओर तनाव,
व्यंग्य-बाणों के बीच, जैसे ढाल है बेटियाँ।
है दूर वे हम सबसे है फिक्र उन्हें हमारी,
करती दुआएँ हरदम, खैरख्वाह है बेटियाँ।
है बेटा कुल-दीपक घर ये रोशन जिससे,
दो घर जिनसे रोशन, आफताब है बेटियाँ।
है लोग वे जल्लाद, जो खत्म उन्हें करते,
टिका जिनपे परिवार, वह बुनियाद है बेटियाँ।
मांगती है मन्नत, बेटों की खातिर दुनिया,
अपनी नजर में दोस्तों, महान है बेटियाँ।

-संकलन- सौ.दुर्गा शर्मा, इन्दौर

पवित्र और प्रेम से परिपूर्ण बनो

मैं चाहता हूँ कि तुम में से प्रत्येक व्यक्ति सशक्त स्थिर और निष्कपट बनें। तुम्हारी आँखें कभी बुरा नहीं देखें, कान बुरी बातें नहीं सुने। तुम्हारी जिव्हा से बुरे शब्द नहीं निकले, तुम्हारे हाथ कभी बुरे काम नहीं करें। तुम्हारे मन में कभी बुरे विचार नहीं आये। निर्मल पवित्र बनो और प्रेम से भरपूर बनो। उनकी सहायता करों जो बहुत बुरी दशा में हो और उनकी सेवा करो, जिन्हें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।

-सत्य साँईं बाबा
संकलन-पी.आर. जोशी

आरक्षण की समस्याएँ

सविंधान में आरक्षण की कल्पना किस देश की व्यवस्था से परिकल्पित हैं इस पर हमारे देश के संविधान विशेषज्ञों का ध्यान नहीं गया हैं ,न अभी तक इस विषय पर दूसरे देशो के अध्ययन सामने आये हैं इसलिये हम यह मान कर चल सकते हैं कि यह अवधारणा एकदम मौलिक है और कुछ ऐसी नई नई समस्याओं को जन्म दे रही है जिसकी कि कल्पना भी नहीं की गयी होगी ।

आज इस व्यवस्था को लेकर समाज के लिये सांप और नेवले की स्थिति पैदा हो गयी है ,खास कर जब वह वर्ग जिसके लिये आरक्षण आरम्भ किया गया था ।अम्बेडकर जी के लिये कोई यह नहीं कह सकता कि उन्हे यह सम्मान वर्ग विशेष से सम्बन्धित होने के कारण मिला था, किन्तु आज आरक्षित वर्ग के भी प्रतिभावान व्यक्ति को यह जिन्दगी भर सुनना पड़ता है कि वह आरक्षित वर्ग का है चाहे वह कर्मस्थल हो या शिक्षण संस्थान ।

उसी तरह सामान्य वर्ग का प्रतियोगी भी अपनी असफलता की ढाल आरक्षण को ही बनाता है ,यहां तक कि अपनी अपेक्षा को बुलन्दी तक न ले जा सकने का दोषी भी इसी व्यवस्था को देता है ।

सामान्य वर्ग के मध्यम स्तर के प्रतियोगियों तो यह व्यवस्था उन्हे रसातल में ले जाने वाली लगती हैं।

समाज को एक और मार झेलनी पडती है ,सामान्य वर्ग के प्रभावशाली वर्ग के प्रतिभावान प्रतियोगी भारत के सीमित संसाधनों से शिक्षा लाभ लेकर विदेश पलायन करते है जिससे उन पर किया गया पूरा परिश्रम ही बट्टे खाते चला जाता है ।

वास्तविकता तो यह हैं कि यह व्यवस्था कितनी भी बहुधारी तलवार क्यों न हो ,आवश्यक बुराई का रूप ले चुकी है, समाज का हरेक वर्ग चाहता है कि उसे इसका लाभ मिले इसलिये सुझाव यह है प्रतियोगियों को उनके जातीय ,राजनैतिक ,आर्थिक ,धार्मिक इत्यादि स्तरो के आधार पर अतिरिक्त मूल्यांकन किया जाय तो इस समस्या का दीर्घकालीन समाधान निकल सकता हैं।

सोहन नागर, इन्दौर

उंदरा उंदरी को झगड़ो

स्थायी- हम तो तमरी शरण में आया हो, प्रभु गजानंद गजधारी
पेला पूजा करे सब थारी हो प्रभु गजानंद गजधारी
अंतरा

1. उंदरा ने ली लाकड़ी ने उंदरी ने ली बुआरी,
   उंदरा जी ने लाकड़ी से उंदरी की पूजा उतारी,
   म्हारा पे किरपा कर दो भारी हो प्रभु गजानन्द गजधारी।
2. उंदरा उंदरी में झगड़ो हुई गयो राड़ मची बड़ी भारी,
   गणपति देवा न्याय करो,
   इना उन्दरा ने म्हारे मारी,
   हम तो तप पे जावा वारी हो प्रभु गजानन्द...
3. लटपट झटपट चली उन्दरी, अर्जी सुन जो म्हारी
   रोज को रोज म्हने मारे उन्दरो सह करूं हूं भारी
   तमरी मूषक पे सवारी हो प्रभू...
4. गणपति देवा न्याय करी ने साची साची बता जो
   म्हारो घरवालों बैठो दर में उके तम यांपे बुलाजो
   उससे हूँ तो हिम्मत हारी हो प्रभु गजानन्द गजधारी
5. गजानन्दजी ने भेज्या सिपाही, उन्दरा ने लावों बुलाई,
   उन्दराजी की पूँछ पकड़कर लई ने आया सिपाही,
   इनके देखे सभा बीच सारी हो। प्रभु गजानन्द गजधारी
6. क्यों भई उन्दरा बात बताओ, क्यों तने उन्दरी के मारी,
   घर को सगलो काम करे या और लगावे बुआरी,
   या तो लगे थारी घरवारी हो प्रभु गजानन्द गजधारी।टेक।
7. पाँच नाम प्रभु थारा हूँ लू, माला जपतो थारी,
   लूच्ची उन्दरी ने केणो नी मान्यो,
   माला कुतर दी थारी, इका सरू ईके म्हने मारी हो
   प्रभु गजानन्द गजधारी।।टेक।।
8. सबसे धर्मेन्द्र करे निवेदन,
   काम सोची ने कर जो उंदरी सरी म्हारी माता बेन्या,
   उल्टो काम मत कर जो, उन्दरो जीत्यो उन्दरी हारी।
   हो! प्रभु ।।जय श्री कृष्ण।।

-डॉ. धर्मेन्द्र व्यास
अवन्तिपुर बड़ोदिया, शाजापुर
मो.9926761673

मृत्युतिथि पुण्यतिथि तथा पितृपक्ष में श्राद्ध अवश्य करें

आज बदलते समय में जीवन भागमभाग का हो गया है। विशेष रूप से नई पीढ़ी श्राद्ध को ढकोसला समझकर उसे करना व्यर्थ समझते हैं। प्रायः जो लोग श्राद्ध करते हैं वे यथाविधि-विधान, श्रद्धा व भक्ति के साथ अपने परिवार के मृत सदस्यों का श्राद्ध अपना पितृऋण-पितृ कर्त्तव्य समझ कर करते हैं। एक बड़ी संख्या उन लोगों की भी है जो सिर्फ रस्म-रिवाज और खाना पूर्ति एवं समाज के भय-प्रतिष्ठा के कारण श्राद्ध कर अपना भार उतारते हैं। अतः श्रद्धा-भक्ति-प्रेम-पारिवारिक कर्त्तव्य नई पीढ़ी को देना चाहते हैं तो उन्हें श्राद्धकर्म को पूर्ण आस्था, भक्ति एवं शास्त्रोक्त विधि से करना चाहिये। ऐसे किये गये श्राद्ध से परिवार में सुख, शांति, कल्याण प्राप्ति के साथ-साथ नई पीढ़ी को यह कार्य संस्कार के रूप में प्राप्त होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को बड़े ही प्रेम, श्रद्धापूर्वक, शास्त्रोक्त विधि से श्राद्धों को करना चाहिये।

इस व्यस्ततापूर्ण जीवन में यदि शास्त्र सम्मत श्राद्धों को न कर सकें तो उन्हें कम-से-कम क्षयाह-वार्षिक मृत्यु तिथि पर अथवा आश्विन मास के पितृपक्ष में तो अवश्य ही अपने स्वर्गवासी पितृगण का श्राद्ध करना चाहिये। पितृपक्ष में पितरों का विशेष सम्बन्ध होता है। इस दिन धूप देने तथा तर्पण करने का विधान है। भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से पितरों का दिन प्रारम्भ हो जाता है, जो अमावस्या तक रहता है।

मनुस्मृति में वर्णन है कि-मनुष्यों के एक मास के बराबर पितरों का एक अहोरात्र (दिन-रात) होता है। मास में दो पक्ष होते हैं। मनुष्यों का कृष्णपक्ष पितरों के कर्म का दिन और शुक्ल पक्ष पितरों के सोने के लिए रात होती है-

पित्र्यें रात्र्यहनी मास: प्रविभागस्तु: पक्षयो:।
कर्मचेष्टास्वह: कृष्ण शुक्ल: स्वप्नाय शर्वरी।। (मनुस्मृति 1/66)

एक मात्र यही कारण है कि अश्विन मास के कृष्णपक्ष-पितृपक्ष में पितृश्राद्ध करने का विधान है। ऐसा करने से पितरों को प्रतिदिन भोजन मिल जाता है। कर्म करने वाले में पूर्ण श्रद्धा होने पर ही श्राद्ध पूर्ण माना गया है। इसलिये श्राद्ध को संक्षिप्त में इस प्रकार बताया जा सकता है-''अपने स्वर्गवासी पितृगणों के हितार्थ श्रद्धापूर्वक किये जाने वाला कर्म ही श्राद्ध है। हमारी प्राचीन संस्कृति में धार्मिक ग्रंथों में पितृयज्ञ भी बताया गया है।''प्रश्न यह है कि परिवार के माता-पिता, भाई आदि स्वर्गवासी हो गये अब श्राद्ध का क्या औचित्य है? इसका बड़ा ही सरल उत्तर है। श्राद्ध से पितृगण के अतिरिक्त दिव्य पितृगण, विश्वदेवा, अग्निवात, अर्यम्मा आदि पितृ भी प्रसन्न होते हैं, जो कि देवतुल्य है।

राष्ट्र में समय-समय पर राष्ट्र हेतु बलिदान एवं देश सेवा करने वाले महापुरूषों की पुण्यतिथि पूरे राष्ट्र में बड़े जोश से मनाई जाती है, जैसे गांधी पुण्यतिथि, लोकमान्य तिलक पुण्यतिथि एवं पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्यतिथि आदि। हम इन महापुरूषों की पुण्यतिथि मनाकर उनके राष्ट्रप्रेम, बलिदान, त्याग आदि का सम्मान करते हैं। यदि हम अपने ही घर परिवार में अपने माता-पिता, जिन्होंने हमारा लालन-पालन, पोषण किया उनका वर्ष में दो बार (मृत्यु दिवस एवं श्राद्ध तिथि) पर श्राद्धरूपी सम्मान नहीं करते हैं तो पितृ ऋण से हम मुक्त नहीं होंगे तथा हम हमारी नई पीढ़ी को भी गलत सन्देश दे रहें हैं। इससे वे हमारे जाने के बाद हमारा भी श्राद्ध क्या करेंगे? हमारे परिवार के वयोवृद्ध हमसे आशा करते हैं कि उनकी रुग्णावस्था में हम उनकी सेवा करें तथा मृत्यु पश्चात् शास्त्रसम्मत और्ध्वदैहिक कर्म पूरी निष्ठा से करें।

पितृदेव प्रसन्न होने पर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों प्रकार के भरपूर सुख प्रदान करते हैं एवं कुपित होने पर परिवार को नाना प्रकार के कष्ट भोगना पड़ते हैं। राजा राम ने भी वनवास में पिता की मृत्यु पश्चात् श्राद्धकर्म किया था। कूर्म पुराण में वर्णित है कि जो प्राणी विधिपूर्वक, शान्त मन एवं श्रद्धापूर्वक अपने पितरों का श्राद्ध करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर परमधाम में मुक्ति को प्राप्त करता है तथा जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता है।

पितृ का श्राद्ध करने का अधिकारी ज्येष्ठ पुत्र होता है, किन्तु अब संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार व जीवनयापन हेतु अलग-अलग स्थान पर रहने के कारण यह संभव नहीं होता है। अतः अलग रहकर भी यथा शक्ति इस कार्य को करने का प्रयत्न करना चाहिये। श्राद्ध के कारण परिवार वर्ष में एक या दो बार इकट्ठा हो जाता है तथा आपस में मिल बैठ भोजन करने के अतिरिक्त पारस्परिक चर्चा द्वारा एक दूसरे को सुनने समझने व उनकी समस्याओं का निराकरण भी हो जाता है।

श्राद्ध एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण को सम्मानपूर्वक स्वयं निमंत्रित कर विधिविधान से करना चाहिये। संभव हो सके तो जिसका श्राद्ध किया जाता है उनका चित्र रखकर माल्यार्पण एवं पुष्पों से परिवार को श्राद्ध करना चाहिये ताकि आनेवाली पीढ़ी उनको स्मरण कर सुसंस्कारित हो सके।

-डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता 'मानस शिरोमणि'
103 व्यास नगर, ऋषिनगर विस्तार,
उज्जैन (म.प्र.)

बड़ी देर भयी नंदलाला-3

कलयुग की वजह से भगवान की व्यवस्था भी 'ऑटोमेटिक' है

नई पीढ़ी को व्रत, उपवास, ध्यान, पूजा, अर्चना, संध्या, वन्दना, स्त्रोत पाठ, देवताओं के पूजन द्वारा सिद्धि एवं स्वधर्म व संस्कृति की शिक्षा प्रदान करो। जन-जन को शुद्ध नैतिक आचरण, विशुद्ध-बुद्धि व निष्पाप-चिन्तन हेतु प्रेरित करो।

अभी तुम भक्त हो। केवल भक्त ही। क्योंकि तुम मेरी भक्ति करते हो। तुम खुद करते हो और स्वयं को भक्त समझते हो। परन्तु जिस दिन से तुम मेरा कार्य करना शुरु कर दोगे उस दिन से तुम मेरे भक्त बन जाओगे। मेरे प्रिय भक्त बन जाओगे। उस दिन से मैं तुम्हें मेरा भक्त मानूंगा। तुम्हारा ध्यान रखूंगा।

अभी तुम पूजा-पाठ, अर्चना, आरती, ध्यान-संकीर्तन व श्रृंगार में, भोग-महाभोग में, प्रसाद-महाप्रसाद में मेरा ध्यान रखते हो। विविध कार्यक्रमों में व्यवस्था जुटाते हो। सामग्री जुटाते हो। कामकाज करते हो। दौड़ धूप करते हो। जिस दिन से तुम मेरा काम करना शुरु कर दोगे यह विश्वास रखना व देखना। मैं पग-पग पर तुम्हारे लिए कार्य, सहायता, मार्गदर्शन हेतु साथ चलूंगा। तुम्हारा ध्यान रखूंगा। तुम्हारी रक्षा करुंगा।

मेरी पूजापाठ व प्रसन्नता को प्राप्त करके ही लोगों को धन-दौलत, बंगला गाड़ी व पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। किन्तु सब कुछ मिल जाने के बाद लोग इतरा जाते हैं। उन इतरा गये लोगों को सही शिक्षा-दीक्षा व मार्ग दर्शन द्वारा सही रास्ते पर लाओ अन्यथा प्रकृति व काल तो उन्हें दण्ड देगा ही।

तुम सब मिलकर प्रकृति, पृथ्वी, सृष्टि पर सुन्दर वातावरण बनाओ। प्राणियों में प्यार, प्रेम, व पोषण के गुणों व भावनाओं का विकास करो।

पृथ्वी पर मनुष्यों के रूप में तुम मेरे

पाँच अरब पुत्र मौजूद हो। तुम सब मिलकर शास्त्रोचित व सनातन धर्म की मर्यादा के अनुकूल कर्म करो।

पृथ्वी पर तुम पाँच अरब मनुष्यों, चौरासी लाख योनियों में पड़े हुए असंख्य-असंख्य प्राणी, यक्ष, किन्नर, नाग, गंधर्व, भूत, प्रेत सभी मुझे जरा-जरा सी बात पर पुकारने लगते हैं। भगवान यह करो, भगवान वह करो। फिर इस ब्रह्माण्ड में ऐसी एक नहीं करोड़ों पृथ्वियाँ व सृष्टियाँ हैं। मैं अकेला कहाँ-कहाँ भागता फिरता तुम सबकी मांगे व इच्छाएँ पूर्ण करता रहूँगा। यह सच है कि मैं सर्व समर्थ हूँ। मैं सब कुछ कर सकता हूँ। मेरे एक नहीं अनेकों स्वरूप हैं। असंख्य स्वरूपों द्वारा, संकल्पों द्वारा एक ही क्षण में, एक ही पल में असंख्य व अलग-अलग प्रकार के अनेकों कार्य कर सकता हूँ, परन्तु इस परम् सत्य को समझो कि मैंने सब कुछ 'ऑटोमेटिक' कर रखा है।

पृथ्वी पर तुम पाँच अरब मनुष्यों, चौरासी लाख योनियों में पड़े हुए असंख्य-असंख्य प्राणि, यक्ष, किन्नर, नाग, गंधर्व, भूत, प्रेत सभी मुझे जरा-जरा सी बात पर पुकारने लगते हैं।

पृथ्वी पर अभी कलियुग चल रहा है। आटोमेटिक का अर्थ सभी समझते हैं। स्वतः संचालित व्यवस्था में प्राणी क्रमिक उन्नति करते हुए चौरासी लाख विविध पशु-पक्षी व वनस्पतियों की योनियों के कष्ट सहन करने के बाद शुद्ध होकर मनुष्य देह प्राप्त करते हैं। उसमें भी अपने-अपने कर्मों के हिसाब से श्रेष्ठ वर्ण, धर्म व कुल में जन्म पाते हैं।

मेरी 'ऑटोमेटिक' सृष्टि में प्रतिदिन सूर्य देवता अपना कार्य करते हैं। इस जगत को प्रकाश व ऊष्मा प्रदान करते हैं। ऋतु परिवर्तन कराते हैं। समुद्र, नदियाँ व पर्वत अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। पृथ्वी-मिट्टी, वायु, जल, आकाश, अग्नि अपने-अपने स्वाभाविक गुण धर्म का पालन कर रहे हैं। आटोमेटिक सृष्टि में आटोमेटिक दिन-रात हो रहे हैं। मौसम व ऋतु चक्र चल रहा है। बादल पानी भरकर ला रहे हैं व वर्षा कर रहे हैं। सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे एवं वनस्पतियां अपने-अपने स्वभाविक गुण-धर्म व प्राकृतिक स्वरूप के अनुरूप जीवन जी रहे हैं व कार्य कर रहे हैं। बस एक केवल यह मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो मेरी इस ऑटोमेटिक व्यवस्था में व्यवधान उपस्थित करता है। इसे सर्व गुणसम्पन्न तथा विद्या, विवेक, बुद्धि सब कुछ देकर भेजता हूँ, फिर भी यह बार-बार धर्म, स्वधर्म, प्राणीधर्म, मानव-धर्म, प्रकृति धर्म, स्वाभाविक धर्म के मार्ग से बार-बार भटक जाता है। इस हेतु भी मैंने ऑटोमेटिक व्यवस्था कर दी है। देह को

ही 'मैं' मानने वाले अहंकारी मनुष्यों, कुमार्ग पर चलने वाले दुर्बुद्धि मनुष्यों, अल्प बुद्धि वाले मनुष्य समुदाय आदि के कल्याण हेतु सृष्टि में सज्जनों, साधुओं, सन्तों, सद्पुरुषों, सिद्ध-पुरुषों व मन्दिरों, देवस्थानों, धर्मस्थानों की व्यवस्था की है। ताकि इन कुमार्ग-गामी लोगों को ठीक किया जा सके।

इस प्रकार मैंने तो सुब कुछ 'सेट' कर दिया है। सब कुछ 'ऑटोमेटिक' कर दिया है। जो धर्म विरुद्ध व शास्त्र विरुद्ध आचरण कर रहे हैं वे अपने लिए पशुयोनियों, वनस्पति योनियों में जाने का मार्ग बना रहे हैं। पिछले जन्मों के श्रेष्ठ कर्मों के फलस्वरूप जिन्हें धन-दौलत व पद-सम्पदा प्राप्त हुई है उसे शास्त्रविरुद्ध तरीके से खर्च कर वे लोग अपने पुण्य कर्मों को क्षीण कर रहे हैं।

धर्मात्मा लोगों! तुम दुखी, परेशान व निराश मत होना। जो कोई लोग तुम्हें किसी प्रकार दुःख पहुँचा रहे हैं वे अगले जन्मों में घोड़ा, कुत्ता, गधा या नौकर, सेवक बनकर यह चढ़ाया हुआ कर्जा उतारेंगे। जब तक कर्ज नहीं उतारेंगे भटकते रहेंगे। विभिन्न योनियों में भटकते हुए आपको खोजते रहेंगे, ताकि आपका कर्जा उतार सके।

धर्मात्मा लोगों! तुम तो निरन्तर पुण्य कर्मों की पूंजी बढ़ाने हेतु पृथ्वी, प्रकृति, सृष्टि व मानवता के लिए सर्वोपयोगी व सर्वकल्याणकारी कर्मों में जुटे रहो। यह सृष्टि की व्यवस्था ऑटोमेटिक है। इसमें श्रेष्ठ कर्म कर तुम उन्नति, समृद्धि, प्रसिद्धि व मुक्ति को प्राप्त करो। श्रेष्ठ कर्मों को करते हुए, पुण्य कर्मों की पूँजी बढ़ाते हुए क्रमिक रूप से चौदह लोकों की उन्नति करते हुए मुझसे आ मिलो। मुझमें समा जाओ। मैं तुम्हारे स्वागत के लिए तत्पर बैठा हूँ। युगों-युगों से बैठा हुआ हूँ। युगों-युगों तक बैठा रहूँगा। तुम श्रेष्ठ मार्ग पर चल पड़ो। श्रेष्ठ लोगों को संगठित करो। उन्हें श्रेष्ठ कर्मों की ओर प्रवृत्त करो। क्रियाशील बनाओ।

इसी के साथ मेरी विचारतन्द्रा में व्यवधान उपस्थित हुआ एवं भगवान की छवि अनन्त आकाश व निखिल ब्रह्माण्ड में विलीन हो गई।

यह अद्भुत, अलौकिक, अनहोनी, अद्वितीय व आश्चर्यजनक घटना मेरे मानस पटल पर घटी। लौकिक जगत का मैं तुच्छ मनुष्य इस दिव्य अलौकिक घटना से हतप्रभ, स्तम्भित व कम्पायमान हो गया। स्वप्न के सदृश ऑटोमेटिक चल रही इस दुनिया को देखकर व इस दिव्य घटना के प्रभाव से मेरी विचार तन्द्रा में बेहोशी छाने लगी। ईश्वर की कृपा से तभी एक चमत्कार हुआ किसी ने मेरी बेहोशी दूर करने के लिए मुझे झिझोड़ा, झकझोरा व हिलाया-डुलाया। कोशिश कर आँखें खोलकर देखा तो सामने सद्गुरुदेवजी खड़े हुए मुस्कुरा रहे हैं। अपना एक हाथ मेरी ओर बढ़ाते हुए कह रहे हैं चल, आ-जा। भगवान ने जो कुछ कहा है, उस पर अमल नहीं करेगा क्या? कथनी और करनी के अन्तर को नहीं समझेगा? चल, हाथ पकड़, आ जा, मैं तुझे दिखाता हूँ धर्म, मानवता, सेवा, सद्भावना व सत्कर्मों का स्वर्णपथ एवं मोक्षमार्ग तथा परमपद पाने का द्वार।

-नन्दकिशोर प्रसाद गुप्ता
रतलाम

मरने के बाद प्राणी प्रेत कहलाता है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष त्रयोदशाह (तेरहवीं का दिन) को पिंडज शरीर धारण करके भूख-प्यास से पीड़ित प्रेत यमदूतों के द्वारा महापथ पर लाया जाता है। इस महापथ की दूरी मृत्युलोक से यमलोक के मध्य 86 हजार योजन की है। जो सुकृती एवं धर्मात्मा होते हैं। उनका मार्ग सब प्रकार से सुन्दर एवं सुखमय रहता है, उन्हें उस मार्ग में कोई कष्ट नहीं होता, लेकिन जो प्रेत पापी होते हैं उनका मार्ग शीत, ताप, शंकु के आकार का चुभने वाला, मांस खाने वाले जंतुओं तथा अग्नि से व्याप्त रहता है असिपत्रवन से व्याप्त उस मार्ग में इतने क्लेश रहते हैं कि भूख प्यास से पीड़ित प्रेत को सदैव यमदूत दुःख देते हैं।

धर्मात्माओं के लिये यमलोक का मार्ग सुगम

प्रेत प्रतिदिन 247 योजन चलता है। यमदूतों के पाश से बंधा हा-हा करके विलाप करता हुआ वह प्रेत अपने घर को छोड़कर दिन रात चल कर यमलोक पहुँचता है। 17 दिनों तक यमदूत उसे वायुमार्ग में खींचते रहते हैं 18वां दिन रात पूर्ण होने पर पहले वह याम्यपुर पहुँचता है, जहाँ प्रेतों के महानगण रहते हैं वहाँ पुष्पभद्रा नदी तथा एक वटवृक्ष है। वहाँ यमदूत प्रेत को विश्राम करने का समय देते हैं। प्रेत वहाँ दुःख से कातर होकर अपने सगे-संबंधियों से प्राप्त होने वाले सुख का स्मरण और करुण विलाप करता है। उस समय वह धन, स्त्री, पुत्र, घर, सुख, नौकर और मित्र तथा अन्य सभी के विषय में सोचता है। तब यमदूत उससे कहता है कि हे प्रेत! कहां धन है, कहां पुत्र है, कहां स्त्री है, कहां घर है, और कहां तू इस प्रकार का दुःख झेल रहा है? अब तू चिरकाल तक अपने कर्मों से अर्जित पापों का भोग कर और महापथ पर चल यमदूत उसे मुदरों से मारते हैं।

वहाँ वह भू-लोक में पुत्रों द्वारा दिये गये मासिक पिंड को खाता हैं फिर वहाँ से वह सौरिपुर के लिए चल देता है, वहाँ कालरुप धारी जंगम नामक राजा को देख प्रेत भयभीत हो जाता है और कुछ विश्राम करना चाहता है। वहाँ वह त्रैपाक्षिक श्राद्ध में दिये गये अन्न और जल का उपभोग कर नग्रेंद्रभवन नगर के लिये चल पड़ता है। महापथ पर चलते हुए कष्टों से दुखित होकर वह बार-बार रोता है। 2 महीने बाद वह नग्रेद्रभवन नगर में पहुँचता है। जहाँ वह बंधु-बांधवों द्वारा दिये गये अन्न और जल खाता-पीता है। तीसरे महिने वह गंर्धवनगर पहुँचता है। तीसरे मास में दिये गये श्राद्ध पिंड का भक्षण कर चौथे मास में शैलागम नामक नगर पहुँचता है जहाँ उसके उपर पत्थरों की वर्षा होती है। यहां वह चौथे मास में दिये गये श्राद्ध-पिंड को खाकर संतुष्ट होता है।

पांचवे मास में कौच्चपुर जाता हैं जहां उस मास में दिये गये श्राद्ध-पिंड को खाता है। छठे मास में क्रूरपुर पहुँचता है जहाँ श्राद्ध-पिंड को खाकर उसकी संतृप्ति होती है। इसके बाद वह विचित्रभवन पहुँचता है जहाँ का राजा विचित्र यमराज का छोटा भाई सौरि वहां के राज्य पर शासन करता है। साढ़े पांच माह के बाद उनषाण्मासिक श्राद्ध होता है, जिसके पिंड का प्रेत उपभोग करता है मार्ग में बार-बार भूख उसको पीड़ा पहुँचाती है वह मार्ग में विलाप करता है कि क्या कोई पुत्र या बांधव है जो मेरे मरने पर शोक सागर में गिरते हुए मुझे सुखी नहीं कर रहा है इसी समय वहां पर उसके सामने हजारों मल्लाह आकर कहते हैं कि सौ योजन विस्तृत मवाद और रक्त से पूर्ण विभिन्न प्रकार की मछलियों से व्याप्त तथा नाना प्रकार के पक्षीगणों से आवृत महावैतरणी नदी को पार करने की इच्छा करने वाले तुम्हें हम लोग सुखपूर्वक तारेंगे यदि तुमने मर्त्यलोक में गोदान किया है तो नाव से पा हो जाओ।

अतः मनुष्य को चाहिये कि मरने से पहले वैतरणी व्रत अर्थात् गोदान अवश्य करें। गोदान पापी के समस्त पापों को

समाप्त करके उसे विष्णुलोक ले जाता है, लेकिन जिसने दान नहीं किया है वह प्रेत उसी नदी में जाकर डूबने लगता है। डूबने के समय वह अपने आपकी निंदा करता है। इस समय यमदूत उसे हृदय में मारता है। प्रेत वैतरणी के दूसरे तट पर दिये गये पाण्मासिक श्राद्ध के घटादिक दान एवं पिंड को भोजन कर आगे बढ़ता है। इसके बाद प्रेत एक दिन-रात में 247 योजन की गति से चलता है। सातवां मास आने पर वह ब्रह्मपद नामक नगर में पहुँचता है। श्राद्ध में दिये गये दान को खाकर आठवे मास की समाप्ति पर उसकी यात्रा दुखदपुर और नानाक्रंदनपुर की ओर होती है। भीषण दारुण करते हुए नानाक्रंदन के गणों को देख कर वह प्रेत स्वयं शून्य हृदय एवं दुःखित होकर जोर-जोर से रोने लगता है। फिर आठवें मास के श्राद्ध को खाकर आनंदित होता है। इसके बाद वह तत्पपुर (सुतप्तभवन) चला जाता है।

सुप्तभवन पहुँचकर वह प्रेत नवें मास के श्राद्ध में पुत्र द्वारा किये गये पिंडदान एवं कराये गये ब्राह्मण भोजन को खाता है। दसवें मास में वह रौद्रनगर पहुँचता है। वहाँ दसवें मास के श्राद्ध का भोजन कर आगे स्थित पयोवर्षण नामक पुर के लिये चल पड़ता है।

पयोवर्षण पहुँचकर ग्यारहवें मास के श्राद्ध का भोजन करता है। वहाँ मेघों की भारी जलवर्षा से प्रेत को बहुत क्लेश होता है। फिर आगे की ओर बढ़ता हुआ वह प्रेत कड़कती हुई धूप और प्यास से व्यथित हो जाता है। वह दुःख से कराहता हुआ बारहवें मास के श्राद्ध में जो दान दिया गया है। उसका भोग करता है। पुनः वर्ष समाप्ति के कुछ दिन शेष रहने पर वह शीताढयपुर जाता है। जहाँ भारी हिमपात होता है। वहाँ की ठंड से व्यथित और भूख से व्याकुल होकर वह इस आशा से चारों और देखने लगता है कि क्या मेरा कोई बंधु बांधव है जो मेरे इस दुःख को दूर कर दे। उस समय यमदूत प्रेत से कहते हैं कि तेरा पुण्य वैसा कहां है कि कोई इस कष्ट में सहायता कर सके।

प्रेत की बात सुनकर वह हाय दैव! करता है। शीताढयपुर से आगे बहुधर्मभीतिपुर पड़ता है जो 44 योजन क्षेत्र में फैला हुआ है और जहां गंधर्व तथा अप्सराओं का निवास है वहां 84 लाख मूर्त एवं अमूर्त प्राणी भी निवास करते हैं और श्रवण कहलाते हैं। वे प्राणियों के शुभाशुभकर्म का बार-बार विचार करके उसका वर्णन करते हैं। मनुष्य जो कहते हैं उन सभी बातों का ये ही ब्रह्माजी के पुत्र श्रवणदेव चित्रगुप्त तथा यमराज से बताते हैं वे दूर से ही सब कुछ देखने और सुनने में समर्थ है। इस प्रकार के कर्म करने वाले एवं स्वर्गलोक, भूलोक तथा पाताल में संचरण करने वाले वे श्रवण आठ है। उन्हीं के समान उनकी अलग-अलग श्रवणी नामक उग्र पत्नियां भी हैं उनकी शक्ति भी वैसी ही है जैसी पतियों की वे मर्त्यलोक के अधिकारी के रूप में हैं। व्रत, दान, स्तुति से जो उनकी पूजा करता है। उसके लिए वे सौम्य और सुखद मृत्यु देने वाले हो जाते हैं।

इस प्रकार मरने के बाद मानव प्रेत का रूप धारण कर यमलोक तक यात्रा करता है।

-प्रो.आर.के.शर्मा
मातृछाया 74, आनंदनगर, खण्डवा
मो. 9424549184

ग्रामीण बच्चों की शिक्षा हमारा मुख्य उद्देश्य

जय हाटकेश वाणी परिवार ने सदैव रचनात्मक एवं समाजहित के कार्य को बढ़ावा दिया है। इसी वर्ष से हमने ग्रामीण बच्चों हेतु इन्दौर में निःशुल्क रहवास एवं अन्य व्यवस्थाएं कराने का कार्य शुरु किया है।

प्रथम वर्ष में ही इस प्रकल्प को भारी प्रतिसाद मिला है। जय हाटकेश वाणी में इस सम्बंध का मेटर प्रकाशित होने के पश्चात् ग्रामीण बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने सम्पर्क किया। इस वर्ष एक बालिका जो सीए की इंट्रेस परीक्षा सीपीटी करना चाहती थी, उज्जैन जिले के एक गाँव की यह बालिका इन्दौर आई तथा उसे विजय नगर में निःशुल्क रहवास की सुविधा दी गई तथा नाहटा इंस्टीट्यूट के सीए असीम त्रिवेदी के सहयोग से शुल्क में आधी रियायत दिलाई गई। इस शुल्क में 5000 रुपये भुगतान जय हाटकेश वाणी परिवार ने किया। यदि और भी ग्रामीण बालिकाएं कामर्स या सीए करना चाहे तो मेरे निम्नलिखित मोबाईल नं. पर सम्पर्क कर सकते हैं। खासकर यदि बालिकाएं सीए का प्रोफेशन चुनती है तो उनके लिए बहुत लाभदायक है, यदि उनका विवाह अन्य शहर में तय होता है तो भी सीए प्रोफेशन की हर जगह जरूरत रहती है।

आगामी वर्ष के लिए सीए अध्ययन के लिए और भी बालिकाएं सम्पर्क करें। निःशुल्क रहवास के साथ और भी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकती है। मैं बता दूं कि ग्रामीण क्षेत्र के कुछ और बच्चों ने हमसे सम्पर्क किया था जो इन्दौर में आर्टिकलशिप कर रहे हैं, या अन्य संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, लेकिन विजय नगर की दूरी की वजह से वे निःशुल्क रहवास की सुविधा प्राप्त नहीं कर पाए। हमारा निवेदन उन ग्रामीण बालिकाओं से है जो सीए करना चाहती है, वे एक साथ पढ़ाई एवं इंस्टीट्यूट तक साथ-साथ जाने की सुविधा का लाभ ले सकती हैं, वे हमसे अवश्य सम्पर्क करें।

-दीपक शर्मा मो. 9425063129

अक्टूबर माह का भविष्यफल

मेष- मौसम परिवर्तन संबंधी परेशानियों से रूबरू होना पड़ सकता है। सुबह व्यायाम करें। इस महीने जीवनसाथी और बच्चों के साथ कहीं बाहर घूमने की योजना सफल रहेगी। उनका व्यवहार आपको सुकून देने वाला रहेगा। इस महीने अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं। फिजूलखर्ची से बचें। अगर आप किसी से प्यार का इज़हार करना चाहते हैं तो इस महीने कर दें, सफल होने की संभावना अधिक है। यह महीना छात्रों के लिए विशेष कामयाबी भरा साबित हो सकता है। कम मेहनत का भी अधिक फल मिलेगा।

वृषभ- इस महीने स्वास्थ्य संबंधी छोटी-मोटी परेशानियां हो सकती हैं। अनिंद्रा और तनाव के कारण स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। दांपत्य जीवन के प्रति उदासीनता बढ़ सकती है। मुश्किल घड़ी में दोस्त और दुश्मन में पहचान करने में गलती ना करें। सकारात्मक व्यवहार बनाए रखें, कठिन घड़ी बीत जाएगी। इस महीने सितारे आपके साथ हैं। कारोबार में बढ़ोत्तरी होने और आय के नए स्त्रोत मिलने की संभावना है। यह महीना रिश्तों के लिहाज से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। रिश्तों के भंवर में फंसने से बचें। समय अनुकूल है, थोड़ी सी मेहनत से ही पूरा फल मिलने की उम्मीद है। आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मिथुन- सेहत का ध्यान रखें और लंबी यात्रा पर जाने से बचें। मानसिक तनाव से बचने के लिए योग और ध्यान का रास्ता अपनाएं। इस महीने परिवार में सभी खुश रहेंगे। कहीं घूमने या पिकनिक का प्लान बना सकते हैं। अनावश्यक विवादों से बचें। पूंजी निवेश करने के लिए यह महीना शुभ है। शेयर खरीदने या नई प्रॉपर्टी लेने के बारे में सोच सकते हैं। इस महीने प्रेम प्रसंगों को लेकर सावधान रहें, अन्यथा अनावश्यक तनाव बढ़ सकता है। लंबे समय से आप परीक्षा या टेस्ट के नतीजों का इंतजार कर रहे थे वह इस महीने आ सकते हैं। किसी जॉब इंटरव्यू का नतीजा भी आ सकता है।

कर्क- सेहत के लिए समय अनुकूल नहीं है। सावधानी बरतने से समस्या कम हो सकती है। पेट की बीमारियां हो सकती हैं। पारिवारिक माहौल सामान्य रहेगा। मन शांत रहेगा। मित्रजनों से मनमुटाव होने की आशंका है। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। स्टॉक मार्केट से जुड़े लोग निवेश करते समय धैर्य से निर्णय लें। इस महीने आपकी लव लाइफ बेहद मजेदार रहेगी। अकेलापन खत्म हो सकता है और रिश्तों में मजबूती आएगी। इस महीने इंजीनियरिंग से जुड़े छात्रों को विशेष लाभ होने की संभावना है। करियर को एक नई दिशा देने के लिए यह समय अच्छा है।

सिंह- बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। बुखार या मामूली चोटों का भी उपचार समय पर करें। घर में सकारात्मक माहौल रहेगा। लेकिन विरोधियों से सावधान रहें। कोई आपको आघात पहुंचा सकता है। प्रॉपर्टी या शेयर को बेचने सम्बन्धी मामलों में सतर्कता बरतें। जल्दबाजी में कोई बड़ा निर्णय न लें। गलतफहमी का कोई इलाज नहीं होता। इस महीने रिश्तों में गलतफहमी पालने से बचें। इस महीने आप अपनी शिक्षा या करियर से जुड़ा कोई अहम फैसला ले सकते हैं। यह फैसला आपका आने वाला कल तय करेगा इसलिए यह फैसला सोच-समझकर लें।

कन्या- आपकी लापरवाही इस महीने आपको भारी पड़ सकती है। समय पर दवाई लेना ना भूलें अन्यथा अधिक बीमार हो सकते हैं। जीवनसाथी के साथ सुख और सहयोग में वृद्धि होगी। दोस्तों से मनमुटाव हो सकता है। वाणी पर संयम रखें। इस महीने जायदाद संबंधी लिए गए फैसले अहितकारी साबित हो सकते हैं। ऐसे फैसलों को कुछ समय के लिए टाल दें। इस महीने अपनी वाणी पर संयम रखें, खासकर साथी से बातचीत

करते समय। यह माह छात्रों के लिए सामान्य रहेगा। महीने की शुरुआत में एकाग्रता बनाने में दिक्कत आएगी लेकिन महीने के अंतिम दिनों में सब ठीक हो जाएगा।

तुला- इस महीने आपको गैस, बदहजमी आदि का सामना करना पड़ सकता है। बाहर का तला-भुना ना खाएं। इस महीने आपके मित्र आपकी आर्थिक समस्या का हल निकाल सकते हैं। कर्ज लेने से बचें। शेयर बाज़ार में बहुत मुनाफा नहीं होने वाला है। प्रॉपर्टी से आपको लाभ हो सकता है। व्यापार से जुड़े लोगों के लिए भी महीना सामान्य रहने की संभावना है। रिश्ते और प्यार= इस महीने अपने रिश्ते को मजबूत करने पर ध्यान दें। अपने पार्टनर की भावनाओं की कद्र करें अन्यथा दूरियां बढ़ सकती हैं। यह माह छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। एकाग्रता ना बना पाने के कारण मानसिक तनाव हो सकता है।

वृश्चिक- इस माह स्वास्थ्य के प्रति जागरुक रहें, किसी पुरानी बीमारी की वजह से आपको परेशान होना पड़ सकता है। इस महीने किसी बुजुर्ग की बातों से आपका मन दुखी हो सकता है। बड़ों की बात को दिल पर लेने की जगह उनकी बातों में छुपी शिक्षा को ग्रहण करने की कोशिश करें। इस महीने शेयर मार्केट में निवेश करना शुभ साबित हो सकता है। लेकिन इस समय किसी को भी पैसा उधार ना दें। अपने साथी के साथ समय बिताने से रिश्ता और मधुर हो सकता है, लेकिन यदि आप समय नहीं देते तो बात बिगड़ भी सकती है। यह महीना छात्रों के लिए अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों को कम मेहनत में भी अच्छे परिणाम मिलने की संभावना है।

धनु- महिलाओं के लिए यह महीना कष्टकारी हो सकता है। पुराने दर्द उभर सकते हैं। परिवार में सब सामान्य रहेगा। किसी पुराने दोस्त से मुलाकात हो सकती है। आय के नए स्त्रोत बनेंगे। वाहन खरीदने की योजना बना सकते हैं। पैसों के लेन-

देन में सतर्कता बरतें। यह महीना प्रेम-प्रसंगो के लिए अनुकूल नहीं है। प्रेम-संबंधों में दूरियां बढ़ सकती हैं। यह वक़्त सोच-समझकर और शांत होकर चलने का है। यह महीना छात्रों के कठिन साबित हो सकता है। कठिनाइयों को दूर करने के लिए किसी सीनियर की मदद लें।

मकर- यह महीना स्वास्थ्य के लिहाज से सामान्य रहेगा। क्रोध ना करें और मन को शांत रखें। इस महीने अपने दांपत्य जीवन को सुधारने की कोशिश करें। परिवार के लिए समय ना निकाल पाने की वजह से आप खुद भी परेशान रह सकते हैं। महीने के शुरुआत में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। आय कम और व्यय अधिक होगा लेकिन महीने के अंत में कहीं से रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। इस महीने आप अपने कार्य में व्यस्त होने के कारण अपने पार्टनर को समय नहीं दे पाएंगे। हालांकि आप चाहे तो उनकी नाराजगी दूर करने के लिए मोबाइल और इंटरनेट का सहारा ले सकते हैं। इस महीने आपको अधिक मेहनत करनी पड़ेगी लेकिन इस मेहनत का आपको फल भी मिलेगा। लक्ष्य की दिशा में एकाग्र होकर प्रयास करें।

कुंभ- इस महीने आपकी सेहत अच्छी रहेगी। मानसिक शांति मिलेगी। इस महीने संतान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने के आसार हैं। दोस्तों और परिजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। इस महीने कोर्ट-कचहरी के चक्कर लग सकते हैं। प्रॉपर्टी बेचने या खरीदने के लिए भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस महीने किसी खास शख्स से आपकी मुलाकात हो सकती है जिसके साथ आपका रिश्ता काफी लंबे समय तक रहेगा। बेरोजगार या नौकरी बदलना चाहते हैं, तो समय अनुकूल है। अच्छी जॉब के ऑफर आ सकते हैं।

मीन- अधिक कार्य करने की वजह से इस माह आपका स्वास्थ्य ख़राब हो सकता है। समय पर आराम करें और खानपान का ख्याल रखें। पारिवारिक माहौल सामान्य रहेगा। परिवार के लोग आपसे खुश रहेंगे और घर में शांति बनी रहेगी। इस महीने आर्थिक मामलों में दूसरों की सलाह से आपको नुकसान हो सकता है। महीने की शुरुआत में प्रेम संबंधों में उदासीनता बनेगी लेकिन मास के उत्तरार्द्ध तक संबंधों में सकारात्मक प्रभाव दिखाई देगा। यह महीना छात्रों के लिए नॉर्मल रहेगा। बेरोजगारों को अभी और भागदौड़ करनी पड़ सकती है।

स्मृति विशेष- अजातशत्रु श्री रामचन्द्र राव मंडलोई

इस धरा पर पूर्व में बीत गए सतयुग से, त्रैतायुग व द्वापरयुग एवं आज के इतिहास तक की स्मृतियां अनेकों ग्रंथों में अंकित है। पृष्ठों का अध्ययन पठन-पाठन हमें आनन्द, वाद-विवाद या ज्ञान के सागर में सिक्त होने का अवसर प्रदान करते हैं।

आज मैं अपनी स्मृति में 'फ्लेश बेक' में विहरते विहरते अपने बाल्यकाल से लेकर अब तक के जीवन से पुनः दो चार हुई। मेरी बुद्धि एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी मेरे फूफाजी की स्मृतियों में स्थिर हो गई। मैं चाहती हूँ कि उनकी प्रतिष्ठा को आप समाज जन के साथ व्यक्त कर गर्व अनुभव करूं।

गीता में भगवान का कथन है

कर्तव्यानीति में पार्थः
निश्चितं मतमुत्तमम्

ऐसे उपदेश को चरितार्थ करने वाले खण्डवा के नागर समाज के अग्रणी मंडलोई परिवार से कौन परिचित नहीं होगा, परम शिव भक्ति इस परिवार की सम्पति रही है, जो आज भी है। जिसने पूज्य श्री भगवंतराव मंडलोई (काका साहेब) मुख्यमंत्री हम को दिए, उनके छोटे भाई श्री त्र्यम्बकराव मंडलोई परम भक्त 'समाजसेवी' परदुख कातर व्यक्तित्व के धनी समाज को मिले जो सौभाग्य से मेरे फूफाजी थे।

परिवार बड़ा होने से मेरे फूफाजी परिवार के श्री जमीदार माधवरावजी मंडलोई के यहाँ दत्तक लिए गए। धन धान्य जमीन जायदाद के ऐश्वर्य में रह कर भी सहज मानव जीवन उनके स्वभाव की विशेषता थी। बालक से लेकर बड़े तक उनके सामीप्य व संभाषण या अनुराग के लिए लालायित रहते थे। समाज में शादीब्याह, मंगल अवसर या भोज आदि के अवसर पर अपनी उपस्थिति व व्यवस्था अपना नेतृत्व बिना संकोच हर छोटे-बड़े समाजजन को गौरवान्वित करता था।

मेरे फूफाजी की ऐसे तो इतनी यादें हैं कि एक पुस्तक लिखी जा सकती है, परन्तु उनके कुछ प्रेरणादायक कार्य जो निश्चित ही अविस्मरणीय है। रंग पंचमी का उत्सव दिनभर अपने घर छोटे-बड़े के साथ मनाना, हलवा प्रसाद ठंडाई, आदि का आकर्षण उत्सव को खूब आकर्षक रंगीनी प्रदान करता था।

स्थूलकाय होते हुए भी खंडवा के सारे मंदिरों का पैदल दर्शन उनका नित्य क्रम था। मार्ग में छोटे-बड़े परिचित, अपरिचित जरूरतमंद से संवाद उनके द्वारा जीवंत संवाद उनके मिलनसार होने की गवाही देता था।

जमींदारी में प्राप्त गांव के उनके कृषक परिवार यदा-कदा उनके गान करते नहीं थकते थे। उनकी मातृ भक्ति भी इतनी भावुकता जगाती है कि जिला सहकारी बैंक के सचिव पद पर रहने तक दर्शनार्थ घर से निकलते समय अपनी माँ पूज्य 'माय' से आज्ञा लेना व चरणस्पर्श करना कभी नहीं भूले।

ऐसी विभूति की याद गुरुपूर्णिमा जो उनका जन्मदिन है के आगमन पर बरबस आँखें नम कर देती है।

उनका सरल जीवन
निर्मल मन जन सोई मोही पावा
मोही कपट छल छिद्र न भावा
को चरितार्थ कर गया।

-किरण रविशंकर नागर
रतलाम

आखिर क्यों रविवार को ही मनाई जाती है छुट्टी

सन-डे यानी छुट्टी का दिन। मौज-मस्ती का दिन। आराम का दिन। इस दिन दुनियाभर में कोई भी इंसान काम करना पसंद नहीं करता। पर क्या आपने कभी सोचा है कि आख़िर रविवार को ही छुट्टी क्यों मनाई जाती है क्या इसके पीछे कोई विशेष कारण है कि दुनिया के ज्यादातर देशों में इसी दिन छुट्टी मनाई जाती है और इस दिन स्कूल, कॉलेज, कार्यालय व अन्य संस्थान बंद रहते हैं! हिंदी कैलेंडर के अनुसार रविवार से सप्ताह की शुरुआत मानी जाती है। वहीं इंग्लिश कैलेंडर के अनुसार रविवार सप्ताह का अंतिम दिन होता है। हिंदी पंचांग के अनुसार रविवार सूर्य का दिन है और इस दिन सूर्य सहित सभी देवी-देवताओं की आराधना का विधान है। हिंदू शास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि रविवार सप्ताह का प्रथम दिन होता है और इस दिन पूजादि करने से पूरे सप्ताह मन शांत रहता है, सभी कार्य बिना किसी परेशानी के सफल हो जाते हैं। इस दिन सभी लोगों से धार्मिक कार्य आदि करने के उद्देश्य से ही रविवार को अवकाश घोषित किया गया। ताकि व्यक्ति के दिमाग़ पर कार्य का दबाव न रहे। वहीं इंग्लिश कैलेंडर के अनुसार सन-डे सप्ताह का अंतिम दिन होता है। पूरे सप्ताह के कार्य करने के बाद वीकएंड में शरीर और दिमाग को आराम देने के उद्देश्य से रविवार को ऑफ रखा जाता है ताकि व्यक्ति से काम का प्रैशर हट जाए और फिर से रिफ्रैश होकर नए सप्ताह में नई ऊर्जा के साथ कार्य कर सके। इसी उद्देश्य की वजह से दुनियाभर में रविवार को अवकाश रखा जाता है। यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी राज से ही भारत में रविवार की छुट्टी का चलन शुरू हुआ हो।

प्रथम पुण्य स्मरण
9 अक्टोबर

तारीफ आपकी निकली है दिल से, आई है लब पर बनकर कव्वाली,
वंश में एक ही भागीरथ हो आप, मजबूत गहरी नींव हो आप।
लगता नहीं कि हमसे दूर हो आप, आज भी हमारे हृदय में बसे हो आप,
संघर्ष, परिश्रम, सेवा, त्याग ईमानदारी के पूजारी,
जिनके आदर्श ही हमारे लिये गौरव है।

पूज्यनीय बाबूजी श्री रामगोपालजी नागर

पुत्री-दामाद- दुर्गेश-अशोक नागर, संतोष-विवेक मेहता, वीणा-प्रदीप नागर, वर्षा-जयदेव भट्ट, प्रीति-संजय नागर, वंदना-संजय जोशी, पूजा-विशाल शर्मा, ऋद्धा-सोनूजी, शशीकला-जगदीश नागर, कलावती नागर, कुसुम-दिलीप मेहता।

गीता देवी नागर (पत्नी), शांतादेवी रावल (भाभी माँ), **भ्राता-बहू-** पुरुषोत्तम-पुष्पा रावल, भरत-निर्मला रावल, मुरलीधर-गीता रावल, उमाशंकर-चारु मित्रा रावल, **भानेज-** शरद शर्मा, बसंत शर्मा, हेमंत शर्मा, दीपक शर्मा, पवन शर्मा, मनीष शर्मा

पुत्र एवं पुत्रवधू- कैलाश-सौ.प्रभा रावल, राजेश-कल्पना रावल, दिनेश-आशा रावल, आदर्श-सुनीता रावल, आनंद-शालिनी रावल, बालकृष्ण-सुनीता रावल, गौरव-विक्की रावल, हर्ष-राधिका रावल, रितेश-रिद्धीमा रावल, संजय-सीमा रावल

नाती-पोते- श्री अंकित, आयुषी, समृद्धि, मानस, मिली, अवनि, ओशो, आस्था, छोटी, अर्थव, आर्य, सारांश, सुहानी, भव्य, उत्कर्ष, अश्विनी, पूजा, आरती।

सौजन्य से- सौ.दुर्गेश (मधु) नागर एवं समस्त रावल नागर परिवार इन्दौर-उज्जैन।

पुण्यतिथि

स्व.पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1 अक्टूबर

श्रीमती कोमल सुरेन्द्र शर्मा
मुरलीधर-शारदा शर्मा
महेन्द्र कुमार-सुनीता शर्मा
विजय-कुसुम शर्मा
शर्मा परिवार, माकड़ोन
मो. 9926667488, 9424815705

छठां पुण्य स्मरण
स्व.श्री स्वरूपनारायणजी मेहता

देहावसान 13 सितम्बर 2009
तिथि दशमी

सूनी आँखों में ख्वाब दिखाया आपने,
हर मुश्किल वक्त में जीना सिखाया आपने,
कर्म के प्रति समर्पित होना सिखाया आपने,
शून्य से शिखर तक पहुँचाया आपने।

पाँचवा पुण्य स्मरण
स्व.श्रीमती कमलाबाई मेहता

देहावसान 6 अक्टूबर 2010 तिथि चौदस

माँ आपके बिना जिन्दगी अधूरी सी लगती है,
चाहे कितनी भी हो उम्र माँ जरुरी होती है,
खालीपन रहता है 'माँ' तुम बिन मन में
जननी तुम ही बनना माँ हर जनम में।

सौ.ममता दीपक मेहता (मड़ावदा)
सौ.प्रमिला राजेन्द्र नागर (चौमहला)
सौ.कल्पना कैलाशचन्द्र शुक्ल (उज्जैन)
सौ.मन्जुला पंकज नागर (इन्दौर)

जीवन को चुनौती समझकर उन्होंने हमेशा संघर्ष और बहादूरी से संकटों का सामना किया और जीवन में हमेशा सभी को आनन्द बांट कर परिवार के लिए अपनी पूर्ण शक्ति से कर्त्तव्यों का पालन कर सभी को आत्म विश्वास से जीने की राह बताई।

स्व.श्रीमती उर्मिला राकेश पाठक

जन्म 6–9–1956

अवसान 20–9–2014

॥ भाव पूर्ण श्रद्धांजलि ॥

श्रीमती शकुन्तला नारायण राव पाठक (सास)
राजेश पाठक (पति), शक्ति नगर, भोपाल
श्रीमती मिनी–समीर जोशी (बेटी–दामाद)
रिनी पाठक–नमन पाठक (बेटी–बेटा)
श्री रामभाऊ मंडलोई परिवार, खंडवा
श्रीमती इन्दू नागर परिवार, झाँसी
श्रीमती किरण भारद्वाज परिवार, इन्दौर
अजय–मोना भट्ट परिवार, इन्दौर
अभय मेहता परिवार, बड़ोदरा
शशिकांत–कामिनी पंडित परिवार, कालमुखी
त्रिवेदी परिवार- खंडवा, चौबे परिवार- विदिशा

भारत सरकार
Government of India
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
इस 2 अक्तूबर को आइए स्वच्छता की शपथ को दोहराएं
"स्वच्छता महात्मा गांधी जी को बहुत प्रिय थी। आइए, स्वच्छ भारत के प्रति हमारी प्रतिबद्धता दोहराएं और प्यारे बापू का सपना साकार करें। स्वच्छ भारत से विकास यात्रा तथा गरीबों की मदद में योगदान मिलेगा।" - नरेन्द्र मोदी
महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री को उनकी जयंती पर राष्ट्र का नमन
Narendra Modi
davp 22202/13/0052/1516

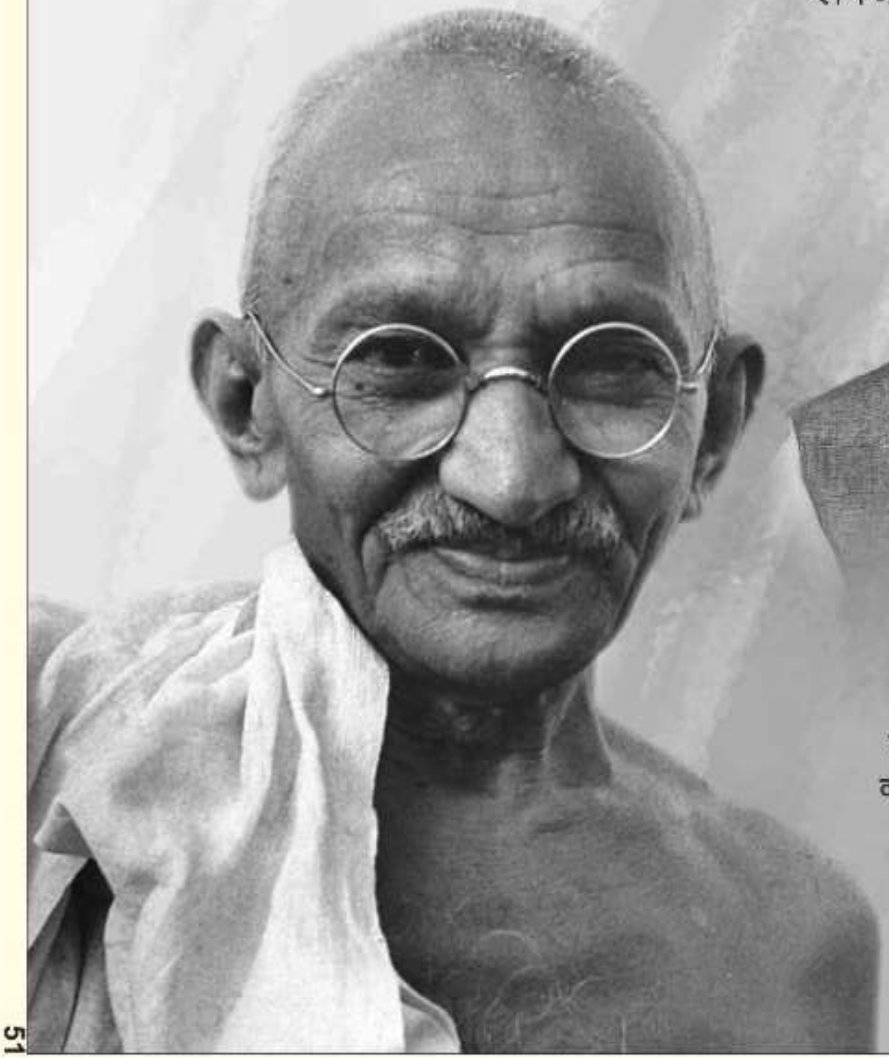

तृतीय पुण्य स्मरण

आपकी यादें हमें रुला रही है
आपके आदर्श हमें
दिशा दिखा रहे हैं
हर पल यह एहसास होता है
कि सदा आप हमें
आशीष दे रहे हैं..

स्व.श्री हरिवल्लभजी नागर

26 अक्टूबर

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

श्रद्धावनत :

श्रीमती श्यामादेवी नागर
पं.श्री कमलकिशोरजी, विमलशंकर,
डॉ.सुधीर, बलराम, पं. राजेश्वर,
सुनील, सुमीत, विनोद, पं. ब्रजेश,
सुशील एवं समस्त नागर परिवार
इन्दौर, मुम्बई, ग्राम सेमली,
ग्राम घुन्सी (जि.शाजापुर)

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स,
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (52) मो. 94250 63129
LATE POSTING